@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
गुरूवार, 18 सितंम्बर 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 309 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

'नारी शति' भारत के विकास की नींव : मोदी

●प्रधानमंत्री ने 'स्वस्थ नारी सशत परिवार' अभियान और 'राष्ट्रीय पोषण माह' का शुभारंभ किया

एजेंसी

धार (मध्य प्रदेश)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नारी शक्ति को भारत के विकास की असली नींव बताते हुए देशभर की माताओं-बहनों से संकोच छोड़ कर स्वास्थ्य शिविरों में जाकर निःशुल्क जांच कराने की अपील की। उन्होंने कहा कि आपके उत्तम स्वास्थ्य से ज्यादा मूल्यवान कोई सरकारी तिजोरी नहीं है। प्रधानमंत्री बुधवार को मध्य प्रदेश के धार में 'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार' अभियान और 'राष्ट्रीय पोषण माह' का शुभारंभ करने के बाद विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यदि मां स्वस्थ है तो पूरा परिवार स्वस्थ रहता है और यदि मां बीमार हो जाए तो घर की पूरी व्यवस्था चरमरा जाती है। उन्होंने कहा कि आज शुरू की गई पहलें केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए नहीं, बल्कि उन बच्चों और भावी नागरिकों के लिए भी हैं, जो अभी पैदा होने वाले हैं। उन्होंने कहा, 'यह सुनिश्चित करना कि बच्चे स्वस्थ

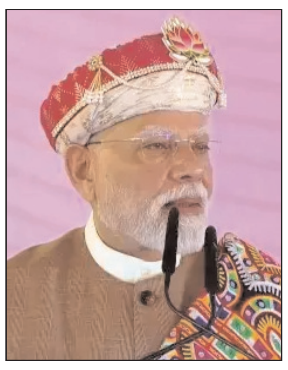

पैदा हों, उनकी भविष्य की भलाई और समृद्धि की नींव रखता है। यह कार्य केवल एक पीढ़ी का नहीं बल्कि अनगिनत पीढ़ियों का आशीर्वाद है।

प्रधानमंत्री ने मप्र के धार में देश के पहले पीएम मित्र पार्क का किया शिलान्यास, दिया स्वदेशी का मंत्र

धार (मध्य प्रदेश)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को अपने जन्मदिन के अवसर पर मध्य प्रदेश के धार जिले के भैंसोला गांव में देश के पहले पीएम मित्र पार्क का शिलान्यास किया। इसके साथ ही उन्होंने सिंगल क्लिक के माध्यम से स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार एवं पोषण अभियान का शुभारंभ और सुमन सखी चैटबाट का लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने नागरिकों को स्वदेशी अपनाने का मंत्र दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि आप जो भी खरीदें, वह देश में ही बना होना चाहिए। उसमें पसीना किसी देशवासी का होना चाहिए। आप भी देश के लिए मेरी मदद कीजिए। महात्मा गांधी ने स्वदेशी को आजादी का आंदोलन बनाया था। हमें इसे विकसित भारत के लिए जरूरी बनाना है। हम दिवाली की मूर्तियां, सजावट का सामान, टीवी-फ्रिज खरीदते समय देखें कि ये देश में बना है कि नहीं। इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी खुली जीप में सवार होकर कार्यक्रम स्थल पर मौजूद लोगों के बीच से निकले और उनका अभिवादन करते हुए मंच तक पहुंचे। उन्होंने भारत माता की जय और नर्मदा मैया की जय के नारे के साथ अपने भाषण की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि मैं ज्ञान की देवी, धार भोजशाला की देवी के चरणों में प्रणाम करता हूं।

एआईएडीएमके महासचिव पलानीस्वामी ने अमित शाह से हुई मुलाकात का किया खुलासा

एजेंसी

चेन्नई। अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (एआईएडीएमके) के महासचिव एडप्पादी पलानीस्वामी ने दिल्ली में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से हुई मुलाकात का खुलाशा किया है। एआईडीएमके महासचिव ने सोशल माडिया एक्स पर एक पोस्ट कर के कहा, कल मैंने पार्टी नेताओं और सांसदों के साथ गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की और अन्नाद्रमुक की ओर से एक पत्र सौंपा, जिसमें देश की आज़ादी में अहम योगदान देने वाले पसुम्पोन अय्या यू. मुथुरामलिंगम थेवर को देश के सर्वोच्च सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग की गई है। एडप्पादी पलानीस्वामी के इस दिल्ली दौरे से तमिलनाडु की राजनीति में एक नई हलचल पैदा हो गई है। मंगलवार रात पलानीस्वामी ने दिल्ली पहुंचकर अमित शाह से मुलाकात की। बातचीत करीब 20 मिनट चली और इसमें कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। सतही तौर पर तो एआईएडीएमके नेताओं ने कहा कि उन्होंने भ्रष्टाचार में लिप्त द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) मंत्रियों पर केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई की मांग रखी, लेकिन पलानीस्वामी ने तमाम अटकलों पर आज विराम लगा दिया।

भारत ने किसी शति के सामने सिर नहीं झुकाया और न कभी झुकाएगा : राजनाथ सिंह

सरदार पटेल ने जिस अखंड भारत का निर्माण किया था, उसे आगे बढ़ाने का कार्य आज पीएम मोदी कर रहे हैं : रक्षा मंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली। आज का भारत किसी से डिक्टेशन नहीं लेता, भारत अपनी स्क्रिप्ट खुद लिखता है। आज भारत एक ऐसे वर्ल्ड ऑर्डर की स्क्रिप्ट लिखने के लिए तैयार है, जिसे पूरी दुनिया हर्ष और स्वेच्छा से फॉलो करेगी। बुधवार को यह बात रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने जिस अखंड भारत का निर्माण किया था, उसे आगे बढ़ाने का कार्य आज पीएम मोदी कर रहे हैं। आज भी दुनिया के सबसे धनी और सबसे शक्तिशाली लोगों को यह समझ लेना चाहिए कि भारत ने कभी किसी शक्ति के सामने सिर नहीं झुकाया और न ही भविष्य में कभी झुकाएगा। राजनाथ सिंह 'हैदराबाद लिबरेशन डे' के अवसर पर बोल रहे थे।

रक्षा मंत्री ने कहा, '17 सितंबर के दिन निजाम ने भारत के साथ विलय करना मंजूर किया था। ऐसा हुआ था सरदार पटेल के दृढ़ निश्चय और साहस के कारण। यह सिर्फ सुखद संयोग मात्र नहीं है कि हमारे युग के एक और दृढ़-निश्चयी नेता, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन भी 17 सितंबर को होता है। निजाम दुनिया के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक था। उसे भ्रम हो गया था कि अपने धन के बल पर वह भारत को झुका देगा। लेकिन, इतिहास गवाह है, धन और घमंड की ताकत कभी भी राष्ट्र की एकता और संकल्प से बड़ी नहीं होती। अंततः उसका हश्र सबके सामने है।' रक्षा मंत्री ने कहा कि जो लोग धर्म, क्षेत्र, जाति और भाषा के नाम पर भारत को बांटना चाहते हैं, उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि जब हैदराबाद के लिए ऑपरेशन पोलो हुआ था, तब हमारे वीर सैनिकों ने जाति, धर्म या मजहब की परवाह किए भारत की अखंडता की रक्षा की। हवलदार बच्चित्तर सिंह पंजाब के वीर सपूत थे, जिन्होंने भारत की एकता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। वह पहले भारतीय थे, जिन्हें अशोक चक्र से

सम्मानित किया गया था। आज का भारत, केवल वार्ता की टेबल पर नहीं बल्कि दुश्मन की आंखों में आंखें डालकर जवाब देने में भी सक्षम है। यही है नया भारत, धैर्यवान भी, बलवान भी और सामर्थ्यवान भी। हमारी सशक्त सेनाओं ने ऑपरेशन सिंदूर से दुश्मन को घुटने टेकने पर

> ● रक्षा मंत्री ने कहा कि मैं मानता हूं कि ऑपरेशन पोलो केवल एक सैन्य अभियान नहीं था, यह सरदार पटेल का निर्णायक प्रहार था, जिसने रजाकारों के षड्यंत्र को चकनाचूर किया और हैदराबाद को मां भारती की गोद में लाकर बैठा दिया।

मजबूर कर दिया। इसे तब स्थगित किया गया, जब पाकिस्तान ने सीजफायर की मांग की।

रक्षा मंत्री ने कहा कि अभी यह ऑपरेशन स्थगित है, खत्म नहीं हुआ है। 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक हो या 2019 का बालाकोट एयर स्ट्राइक या 2025 का ऑपरेशन सिंदूर, भारत ने यह साबित कर दिया है कि जो लोग बातचीत, शांति और सद्भावना की भाषा नहीं समझते, उन्हें हम उसी भाषा में जवाब देना जानते हैं, जिसे वे समझते हैं। पिछले 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने दुनिया को बार-बार यह दिखा दिया है कि हमारा धैर्य हमारी ताकत है, कमजोरी नहीं। जैसे बातचीत से समाधान न निकलने के बाद सरदार पटेल ने हार्ड पावर का रास्ता चुना, वैसे ही हमने भी किया। ऑपरेशन पोलो की सफलता और हैदराबाद का भारत में विलय वह गौरवशाली अध्याय है, जिसने दुनिया को दिखा दिया कि भारत अपनी एकता की रक्षा करने में हमेशा से सक्षम भी है और सामर्थ्यवान भी। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में यह सामर्थ्य और बढ़ा है। अब कोई भी ताकत भारत की संप्रभुता को चुनौती देने की हिम्मत नहीं कर सकती।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने आर्थिक प्रगति के माध्यम से राष्ट्र को नई एकता दी है। 2014 से आर्थिक एकीकरण का जो कार्य शुरू हुआ है, उससे हमारे देशवासियों का जीवन सुगम हुआ है। आज देश का कोई भी क्षेत्र यह नहीं कह सकता कि उसे विकास की दौड़ में पीछे छोड़ दिया गया है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाकर सरदार पटेल का अधूरा सपना साकार हुआ है। अलगाव की एक ऐतिहासिक दीवार टूटी है। पूर्वोत्तर, जो कभी दूर समझा जाता था, अब विकास और अवसर की धारा में भारत की धड़कनों के साथ कदमताल कर रहा है। जैसे सरदार पटेल ने नव-स्वतंत्र भारत को राजनीतिक और भौगोलिक एकता के सूत्र में पिरोया था, वैसे ही 2014 से प्रधानमंत्री मोदी निरंतर भारत को सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और आर्थिक स्तर पर मजबूत करने का कार्य कर रहे हैं।

पूरी दुनिया पीएम मोदी के नेतृत्व में नए भारत को देख रही है : सीएम योगी आदित्यनाथ

'भारत पूरी दुनिया को अपना अनुसरण करने के लिए प्रेरित कर रहा है।'

एजेंसी

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन पर बुधवार को लखनऊ में सेवा पखवाड़ा-2025 की शुरुआत की गई। सेवा पखवाड़ा का शुभारंभ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया। उन्होंने कहा, 'देश भर में भाजपा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम शुरू कर रही है, जिसके तहत विभिन्न गतिविधियों और पहलों के माध्यम से लोगों को एकजुट करने का अवसर मिलेगा।'

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, 'विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के साथ देशवासियों से जुड़ने का अवसर शुरू होगा, यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी की दुनिया के सबसे दूरदर्शी और लोकप्रिय राजनेताओं में गिनती होती

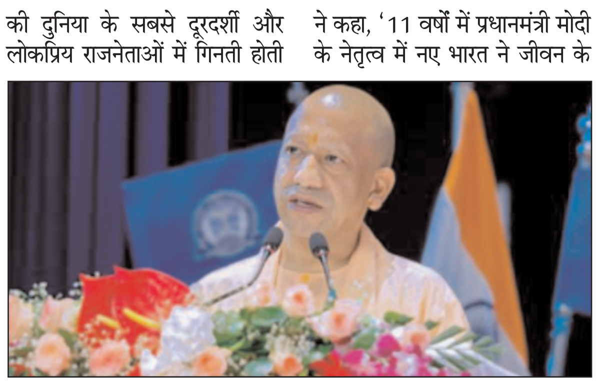

है।' उन्होंने कहा, 'आज पूरी दुनिया प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नए भारत को देख रही है, भारत पूरी दुनिया को अपना अनुसरण करने के लिए प्रेरित कर रहा है।' सीएम योगी ने कहा, '11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नए भारत ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व सफलताओं के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में, इन्वेस्टमेंट के क्षेत्र में, एंप्लॉयमेंट के क्षेत्र में, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल संसाधन और सामान्य रूप से कहें तो गांव, किसान, महिलाएं, वंचित और प्रत्येक नागरिक के जीवन में व्यापक परिवर्तन करने का काम किया गया है।' उन्होंने कहा कि आज हर भारतवासी अगर वह राजनीति से प्रेरित नहीं है तो वह प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गौरव का अनुभव करता है, विदेश के लोग भी नए भारत के बदलते हुए रूप को देखकर प्रसन्न होते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि चाहे अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हो या काशी विश्वनाथ धाम के रूप में वैश्विक जगत को आकर्षित करना हो, विरासत से जुड़े हुए सभी स्थलों के पुनरुद्धार और सुंदरीकरण के अभियान चल रहे हैं।

स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार और विकसित राष्ट्र की आधारशिला: अनुप्रिया पटेल

कौमी पत्रिका
नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 17 सितम्बर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कल अपना 75वाँ जन्मदिवस देशभर की जनता के साथ सेवा और जनकल्याण को समर्पित करते हुए मनाया। प्रधानमंत्री जी ने मध्यप्रदेश के धार से राष्ट्रव्यापी सेवा पखवाड़ा (17 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2025) की शुरुआत की और इस अवसर पर स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान तथा आठवाँ राष्ट्रीय पोषण माह का आरंभ किया। इसी क्रम में दिल्ली सचिवालय में भी विशेष आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता उपस्थित रहीं। दिल्ली के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह, मुख्य सचिव धर्मेन्द्र सहित दिल्ली सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। इस अवसर पर दिल्ली सचिवालय में महिलाओं के लिए एक विशेष स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया गया। इस शिविर में महिलाओं को स्वास्थ्य जांच, परामर्श और आवश्यक चिकित्सीय सुविधाएँ उपलब्ध कराई

गईं। साथ ही कार्यक्रम के तहत केंद्रीय मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल और दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने गुब्बारे उड़ाकर 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' अभियान की औपचारिक शुरुआत पर प्रधानमंत्री को आभार व्यक्त किया। अनुप्रिया पटेल ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री ने एक बार फिर अपना जन्मदिवस सेवा को समर्पित कर मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य और पोषण पर केंद्रित सबसे बड़े जन-आंदोलन का शुभारंभ किया है। भारत सरकार ने सुरक्षित मातृत्व योजनाएँ, संस्थागत प्रसव को बढ़ावा, सस्ती सेनेटरी नैपकिन और विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चलाकर महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इसके परिणामस्वरूप भारत में मातृ मृत्यु दर में 86त्न और शिशु मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है। उन्होंने कहा कि अब सरकार महिला-केंद्रित विकास से आगे बढ़कर महिला-नेतृत्व वाले विकास की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने महिलाओं से अपील की कि वे स्वास्थ्य शिविरों का लाभ उठाकर इस अभियान को सफल बनाएं।

शेष पृष्ठ 3 पर

दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम से गुरुग्राम तक बनेगा भूमिगत मार्ग

एक घंटे की दूरी 15 मिनट में होगी तय : नितिन गडकरी

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को कहा कि दिल्ली-एनसीआर के जाम को दूर करने के लिए 30-40 हजार करोड़ रुपये के बजट से दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम से हरियाणा के गुरुग्राम तक एक भूमिगत मार्ग (टनल रोड) बनेगा, जिससे एक घंटे का सफर सिर्फ 15 मिनट में तय किया जा सकेगा। इससे यात्रा में 45 मिनट की बचत होगी। गडकरी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्मदिन पर एक हिंदी समाचार पत्र में प्रकाशित लेख में कहा कि 26 मई 2014 को नरेन्द्र मोदी ने पहली बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी। तब से उनकी सरकार ने बुनियादी ढांचे के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण और निर्णय क्षमता के कारण वाहन उद्योग, राजमार्ग और पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। सड़क परिवहन मंत्रालय 25 नए

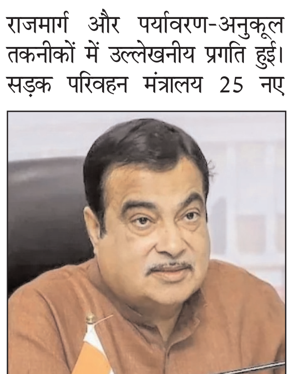

ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे और 3,000 किलोमीटर सड़क नेटवर्क का निर्माण कर रहा है, जो बंदरगाहों और धार्मिक पर्यटन केंद्रों को जोड़ेगा। उन्होंने कहा कि इससे कृषि, सेवा और औद्योगिक क्षेत्रों में लॉजिस्टिक लागत तेजी से कम हो रही है। उनके मंत्रालय का लक्ष्य 2026 तक इसे 9 प्रतिशत तक लाना है, जो एक ऐतिहासिक उपलब्धि होगी। लगभग 12 लाख करोड़ रुपये की सड़क परियोजनाएं शुरू की गई हैं, जो विकसित भारत की राह के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं।

> ● उन्होंने कहा कि इसे दूर करने के लिए मंत्रालय ने दिल्ली के लिए 30-40 हजार करोड़ रुपये का बजट रखा है।

यातायात जाम दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और अन्य शहरों में गंभीर समस्या बन गया है। दिल्ली से गुरुग्राम के बीच यातायात जाम की समस्या हल करने के लिए तालकटोरा स्टेडियम से गुरुग्राम तक एक भूमिगत मार्ग पर तेजी से काम चल रहा है। यह मार्ग बनने से यात्रा समय एक घंटे से घटकर 15 मिनट हो जाएगा, जिससे 45 मिनट की बचत होगी।

सरहदों से बड़ी आस्था: सिख नेताओं की सरकार को खुली चुनौती !

कौमी पत्रिका
विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। देश में तनावपूर्ण हालात और धार्मिक भावनाओं के उबाल के बीच, ऑल इंडिया सिख कॉन्फ्रेंस (बब्बर) के प्रधान सरदार गुरचरन सिंह बब्बर ने भारत सरकार से जोरदार अपील की है कि इस साल खासकर श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव के अवसर पर सिख भक्तों को पाकिस्तान स्थित अपने पवित्र गुरुद्वारों के दर्शन करने के लिए जाने की अनुमति दी जाए। बब्बर ने साफ कहा कि दुनिया की कोई ताकत सिखों को श्री ननकाना साहिब, श्री करतारपुर साहिब और अन्य पवित्र स्थलों पर जाने से लंबे समय तक रोक नहीं सकती। उन्होंने इस मुद्दे को किसी राजनीतिक विवाद के बजाय गहरी धार्मिक आस्था का प्रश्न बताया। ऑल इंडिया सिख कॉन्फ्रेंस बब्बर के प्रधान सरदार गुरचरन सिंह बब्बर ने कहा कि दुनिया की कोई ताकत सिखों को श्री गुरु नानक देव जी के पवित्र स्थान श्री ननकाना साहिब और श्री करतारपुर साहिब जाने से लंबे समय तक रोक नहीं सकती। बब्बर ने चेतावनी दी कि यदि सिखों को इस प्रकार की यात्रा से रोका गया तो भारत के अंदर व्यापक विरोध प्रदर्शन हो सकते हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सरकार को विश्वभर के सिखों के आक्रोश का सामना करना पड़ेगा। गृह मंत्रालय द्वारा जारी बयानों के अनुसार, भारत सरकार ने इस साल गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव (नवंबर 2025) के लिए सिख जत्थों को पाकिस्तान जाने की अनुमति नहीं दी। सरकार का कहना है कि इस समय पाकिस्तान के साथ सुरक्षा हालात चिंताजनक हैं

और इसी कारण यात्रा की अनुमति नहीं दी जा सकती। 12 सितंबर 2025 को गृह मंत्रालय द्वारा जारी नोटिस में कहा गया कि मौजूदा सुरक्षा हालात के चलते सिख यात्रियों के लिए सीमा पार यात्रा करना संभव नहीं है, इसलिए श्री ननकाना साहिब आदि स्थलों के लिए जत्थों की यात्रा मंजूर नहीं की जा सकती। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (SGPC) समेत कई धार्मिक संस्थाओं और पंजाब के नेताओं ने इस फैसले की निंदा की है और कहा है कि इससे करोड़ों सिखों की धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने भी सरकार के फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि जब भारत ने पाकिस्तान के साथ क्रिकेट खेलने की अनुमति दी है, तो धार्मिक यात्रा क्यों रोकी जा रही है ङ्क जो केवल विश्वास का मामला है, राजनीति का नहीं। दुनिया भर की सिख संस्थाओं द्वारा सरकार से अपील की जा रही है कि इस फैसले पर पुनर्विचार किया जाए ताकि धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा हो सके और सामाजिक सौहार्द बना रहे।

शेष पृष्ठ 3 पर

बिहार में अडानी को दी गई जमीन के विरोध में कांग्रेस का आज विशाल मार्च

पटना (एजेंसी)। बिहार के भागलपुर जिले में अडानी की कंपनी को बिहार सरकार द्वारा दी गई जमीन के विरोध में बिहार प्रदेश कांग्रेस द्वारा आज दिनांक 18 सितंबर को राजधानी पटना में विशाल मार्च का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी कांग्रेस के मीडिया कमेटी के अध्यक्ष राजेश राठौड़ ने दी।उन्होंने बताया की आप सभी को ज्ञात है, हमारी पार्टी ने हाल ही में एक बड़ा खुलासा किया है कि बिहार सरकार ने भागलपुर में अडानी समूह को मात्र 1 रुपया प्रति वर्ष की दर से 1,050 एकड़ जमीन और 10 लाख पेड़ दिए हैं। यह सौदा न सिर्फ किसानों के साथ अन्याय है, बल्कि यह बिहार की जनता के साथ एक बड़ी लूट भी है। इस अन्याय और लूट के ख़िलाफ़, बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने एक विशाल विरोध मार्च का आयोजन किया है। इस मार्च का उद्देश्य इस सौदे को रद्द करने की मांग करना और जनता को जागरूक करना है। उन्होंने बताया कि यह मार्च गुरुवार सुबह 10 बजे पटना में सदाकत आश्रम से शुरू होकर राजेन्द्र बाबू की समाधि, बांसघाट तक जाएगी। इस मौके पर बिहार कांग्रेस के प्रभारी कृष्णा अल्लावारू प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश राम, कांग्रेस विधानमंडल दल के नेता डॉ.शकील अहमद खान विधान परिषद में कांग्रेस दल के नेता डॉ.मदन मोहन झा समेत प्रदेश के सभी कांग्रेस सांसद, पूर्व सांसद, विधायक, पूर्व विधायक, विधान पार्षद के साथ सभी बड़े नेता उपस्थित रहेंगे।

करोड़ों का कैश, फ्लैट, 6 प्लॉट्स और फार्मलैंड, इंजीनियर के घर....नोटों का जखीरा बरामद

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के हैदराबाद में एंटी-करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने टीजीएसपीडीसीएल के असिस्टेंट डिविजनल इंजीनियर (एडीई) अम्बेडकर एरुगु के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति का मामला दर्ज हुआ है। एसीबी की छापेमारी में उनके और उनके रिश्तेदारों के घरों से करोड़ों रुपये की नकदी बरामद हुई है।एसीबी टीम की छापेमारी में 2.18 करोड़ नकद, एक फ्लैट, एक जी+5 बिल्डिंग, 10 एकड़ जमीन पर एक कंपनी, 6 प्लॉट्स, एक फार्मलैंड के कागज मिले हैं। साथ ही दो फोर व्हीलर्स, सोने के जेवर और बैंक में जमा रुपयों का पता चला है। एसीबी अधिकारियों ने कहा, तलाशी से पता चला कि इंजीनियर ने अपने पद का दुरुपयोग करके ये चल-अचल संपत्तियां बनाई हैं। तलाशी अभी भी जारी है। संपत्तियों का बाजार मूल्य उनके आधिकारिक मूल्य से कहीं ज़्यादा है। आरोपी इंजीनियर को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। बता दें कि यह एक महीने से भी कम समय में एसीबी द्वारा पकड़ा गया आय से अधिक संपत्ति का दूसरा बड़ा मामला है। 19 अगस्त को एसीबी ने एक तहसीलदार पर छापे के दौरान 5 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति का पता लगाया था। अधिकारियों ने वारंगल जिले के वारंगल फोर्ट मंडल के तहसीलदार बांदी नागेश्वर राव से जुड़े सात स्थानों पर तलाशी ली।

गैंगस्टर छोटा राजन को सुप्रीम कोर्ट से झटका, जमानत को रद्द कर दिया

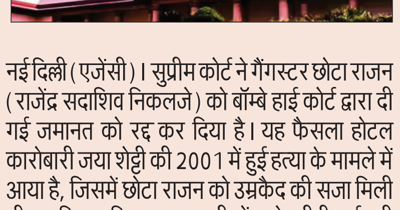

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गैंगस्टर छोटा राजन (राजेंद्र सदाशिव निकलजे) को बॉम्बे हाई कोर्ट द्वारा दी गई जमानत को रद्द कर दिया है। यह फैसला होटल कारोबारी जया शेट्टी की 2001 में हुई हत्या के मामले में आया है, जिसमें छोटा राजन को उम्रकैद की सजा मिली थी। जस्टिस विक्रम नाथ की बेंच ने सीबीआई की दलीलों पर यह आदेश दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि छोटा राजन पहले से ही चार अन्य मामलों में दोषी ठहराया जा चुका है और 27 साल तक फरार रहा था। इसके बाद उसकी सजा को निलंबित करने का कोई कारण नहीं है।वहीं छोटा राजन के वकील ने दावा किया कि यह मामला सबूतों के बिना है और 71 में से 47 मामलों में सीबीआई को उसके खिलाफ कोई ठोस सबूत नहीं मिले थे।हालांकि, वकील ने यह स्वीकार किया कि यह हत्या के मामले में उसकी दूसरी सजा है।हत्या का मामला- जया शेट्टी, जो दक्षिण मुंबई के गोल्डन क्राउन होटल के मालिक थे, को छोटा राजन के गिरोह से रंगदारी की धमकियाँ मिल रही थीं।मई 2001 में, उन्हें उनके कार्यालय के बाहर गोली मार दी गई थी, क्योंकि उन्होंने गिरोह को पैसे देने से मना कर दिया था।2024 में, मुंबई की एक विशेष मकोका अदालत ने छोटा राजन को इस मामले में उम्रकैद की सजा सुनाई थी। छोटा राजन को अक्टूबर 2015 में इंडोनेशिया के बाली में गिरफ्तार किया गया था और फिर उसे भारत लाया गया था।महाराष्ट्र में उसके खिलाफ कुल 71 मामले दर्ज थे, जिन्हें बाद में सीबीआई को सौंप दिया गया था।

दो महिला नक्सलियों को पुलिस ने मार गिराया, हथियार और अन्य सामान बरामद

गढ़चिरोली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले में बुधवार सुबह सुरक्षाबलों के साथ हुई मुठभेड़ में दो महिला नक्सली मारी गईं।पुलिस को खुफिया जानकारी मिली थी कि गट्टा दालम के सदस्य एटापल्ली तालुका के मोडस्के गांव के जंगल में छिपे हुए हैं।पुलिस ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (आहेरी) सत्य साई कार्तिक की देखरेख में संयुक्त ऑपरेशन शुरू किया। इसमें आहेरी से पांच सी-60 कमांडो यूनिट, गट्टा जांभिया पुलिस पोस्ट के जवान और सीआरपीएफ की 191 बटालियन की कंपनी शामिल थी।इलाके को घेरकर सर्च ऑपरेशन चलाया गया तभी नक्सलियों ने अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी।सी-60 कमांडो ने जवाबी कार्रवाई की।मुठभेड़ के बाद, दो महिला नक्सलियों के शव मिले।एक एके-47, एक आधुनिक पिस्टल, जिंदा कारतूस, बड़ी मात्रा में नक्सली साहित्य और अन्य सामान बरामद किया गया। पुलिस का कहना है कि इलाके में कॉम्बिंग ऑपरेशन जारी है।

देश की प्रदूषण मामले में सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट बोला- पराली जलाने वालों की गिरफ्तारी क्यों नहीं करते

-जुर्माना नाकाफी, किसानों को जवाबदेह बनाना जरूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कहा कि देश की प्रदूषण नियंत्रण एजेंसियां और राज्य सर्दियों से पहले तीन हफ्ते में वायु प्रदूषण से निपटने के उपाय बताएं। कोर्ट ने यह टिप्पणी दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से संबंधित मामले की सुनवाई के दौरान की, जिसमें पटाखे और पराली जलाना शामिल है। अगली सुनवाई 8 अक्टूबर को होगी। सीजेआई बीआर गवई और जस्टिस के विनोद चंद्रन की बेंच ने कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट , सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों से कहा कि हर साल सर्दियों में प्रदूषण का लेवल खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है, इसलिए समय रहते कदम उठाना जरूरी है। कोर्ट ने किसानों द्वारा पराली जलाने को लेकर कहा कि जो किसान पराली न जलाने के सरकारी निर्देशों का उल्लंघन करते हैं, उनको गिरफ्तार क्यों नहीं करते? सिर्फ जुर्माना लगाने से काम नहीं चलेगा, किसानों को जवाबदेह बनाना जरूरी है।

पराली जलाने वाले किसानों को मिनिमम सपोर्ट प्राइस सिस्टम के लाभ से बाहर रखा जाना चाहिए, क्योंकि यदि कोई किसान कानून तोडक़र पराली जलाता है, तो उसे आर्थिक रूप से भी सजा देनी चाहिए, सिर्फ जुर्माना भरना या चेतावनी देना काफी नहीं है। राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसानों को पराली प्रबंधन की मशीनरी दी जाए और उनको बेहतर विकल्प दिए जाएं ताकि वे पराली जलाने के जगह अन्य तरीकों का उपयोग कर सकें। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों को निर्देश दिया कि पराली जलाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए सिर्फ नाममात्र का जुर्माना लगाने से समस्या नहीं सुलझेगी। हालांकि किसान को केवल खलनायक के रूप में पेश करना गलत है। उसके पक्ष की भी सुनवाई होनी चाहिए।

एजेंसियां-राज्य 3 महीने में वैकेंसी भरें

कोर्ट ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान जैसे राज्यों को फटकार लगाई। बेंच ने कहा कि इन राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों में लंबे समय से खाली पड़े पद तीन महीने के अंदर भरे जाएं। इसके अलावा, कोर्ट ने सीएक्यूएम और सीपीसीबी को भी निर्देश दिया कि वे अपने यहां खाली पड़े पदों पर भी 3 महीने के अंदर भर्ती करें। वहीं पदोन्नति से जुड़ी भर्तियों के लिए 6 महीने का समय तय किया गया है।

पराली जलाने पर 30 हजार तक जुर्माना

केंद्र सरकार ने 7 नवंबर 2024 को पराली जलाने वाले किसानों पर जुर्माना दोगुना किया था। पर्यावरण मंत्रालय ने एक नोटिफिकेशन जारी कर बताया था कि अब 2 एकड़ से कम जमीन पर 5000 रुपए का जुर्माना लगेगा। दो से पांच एकड़ तक 10,000 रुपए और पांच एकड़ से ज्यादा जमीन वालों से 30,000 रुपए जुर्माना वसूला जाएगा। उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली सरकार इन नियमों को लागू करने के लिए बाध्य होंगी।

राहुल गांधी एक सप्ताह में दूसरी बार आज गुजरात आएंगे

अहमदाबाद (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी कल यानी 18 सितंबर, 2025 जूनागढ़ का दौरा करेंगे। एक हफ्ते में यह उनका दूसरा दौरा है। वह 10 दिनों से चल रहे कांग्रेस प्रशिक्षण शिविर में शामिल होंगे और जिला व महानगर अध्यक्षों का मार्गदर्शन करेंगे। इस शिविर में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं और राहुल गांधी का यह दौरा पार्टी को 2027 के विधानसभा चुनावों के लिए एक नई दिशा देगा। यह प्रशिक्षण शिविर संगठन सृजन अभियान के अंतर्गत 10 से 19 सितंबर तक आयोजित किया जा रहा है, जिसमें गुजरात के 41 जिला एवं महानगर अध्यक्ष उपस्थित हैं। इस शिविर में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इन विषयों में पार्टी की विचारधारा, मतदाता सूची प्रबंधन, धन उगाहना और बूथ स्तर पर मज़बूती शामिल हैं। राहुल गांधी ने पहली बार 12 सितंबर को इस शिविर में भाग लिया था। उस दौरान उन्होंने वोट चोरी जैसे मुद्दों पर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया था। वह कल फिर आएंगे और कार्यकर्ताओं को आगे का मार्गदर्शन देंगे। राहुल गांधी कल दोपहर 1 बजे केशोद हवाई अड्डे पर पहुँचेंगे और फिर सड़क मार्ग से जूनागढ़ आएँगे। वे लगभग 3 घंटे तक कांग्रेस प्रशिक्षण शिविर में मौजूद रहेंगे और मार्गदर्शन देंगे। इस शिविर में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव केसी वेणुगोपाल, कांग्रेस सांसद और गुजरात कांग्रेस प्रभारी मौजूद रहेंगे। इस दौरे से कांग्रेस को 2027 के विधानसभा चुनावों की तैयारी में मदद मिलेगी। प्रशिक्षण में जिला अध्यक्षों और महानगर अध्यक्षों को पार्टी की मजबूती, मतदाता सूची और चुनावी रणनीतियों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। राहुल गांधी के गुजरात दौरे से कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा आएगी और इससे 2027 के विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी को मजबूत करने में मदद मिलेगी। बता दें कि पिछले कुछ सालों से गुजरात में कांग्रेस के बड़े नेताओं की आवाजाही बढ़ गई है। राहुल गांधी भाजपा का गढ़ माने जाने वाले गुजरात में कांग्रेस को मजबूत के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं।

सीएम योगी ने प्रधानमंत्री मोदी को दुनिया के सबसे दूरदर्शी और लोकप्रिय राजनेता बताया

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन पर लखनऊ में सेवा पखवाड़ा-2025 की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नया भारत आज दुनिया के लिए प्रेरणा बन रहा है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि सेवा पखवाड़ा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक पूरे देश में मनाया जाएगा, जिसमें भाजपा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों से जुड़ेगी। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को दुनिया के सबसे दूरदर्शी और लोकप्रिय राजनेताओं में से एक बताया। योगी ने बीते 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की उपलब्धियों को गिनाया। उन्होंने बताया कि इंफ्रास्ट्रक्चर, निवेश, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और जल संसाधन जैसे क्षेत्रों में देश ने महत्वपूर्ण प्रगति की है। उन्होंने कहा कि गांवों, किसानों, महिलाओं और समाज के वंचित वर्गों के जीवन में भी बड़ा बदलाव आया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज हर भारतीय, जो राजनीति से प्रेरित नहीं है, प्रधानमंत्री के नेतृत्व पर गर्व महसूस करता है। उन्होंने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण और काशी विश्वनाथ धाम के जीर्णोद्धार जैसे ऐतिहासिक कार्यों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि विरासत से जुड़े स्थलों के पुनरुद्धार और सौंदर्यीकरण का काम लगातार जारी है।

कोविड-19 महामारी के दौरान भारत की भूमिका की प्रशंसा करते हुए योगी ने कहा कि जब पूरी दुनिया इस संकट से जूझ रही थी, तब भारत ने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एक रोल मॉडल बनकर दिखाया। उन्होंने बताया कि सेवा पखवाड़ा के तहत 18 और 19 सितंबर को हर जिले के अस्पतालों और कॉलेजों में स्वास्थ्य शिविर और कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

सीएम नीतीश ने 16 लाख मजदूरों को दिए 5 हजार... मुख्यमंत्री प्रतिज्ञा योजना के वेब पोर्टल का शुभारंभ

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बुधवार को श्रमिकों के हित में एक बड़ी पहल की है। बिहार भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के तहत वार्षिक वस्त्र सहायता योजना की राशि का सीधा अंतरण किया गया। इस योजना के तहत राज्य के 16 लाख 4 हजार 929 पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को प्रति व्यक्ति 5 हजार रुपये की दर से कुल 802 करोड़ 46 लाख 45 हजार रुपये उनके बैंक खातों में ट्रांसफर किए गए। नीतिश सरकार का दावा है कि इस पहल से निर्माण कार्यों में लगे श्रमिकों के जीवनस्तर को सुधारने में मदद मिलेगी। आर्थिक सहायता मिलने से जहां श्रमिकों को रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी, वहीं उनका सामाजिक और आर्थिक विकास भी संभव होगा। इस मौके पर दोनों डिप्टी सीएम कार्यक्रम में रहे मौजूद रहे। श्रम संसाधन विभाग के मंत्री सहित अन्य अधिकारी भी शामिल हुए। मुख्यमंत्री नीतिश ने कहा कि उनकी सरकार शुरू से ही समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों को मुख्यधारा से जोड़ने का काम कर रही है और यह प्रयास आगे भी जारी रहेगा। इस अवसर पर सीएम नीतिश ने मुख्यमंत्री प्रतिज्ञा योजना के वेब पोर्टल का भी शुभारंभ किया। इस पोर्टल के जरिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक अधिक पारदर्शी और त्वरित ढंग से पहुंच सकेगा। नीतीश ने कहा कि उनकी सरकार का मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि गरीब और वंचित वर्ग के लोग सम्मानजनक जीवन जी सकें। उन्होंने दो टूक कहा कि बिहार में श्रमिक वर्ग राज्य की प्रगति की रीढ़ है। इसके बाद उनके अधिकारों और जरूरतों की पूर्ति करना सरकार की जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि इस तरह की योजनाएं श्रमिकों को मजबूती देंगी और उनके बच्चों का भविष्य भी बेहतर होगा। इस मौके पर मौजूद डिप्टी सीएम चौधरी और विजय कुमार सिंह ने भी श्रमिक हित में सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में बिहार विकास और सामाजिक न्याय की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

कांग्रेस को हाईकोर्ट से झटका, प्रधानमंत्री की मां का एआई वीडियो तुरंत हटाने का आदेश

पटना (एजेंसी)। पटना हाईकोर्ट ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी दिवंगत मां हीराबेन मोदी को दर्शाने वाले एक एआई वीडियो को तुरंत हटाने का आदेश दिया है। प्रधानमंत्री मोदी और उनकी मां पर आधारित एआई वीडियो बनाने के लिए कांग्रेस पार्टी के खिलाफ बुधवार को पटना हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने कांग्रेस पार्टी को वीडियो तुरंत हटाने का निर्देश दिया। पटना हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश पी.बी. बजंथरी के समक्ष सुनवाई के दौरान, कोर्ट ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी दिवंगत मां हीराबेन मोदी का अपमान करने वाले वीडियो को सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से तुरंत हटाने का आदेश दिया। मालूम हो कि 10 सितंबर को, बिहार कांग्रेस के आधिकारिक एक्स हैंडल पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में प्रधानमंत्री मोदी की मां का एआई-आधारित चित्रण दिखाया गया है। इस विवादास्पद वीडियो में, दिवंगत हीराबेन मोदी का किरदार अपने बेटे नरेंद्र मोदी को राजनीतिक लाभ के लिए उनके नाम का दुरुपयोग करने के लिए डांटता हुआ दिखाई दे रहा है। भाजपा ने इस वीडियो का कड़ा विरोध करते हुए इसे मोदी की मां का अपमान बताया है। भाजपा ने वीडियो के खिलाफ पटना हाई कोर्ट का भी दरवाजा खटखटाया है। भाजपा ने अपनी शिकायत में दावा किया है कि यह वीडियो न केवल प्रधानमंत्री की छवि धूमिल करता है, बल्कि एक मृत महिला की छवि का भी हनन करता है। दिल्ली पुलिस ने भाजपा कार्यकर्ता संकेत गुप्ता की शिकायत पर 13 सितंबर को एक प्राथमिकी दर्ज की थी, जिसमें कांग्रेस नेताओं के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की कई धाराओं के तहत कार्रवाई की मांग की गई थी। प्राथमिकी में वीडियो को प्रधानमंत्री मोदी और उनकी माँ की छवि धूमिल करने वाला बताया गया है।

- कांग्रेस ने किया बचाव

कांग्रेस पार्टी ने वीडियो पर अपना बचाव किया है। पार्टी के मीडिया प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा, इस वीडियो में किसी का अपमान नहीं किया जा रहा है। माँ केवल अपने बेटे को राजधर्म की शिक्षा दे रही हैं, अगर प्रधानमंत्री को यह आपत्तिजनक लगता है, तो यह उनकी समस्या है।

प्रंचड गर्मी के बाद मूसलाधार बारिश... अब कपकंपा देने वाली ठंड के लिए तैयार रहे

अक्टूबर से दिसंबर के बीच ला नीना बनने की प्रबल उम्मीद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय मौसम वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि इस साल के अंत तक ला नीना के कारण मौसम का पैटर्न प्रभावित होगा और इसकारण भारत में इस बार कड़ाके की ठंड पड़ेगी है। एक अमेरिकी मौसम एजेंसी ने कहा कि अक्टूबर से दिसंबर के बीच ला नीना बनने की प्रबल उम्मीद बन रही है। मौसम विभाग ने बताया कि ला नीना प्रशांत महासागर के भूमध्यरेखीय हिस्से में समुद्र सतह के तापमान के ठंडा होने की स्थिति है, इसका असर पूरी दुनिया के मौसम पर दिखाता है और इसकारण भारत में इस बार कड़ाके की ठंड पड़ सकती है।

आईएमडी ने बताया कि अभी स्थितियां सामान्य बनी हुई हैं, लेकिन भारतीय मौसम विभाग का मानना है कि मॉनसून के बाद ला नीना की संभावना बढ़ेगी। एक वरिष्ठ आईएमडी अधिकारी ने कहा, हमारे मॉडल अक्टूबर-दिसंबर में ला नीना विकसित होने की 50 प्रतिशत से अधिक संभावना दिखा रहे हैं। ला नीना के दौरान भारत में सर्दियां सामान्य से ठंडी होती हैं। हालांकि जलवायु परिवर्तन के कारण गर्माहट कुछ असर कम कर सकती है, लेकिन ठंडी लहरें बढ़ सकती हैं।

वहीं भारतीय निजी मौसम एजेंसी ने कहा कि ला नीना की स्थिति से इंकार नहीं कर सकते है। उन्होंने बताया, प्रशांत महासागर का तापमान पहले ही सामान्य से ठंडा है। यदि यह -0.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे तीन तिमाहियों तक बना रहता है, तब इस ला नीना घोषित कर दिया जाएगा। 2024 के अंत में भी ऐसी ही स्थिति बनी थी जब नवंबर से जनवरी तक अल्पकालिक ला नीना रहा था। उन्होंने कहा, इस बार अमेरिका में सूखी सर्दियों का खतरा है, जबकि भारत में कड़ाके की ठंड और हिमालयी क्षेत्रों में अधिक बर्फबारी हो सकती है।

आईआईएसईआर मोहाली और नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस रिसर्च, ब्राजील ने भी अपने अध्ययन में पाया है कि ला नीना वर्षों में उत्तर भारत में ठंडी लहरें अधिक और लंबी अवधि तक चलती हैं। अध्ययन के अनुसार, ला नीना के दौरान निचले स्तर पर बनने वाली चक्रीय हवाएं उत्तरी अक्षांशों से ठंडी हवा भारत की ओर खींच लाती हैं।

भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्षविराम में ट्रंप की कोई भूमिका नहीं: इशाक डार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान ने पहली बार ऑपरेशन सिंदूर के दौरान 10 मई को भारत के साथ किए गए संघर्षविराम की असल सच्चाई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते हुए इसे पूरी तरह से द्विपक्षीय बताया है। जिसके बाद अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा मामले को लेकर दोनों देशों के बीच दर्जनों बार मध्यस्थता कराने के दावे की पोल खुल गई है। पाकिस्तान की तरफ से यह कबूलनामा किसी और ने नहीं बल्कि खुद विदेश मंत्री और उप-प्रधानमंत्री इशाक डार ने किया है।

एक विदेशी मीडिया को दिए साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि संघर्षविराम को लेकर जारी बातचीत में भारत ने कभी भी किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को स्वीकार नहीं किया। अमेरिका की तरफ से हालांकि इसके लिए एक प्रस्ताव दिया गया था। लेकिन वो भारत ही था। जिसने इस मामले को पूरी तरह से द्विपक्षीय रखने पर जोर दिया।

डार ने ये भी कहा कि जब इस्लामाबाद ने ट्रंप की मध्यस्थता की इच्छा को अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो के समक्ष रखा तो उन्होंने दो टूक लहजे में हमें ये स्पष्ट कर दिया कि नई दिल्ली, भारत और पाकिस्तान के बीच उठने वाले तमाम मामलों को सख्ती के साथ द्विपक्षीय रखने के ही पक्ष में है। भारत ने पूर्व में ही कई बार अमेरिकी राष्ट्रपति के संघर्षविराम के दावे को सिरे से खारिज करते हुए कहा है कि ये भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय आधार पर हुआ था। जिसमें किसी तीसरे पक्ष की कोई भूमिका नहीं रही है। दोनों देशों के सैन्य अभियान महानिदेशकों (डीजीएमओ) के बीच हॉटलाइन पर हुई बातचीत के बाद संघर्षविराम हुआ है। पाक के विदेश मंत्री के मुताबिक, हमें इस मामले में किसी तीसरे पक्ष की भागीदारी से कोई परेशानी नहीं थी। लेकिन भारत ने हमें साफ शब्दों में यह बता दिया था कि वो इस मुद्दे को किसी भी कीमत पर द्विपक्षीय ही रखेगा। फिर हमें मामले के द्विपक्षीय रहने पर भी कोई ऐतराज नहीं हुआ। लेकिन हमने इस बात पर जोर दिया कि जो भी संवाद इस दौरान होगा। वह व्यापक स्तर पर होगा। जिसमें पूर्व में हमारी वार्ताओं से जुड़े आतंकवाद, व्यापार, अर्थव्यवस्था और जम्मू-कश्मीर जैसे मसले मुख्य हैं।

भारत से बातचीत के लिए तैयार पाकिस्तान

पाकिस्तान के विदेश मंत्री के मुताबिक, 10 मई की सुबह करीब 8 से 8.20 के बीच वाशिंगटन की तरफ से विदेश मंत्री रुबियो की तरफ से मुझे संघर्षविराम का एक प्रस्ताव भेजा गया था। जिसमें कहा गया था कि भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाली कोई भी बातचीत एक एकांत जगह पर होगी। लेकिन इसके बाद जब मैं 25 जुलाई को वाशिंगटन में अमेरिका के विदेश मंत्री से मिला और मैंने उनसे पूछा कि वार्ता का क्या हुआ? तो उन्होंने कहा कि भारत इस प्रस्ताव के लिए तैयार नहीं है और उसका कहना है कि यह एक द्विपक्षीय मामला है। डार ने कहा कि पाकिस्तान द्विपक्षीय वार्ता के लिए राजी है। लेकिन हम बातचीत के लिए किसी के सामने भीख नहीं मांगेंगे। हमारा देश एक शांतिप्रिय देश है और हमारा मत यह है कि बातचीत से आगे का कोई रास्ता निकलेगा। डार ने यह इच्छा भी जताई कि अगर भारत चाहे तो पाकिस्तान उसके साथ बातचीत के लिए तैयार है।

प्रधानमंत्री जी ने 'विकसित दिल्ली' बनाने के लिए अपनापन दिखाया: सीएम रेखा गुप्ता

कौमी पत्रिका

नई दिल्ली, 17 सितंबर। देश की राजधानी नई दिल्ली का ऐतिहासिक कर्तव्य पथ आज और विशेष बन गया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में दिल्ली सरकार ने दिल्लीवासियों के साथ कर्तव्य पथ पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 75वें जन्मदिन के भव्य उत्सव में परिवर्तित कर दिया। इस विशेष अवसर पर पथ पर 'सेवा संकल्प यात्रा' निकाली गई, मेगा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया और सांस्कृतिक आयोजन की छटा भी बिखरी। विशेष बात यह रही कि दिल्ली वालों विशेषकर युवाओं ने इस उत्सव में जमकर भागीदारी की। ऐसे ही रंगमय वातावरण को देखकर मुख्यमंत्री ने कहा कि 'दिल्ली जीतती है और दिल भी जीतती है।' इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा दी गई उन योजनाओं की भी जानकारी दी, जो देश की राजधानी को विकसित दिल्ली बनाने में प्रभावी भूमिका निभा रही है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री ने देश की राजधानी का विशेष ध्यान रखा है। वह देश की राजधानी का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित तो कर ही रहे हैं, साथ ही दिल्ली को भी अंतरराष्ट्रीय राजधानी बनाने के लिए पूरा योगदान दे रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बीते 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी ने दिल्ली को केवल दिया ही है, क्योंकि उनके मन में दिल्ली विशेष बनाने की चाह और प्रतिबद्धता है। मुख्यमंत्री ने जानकारी दी कि राजधानी दिल्ली के लिए 1.25 लाख करोड़ रुपये की लागत से बने हाईवे और एक्सप्रेसवे दिए, साथ ही यूईआर-1 और यूईआर-2 जैसी परियोजनाओं को भी शुरू किया, जो दिल्ली के प्रदूषण को कम करने के लिए प्रभावी भूमिका अदा करेंगी। मुख्यमंत्री के अनुसार प्रधानमंत्री श्री मोदी व उनकी सरकार ने 400 किलोमीटर लंबे मेट्रो नेटवर्क का विस्तार किया। इस विस्तार को अगर तेजी से नहीं किया जाता तो दिल्ली आज यातायात जाम की गंभीर समस्या में पूरी तरह फंस चुकी होती। कर्तव्य पथ पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, उनके मंत्रिमंडल के सहयोगियों, जनप्रतिनिधि, युवाओं आदि ने रक्तदान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन पर आयोजित इस रक्तदान शिविर में 1157 यूनिट रक्त एकत्र हुआ, जिसने एक रिकॉर्ड बना दिया। ऐसे पिछले कार्यक्रमों की बात करें तो पूरी दिल्ली में आयोजित रक्तदान शिविर में 2000 यूनिट रक्त एकत्र हुआ है और एक ही स्थल पर आयोजित रक्तदान में अधिकतम 350 यूनिट रक्तदान हुआ है।

रक्तदान करने के बाद मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि मेरे रक्त की हर बूंद देश के नाम है। उन्होंने बताया कि शिविर में शुरू में केवल दो घंटे में ही 800 यूनिट रक्त का संग्रह हुआ, जो सेवा और समर्पण की अद्भुत मिसाल है।

मुख्यमंत्री ने शिविर में आए रक्तदाताओं से आत्मीय संवाद भी किया। उन्होंने युवाओं, महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों से मुलाकात कर उनके उत्साह की सराहना की और कहा कि यह भावना दिखाती है कि दिल्लीवासी सच्चे अर्थों में प्रधानमंत्री जी के विजन को साकार करने के लिए संकल्पबद्ध हैं। मुख्यमंत्री ने रक्तदाताओं से कहा कि आपका यह योगदान केवल एक रक्तदान नहीं, बल्कि जीवन बचाने का संकल्प है, जो प्रधानमंत्री मोदी जी की सेवा और समर्पण की भावना को आगे बढ़ाता है। कर्तव्य पथ पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में 'सेवा संकल्प वॉक' भी आयोजित की गई। मुख्यमंत्री ने सांसदों, अपनी कैबिनेट के मंत्रियों, विधायकों, पार्षदों, हजारों युवाओं के साथ इस यात्रा में शामिल हुई और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में देश और दिल्ली की प्रगति के संकल्प को दोहराया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस 'सेवा संकल्प वॉक' को प्रधानमंत्री के विजन से जोड़ा। उन्होंने कहा कि आज सेवा, समर्पण, जनकल्याण और भारत की प्रगति के प्रतीक, मां भारती के प्रिय सपूत और विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित 'सेवा संकल्प वॉक' में सम्मिलित होकर, हम सभी ने उनके अद्वितीय योगदान और दूरदर्शी नेतृत्व के लिए आभार व्यक्त करना चाहते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी के अथक परिश्रम और दृढ़ संकल्प की शक्ति से भारत आत्मनिर्भर और विश्वगुरु बनने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने प्रधानमंत्री को राष्ट्र का गौरव और 140 करोड़ भारतवासियों की धड़कन बताया। उन्होंने कहा कि दिल्ली को पहली बार यह अवसर मिला है कि वह प्रधानमंत्री के अथक योगदान के लिए उनका धन्यवाद कर सके। मुख्यमंत्री ने स्कूली बच्चों द्वारा अनेक भाषाओं में माननीय प्रधानमंत्री जी को दी गई शुभकामनाओं को एक भारत श्रेष्ठ भारत का सुंदर उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि दिल्ली अपने ऐतिहासिक गौरव और सांस्कृतिक धरोहर के साथ आगे बढ़ेगी और प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में सेवा, संकल्प और समर्पण की भावना के साथ काम करेगी। उन्होंने यह भी घोषणा की कि सेवा संकल्प पखवाड़े के इन 15 दिनों में दिल्ली सरकार 75 जनहितकारी योजनाओं को जनता को समर्पित कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सेवा और समर्पण के माध्यम से यहाँ संदेश जाता है कि 'दिल्ली जीतती है और दिल भी जीतती' है।

स्ट्रेचर पर लेटी पत्नी ने पति को दी विदाई: मुखाग्नि से पहले पिता से लिपटकर खूब रोया बेटा

नई दिल्ली। नवनूर ने सपने में भी नहीं सोचा था कि अपने जन्मदिन के दिन वह पिता को मुखाग्नि देगा। रोते हुए वह बार-बार यही कह रहा था कि डैडा एक बार उठ जाओ। उसके आंसू देखकर उप सचिव नवजोत सिंह के अंतिम संस्कार में आए लोगों की भी आंखें नम हो गईं। नवनूर का मंगलवार को जन्मदिन था। इसे लेकर चार दिन पहले पूरा परिवार जश्न मनाने की तैयारी कर रहा था लेकिन रविवार रात एक महिला ने बीएमडब्लू कार से नवजोत सिंह के साथ उनके बेटे के सपनों को भी रौंद दिया। मंगलवार सुबह डीडीयू अस्पताल में नवजोत के शव का पोस्टमार्टम किया गया। मोर्चरी के बाहर बड़ी संख्या में परिजन और मित्र मौजूद रहे। यहां नवजोत के मित्रों ने बताया कि वह यारों का यार था। एक मित्र ने बताया कि इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि वह अगर हमारे घर गया और उसने देखा कि घर की ट्यूबलाइट खराब है तो अगले दिन कोरियर से ट्यूबलाइट भेज देता था। बाद में पता चलता था कि यह नवजोत ने भेजा है। उनके मित्र ऋषभ ने बताया कि नवजोत की खासियत थी कि वह हर किसी के जन्मदिन पर सरप्राइज गिफ्ट देता था। उन्होंने कहा कि मंगलवार सुबह नवनूर ने फोन कर बताया कि अंकल डैडा का गिफ्ट आया है। डैडा ने सरप्राइज गिफ्ट के तौर पर मेरे लिए दो पार्सल बुक किए थे। सुबह-सुबह ही इसकी डिलिवरी हुई है। अब इसका क्या करें, यह कहते वह फोन पर ही रोने लगा। बाद में पता चला कि पिता को नवनूर के कुकिंग के शौक के बारे में पता चला था। इसे देखते हुए उन्होंने बेटे के लिए एयर फ्रायर बुक किया था। इसके अलावा एक शर्ट भी थी। यह सुनकर कोई भी अपने आप को संभाल नहीं पाया और उनकी आंखों से आंसू निकल गए। हादसे में नवजोत की पत्नी संदीप कौर भी गंभीर रूप से घायल हुई थीं। उनके हाथ-पैर टूट गए हैं। सोमवार को उनका ऑपरेशन किया गया है। उनका द्वारका स्थित वेंकटेश्वर अस्पताल में इलाज चल रहा है। ऐसे में परिवार वालों ने नवजोत के शव को वेंकटेश्वर अस्पताल ले जाने का फैसला किया। मंगलवार को डीडीयू अस्पताल में पोस्टमार्टम करवाने के बाद नवजोत के शव को एंबुलेंस के जरिये वेंकटेश्वर अस्पताल ले जाया गया। जहां उनकी पत्नी ने नवजोत का अंतिम दर्शन किया। अस्पताल में एक तरफ बेड पर लेटी नवजोत की पत्नी थी और दूसरे स्ट्रेचर पर नवजोत का शव। पति के अंतिम दर्शन के दौरान संदीप ने नवजोत के बेजान चेहरे को छूआ और उनके आंसुओं से नवजोत का चेहरा भीग गया। इस दौरान वहां मौजूद हर शख्स की आंखें नम हो गई। यहां से शव प्रताप नगर स्थित आवास फिर अंतिम संस्कार के लिए बेरीवाला बाग स्थित श्मशान भूमि ले जाया गया। श्मसान भूमि में नवजोत के परिवार, मित्र के अलावा अंतिम संस्कार में कई देशों के दूतावास के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। इनमें जापान, दक्षिण कोरिया, चीन शामिल है। तीनों ही देशों में नवजोत भारत की ओर से बाइलेटरल हेड का दायित्व निभा चुके थे।

चुन्नी से गला घोंटा, तोड़ी हड्डियां, बर्बर पति दोषी करार

नई दिल्ली। तीस हजारी कोर्ट ने एक आरोपी पति को उसकी पत्नी के साथ बर्बरता करने पर दोषी करार दिया है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश हेम राज की अदालत ने आरोपी पति बिजेंद्र सिंह को अपराध के लिए दोषी ठहराया। हालांकि, दोषी ने अपने बयान में मामले में झूठा फंसाए जाने का दावा किया और बचाव में कोई सबूत पेश नहीं किया। ऐसे में न्यायाधीश हेमराज ने कहा कि आरोपी को हत्या के प्रयास के तहत दोषी नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने कहा कि अदालत की राय है कि रिकॉर्ड में उपलब्ध सामग्री के आधार पर अभियुक्त को आईपीसी की 308 के तहत अपराध के लिए सुरक्षित रूप से दोषी ठहराया जा सकता है। यह घटना 22 सितंबर, 2021 में शादीपुर में घटी थी। शिकायतकर्ता संगीता का आरोप है कि इस मामले में पीड़िता के दोषी पति ने उसके माथे पर बंधी चुन्नी से उसका गला घोंटा था। उसे बालों से घसीटते हुए गली में ले गया था। इतना ही पीड़िता के मेडिकल रिपोर्ट में उसके गर्दन और पीठ पर चोट, पैर पर लिगेचर मार्क के साथ हड्डियां टूटने का भी उल्लेख किया गया है। पीड़िता का आरोप है कि उसका पति नशे की हालत में घर आया और उससे झगड़ा करने लगा। कहा कि वह उसे मार देगा क्योंकि पीड़िता को उसके खिलाफ पुलिस में शिकायत करने की आदत है। देखते ही देखते यह झगड़ा शारीरिक हमले में तब्दील हुआ, जिसके बाद इसने बर्बरता का रूप ले लिया। महिला ने खुद को घर के अंदर बंद कर पीसीआर को सूचना दी। न्यायाधीश ने कहा कि आईपीसी की धारा 308, 307 का एक छोटा अपराध है। कहा कि पीड़िता ने अपने बयान में स्पष्ट रूप से कहा है कि उसे अपनी गर्दन में तेज दर्द महसूस हुआ था। मेडिकल दस्तावेजों से साबित हुआ है कि उसकी गर्दन पर खरोंच के निशान भी थे। इस प्रकार, उसे यह जानकारी होने का श्रेय दिया जा सकता है कि गला घोंटने के उसके कृत्य से पीड़िता की मृत्यु होने की संभावना थी।

उद्योग जगत की चुनौतियों और विकास पर होगा मंथन

गाजियाबाद। भारत कॉन्क्लेव-गाजियाबाद का आयोजन शुक्रवार को किया जा रहा है। इस मौके पर जिले भर के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) से जुड़े उद्यमी जुटेंगे। उद्योग जगत की चुनौतियों और उसके बेहतर विकास पर मंथन होगा। जिला व पुलिस प्रशासन के आला अधिकारियों के साथ ही यूपीसीडा, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर और उद्योग विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी रहेगी। सरकार की वर्तमान व भावी योजनाओं से उद्यमियों को अवगत कराने के साथ ही उनकी समस्याओं के समाधान पर विचार होगा। प्रदेश के आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्री सुनील शर्मा बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहेंगे। औद्योगिक नगरी गाजियाबाद में इस क्षेत्रीय एमएसएमई कॉन्क्लेव का आयोजन डासना के आईएमएस कॉलेज यूसी कैंपस में दोपहर 3.30 बजे से होगा। इस दौरान अलग-अलग औद्योगिक क्षेत्रों के उद्यमी संगठनों के पदाधिकारी अपनी बात रखेंगे। आईआईए, बुलंदशहर रोड औद्योगिक क्षेत्र, उत्तर प्रदेश उद्यमी विकास संघ कविनगर औद्योगिक क्षेत्र, साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र, ट्रॉनिका सिटी औद्योगिक क्षेत्र, आनंद विहार औद्योगिक क्षेत्र, लघु उद्योग भारती व अन्य सभी संगठनों से जुड़े उद्यमियों की मौजूदगी रहेगी। शहर में एमएसएमई सेक्टर की वर्तमान स्थिति, उद्योगों को गति देने की भावी योजनाओं और चुनौतियों पर चर्चा होगी। उद्यमियों से संवाद के इस अवसर पर यूपीसीडा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मयूर माहेश्वरी विशेष रूप से मौजूद रहेंगे। जिले के मुखिया के तौर जिलाधिकारी रविंदर कुमार मांदड़ उनकी बात सुनेंगे। सुरक्षा के मुद्दे पर पुलिस आयुक्त जे. रविंदर गौड़ से उनकी बात होगी। जीएसटी के मुद्दे पर केंद्र के प्रतिनिधि के तौर पर सीजीएसटी के एडिशनल कमिश्नर विकास सेत व राज्य कर संग्रह विभाग के अपर आयुक्त मानवेंद्र प्रताप सिंह उद्यमियों से रूबरू होंगे।

स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार और विकसित राष्ट्र की आधारशिला: अनुप्रिया पटेल

प्रथम पृष्ठ का शेष

उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत पूरे देश में 75,000 स्वास्थ्य शिविर लगाए जाएंगे, जिनमें हाइपरटेंशन, डायबिटीज, कैंसर, सिकल सेल रोग की जाँच, एंटी-नेटल चेकअप, बच्चों का टीकाकरण और पोषण संबंधी जानकारी निःशुल्क दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया है कि स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार और विकसित राष्ट्र की आधारशिला है। उन्होंने इसे विडम्बना बताया कि आज साधन-संपन्न महिलाएँ भी एनीमिया और कुपोषण से ग्रसित हैं। इसलिए इस अभियान का उद्देश्य देश की हर माता-बहन तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री जन्मदिन पर निजी उपहार नहीं चाहते, बल्कि सेवा पखवाड़ा चाहते हैं। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय पोषण माह के तहत माताओं और बच्चों को उचित पोषण की जानकारी दी जा रही है। मुयमंत्री ने घोषणा की कि दिल्ली 7,500 स्वास्थ्य शिविर आयोजित कर रही है, जिन्हें अस्पतालों, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों और डिस्पेंसरीज़ से जोड़ा जाएगा। उन्होंने अपील की कि इसे जन-आंदोलन का रूप दें, क्योंकि स्वस्थ परिवार ही विकसित भारत का आधार है। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने भी कहा कि यह अभियान न केवल दिल्ली बल्कि पूरे देश में स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ और समावेशी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार केंद्र सरकार के साथ मिलकर इस अभियान को जन-जन तक पहुँचाने और अधिक से अधिक नागरिकों को लाभान्वित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सरहदों से बड़ी आस्था: सिख नेताओं की सरकार को खुली चुनौती !

प्रथम पृष्ठ का शेष

करतारपुर कॉरिडोर, जो 2019 में खोला गया था, सिख यात्रियों को वीज़ा-फ्री रास्ता देता था ताकि वे गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर के दर्शन कर सकें। लेकिन अप्रैल 2025 में पहलगाम आतंकी हमले और भारत-पाकिस्तान तनाव के बाद, मई 2025 से यह यात्रा रोक दी गई है। सामान्य रूप से सिख जत्थे महीनों पहले तैयारी शुरू कर देते हैं (पासपोर्ट, वीज़ा प्रक्रिया आदि)। सरकार के इस इंकार से अब लाखों भक्त असमंजस और निराशा में हैं। भारत सरकार द्वारा प्रकाश उत्सव के अवसर पर सिख यात्रियों को पाकिस्तान जाने की अनुमति न देने का फैसला धर्म, भावनाओं और सुरक्षा के बीच संतुलन की परीक्षा बन गया है। सिखों के लिए यह सिर्फ यात्रा का मामला नहीं, बल्कि आस्था और पहचान का प्रश्न है। सरदार गुरचरन सिंह बब्बर और अन्य सिख संस्थाओं का दबाव जारी है और यदि कोई समाधान नहीं निकला तो आने वाले महीनों में यह मुद्दा सरकार और सिख कौम के बीच बड़े टकराव का कारण बन सकता है।

दो साल की बच्ची के हत्या मामले में दोषी को उम्रकैद

नई दिल्ली। रोहिणी कोर्ट ने नाबालिग से दुष्कर्म और हत्या के लिए आजीवन कारावास की सजा काट रहे एक दोषी को दो साल की बच्ची के अपहरण और हत्या के एक अलग मामले में भी इसी तरह की सजा सुनाई है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अमित सहरावत, रविंदर के खिलाफ सजा पर बहस सुन रहे थे, जिसे पिछले महीने 2014 के एक मामले में दोषी ठहराया गया था। मुख्य लोक अभियोजक ने दावा किया कि दोषी एक सीरियल किलर था, जिसने पहले भी अन्य बच्चों का अपहरण, दुष्कर्म और हत्या की थी। वकील ने दावा किया कि रविंदर के खिलाफ लगभग 30 ऐसे ही मामले दर्ज हैं। मृत्युदंड की मांग करते हुए उन्होंने तर्क दिया कि दो साल के बच्ची के अपहरण और हत्या से पता चलता है कि दोषी एक मनोरोगी था, जो सुधार से परे था। अदालत ने कहा कि हालांकि दोषी की देखभाल करने के लिए एक बुजुर्ग मां है, लेकिन यह तथ्य पीड़ित के माता-पिता के दर्द और दुख को कम करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अदालत ने अभियोजक के इस तर्क पर गौर किया कि रविंदर के खिलाफ नाबालिग बच्चों के दुष्कर्म और हत्या के कई मामले दर्ज हैं। अदालत ने कहा कि यह भी विचारणीय है कि इनमें से अधिकतर मामलों में उसे बरी कर दिया गया है और उसे केवल तीन मामलों में ही दोषी ठहराया गया है, जिनमें यह मामला भी शामिल है। इस प्रकार दोषी के मामले पर इस आधार पर विचार नहीं किया जा सकता कि उसने लगभग 30 नाबालिग बच्चों का अपहरण, दुष्कर्म और हत्या की है। न्यायाधीश ने दोषी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इससे पहले मई 2023 में एक अदालत ने 2015 में छह साल की बच्ची के अपहरण, दुष्कर्म और हत्या के लिए रविंदर को आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। अदालत ने टिप्पणी की कि दोषी ने नृशंस दुष्कर्म और हत्या की है।

NAME CHANGE
It is for general information that I, GURPREET KAUR BHANGU W/O SH. GURDEEP SINGH BHANGU R/O J-11/63, RAJOURI GARDEN, TAGORE GARDEN, WEST DELHI, DELHI-110027, declare that name of mine, my husband and my minor son has been wrongly written as GURPREET KAUR, GURDEEP SINGH and JAIDEEP SINGH in my minor son JAIDEEP SINGH aged 14 years in his school record. The actual name of mine, my husband and my minor son are GURPREET KAUR BHANGU , GURDEEP SINGH BHANGU and JAIDEEP SINGH BHANGU, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my client **Mr. Rishabh Kumar** is purchasing the **Plot no. 31 & 34, land admeasuring 92.6 Sq. yards, out of Khasra no. 58/6, situated in the revenue estate of village Hastsal, Delhi State and the colony Known as Mohan Garden, Block- L-3, Uttam Nagar, New Delhi- 110059** from Mrs. Arti Singh who is the owner of the property vide Relinquishment Deed dated 28.08.2025 which is registered as doc. no.2025/25/I/24603, book no.1, vol, no. 15792, Page no. 181 to 190, on 29.08.2025, SRO-West Janakpuri and Intend to mortgage the said property with Aditya Birla Housing Finance Ltd.If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.
Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

NAME CHANGE
I, Shivang Choudhary s/o Ravinder Chaudhary r/o 42/19, Ashok Nagar, New Delhi - 110018 have changed my name to Shivang Chaudhary for all purposes.

NAME CHANGE
I, Anita Choudhary w/o Ravinder Chaudhary r/o 42/19, Ashok Nagar, New Delhi - 110018 have changed my name to Anita Chaudhary for all purposes.

NAME CHANGE
I, Ravinder Chowdhary s/o Late Sh. Om Parkash Chowdhary r/o 42/19, Ashok Nagar, New Delhi - 110018 have changed my name to Ravinder Chaudhary for all purposes.

NAME CHANGE
I, MANOJ PUROHIT S/o DEVI DUTT PUROHIT R/o TA-708, Parsavnath Edens 7 th Floor Alpha-2, Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh-201308, have changed the name of my minor daughter VAISHVAVI alias VAISHNAVI PUROHIT aged 14 years and she shall hereafter be known as VAISHNAVI PUROHIT.

NAME CHANGE
I, Binish Azahar D/o Mohammad Mubeen W/o Mohd Azahar R/o A-2 Second Floor Plot No 76 Modern Public School Sec 4 Shahberi Greater Noida West Gautam Budha Nagar Uttar Pradesh 201301 Have Changed My Name to Binish Mubeen for All Future Purposes.

PUBLIC NOTICE
I, Mrs. Grace Micheal, W/o Late F. Micheal, R/o Khasra No. 677/1/3, House No. 32, Ashok Vatika, Deoli, South Delhi - 110062, hereby declare that I have severed all my relations with and have disowned my son Mr. Anthony Micheal and my daughter Mrs.Elizabeth John from all my movable and immovable properties owing to their continuous misconduct and for not taking care of me. Henceforth, they shall have no right, claim, or concern of any nature whatsoever in respect of my movable and immovable properties, nor shall I be responsible or liable for their acts, dealings, transactions, or representations in any manner in the future. The general public is hereby informed not to deal with them in relation to my properties. If anyone does so, they shall be doing it at their own risk and My client shall not be responsible for their acts or deeds in the future.
Vinay Bhushan Advocate
CH.NO.606 LAWYERS BLOCK
SAKET COURT, COMPLEX
NEW DELHI-110017
M.No.876126312

सार्वजनिक सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री राजपाल पुत्र श्री तेजराम, निवासी 06, देवला, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश 201306, एक आवासीय प्लाट संख्या 3, क्षेत्रफल 100 वर्ग गज, खसरा संख्या 485, स्थित श्याम कॉलोनी, ग्राम देवला, परगना व तहसील दादरी, जिला गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, के मालिक व काबिज खतौनी फसली वर्ष 1423-1428 व 1429-1434 द्वारा मालिक व काबिज है। तेजपाल के मृत्यु के पश्चात राजपाल व अन्य वारिस, विरासत से मालिक बने। कथित संपत्ति भार मुक्त है, न किसी प्राधिकरण द्वारा अधिगृहित है न ही कोई मामला किसी न्यायालय मे लंबित है। वर्तमान में, मेरे मुव्किकल कथित सम्पत्ति को श्री गौरव कुमार पुत्र श्री दुर्ग सिंह को बेच रहे है जो आधार हाउसिंग फाइनेन्स लि0, शाखा निठारी, सेक्टर 31, नोएडा, उत्तरप्रदेश, के द्वारा फाइनेन्स किया जा रहा है। यदि किसी व्यक्ति को उक्त कथित सम्पत्ति के सबंध में कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षरी या आधार हाउसिंग फाइनेन्स लि0 के समक्ष इस प्रकाशन के 7 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति उचित कागजात के साथ रखे / संपर्क करे, अन्यथा कथित सम्पत्ति के संबंध में दावा अवैध व व्यर्थ माना जायेगा।
रूपेश कुमार रौशन अधिवक्ता
डी-803, नन्दग्राम,
गाजियाबाद, उ0 प्र0 201003
roushan.rupesh@gmail.com

NAME CHANGE
I, SHUBHAM S/O LALIT PARKASH R/o HOUSE NO- 80, BUDHPUR BIJAPUR, NORTH WEST DELHI, DELHI-110036, have changed my name from SHUBHAM to SHUBHAM SHARMA for all future purpose.

NAME CHANGE
I, Mohammad Azahar S/o Mohd Tahir R/o R/o A-2 Second Floor Plot No 76 Modern Public School Sec 4 Shahberi Greater Noida West Gautam Budha Nagar Uttar Pradesh 201301 Have Changed My Name to Mohd Azahar for All Future Purposes.

NAME CHANGE
I, hitherto known as KAILASH RANI D/o SH. PURAN CHAND BANSAL W/o SH SANDEEP KUMAR R/O 553, H.No. B-84, RADHEY SHYAM PARK EXT, KRISHNA NAGAR DELHI – 110051, I have changed my name and shall hereafter be known as POOJA GOYAL.It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.
KAILASH RANI

PUBLIC NOTICE
MY CLIENT SHRI PREMNATH S/O LATE SH. DEENANATH R/O FLAT NO-238, 2ND FLOOR, POCKET-1 SECTOR-23 ROHINI, DELHI-85, HAS DEBARRED AND DISOWNED HIS SONS DEEPAK, RAHUL AND PRATEEK DAUGHTER-IN-LAWS POONAM, SONIYA AND GRANDSON VEDANT BAGDI FROM ALL HIS MOVABLE AND IMMOVABLE PROPERTIES IN ALL MANNERS.IF ANY ONE DEALS WITH THEM, THEY WILL DO SO AT THEM THEIR OWN RISKS, COSTS AND CONSEQUENCES. MY CLIENT SHALL NOT BE RESPONSIBLE FOR THE SAME IN ANY MANNER PRESENT & FUTURE.
Adv. Mohit Bhardwaj.

NAME CHANGE
It is for general information that I BIRMA NAND S/o KAMAL SINGH, R/o C-345, Block - C, J J Colony, Madipur, Madipur Slum Quarter, West Delhi, Delhi-110063, declare that name of mine has been wrongly written as BRAHAM NAND in my Service Records. The actual name of mine is BIRMA NAND, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I, KOMAL SINGH D/o SHELENDRA SINGH residing at BH -1310 ,Tower -B, Raj Empire, Behind SG Grand, Raj Nagar Extension, Morti Village, PO- Raj Nagar Extension, Dist.-Ghaziabad, Uttar Pradesh - 201017 declare that the name of my Father and Mother has been wrongly written as SHELENDER SINGH and POONAM SINGH in my 12th Class Educational Documents. The actual name of my Father and Mother are SHELENDRA SINGH and POONAM respectively, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I, SHELENDRA SINGH S/o Late DHARMNDRA SINGH residing at BH -1310 , Tower - B, Raj Empire, Behind SG Grand , Raj Nagar Extension, Morti Village, PO- Raj Nagar Extension, Dist.- Ghaziabad, Uttar Pradesh - 201017 declare that the name of mine and my wife has been wrongly written as SHELENDER SINGH and POONAM SINGH in my minor Son SHUBH SINGH aged 16 Years in his 10th Class Educational Documents. The actual name of mine and my wife are SHELENDRA SINGH and POONAM respectively which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I hitherto known as CHANDER RAM alias CHANDESHWAR RAM S/o RAUDI RAM residing at E-130, J J Colony, Raghubir Nagar, Tagore Garden, West Delhi, Delhi-110027, have changed my name and shall hereafter be known as CHANDESHWAR RAM, for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Mohammad Amir Siddiqui s/o Mohammad Usman R/o N-8-A, Third Floor, Abul Fazal Enclave Part-1, Jamia Nagar Okhla, Delhi-110025 have changed my name to Mohammad Amir for all future purposes.

Lost &Found
I, MR GURBACHAN SINGH S/o SHRI UJAGAR SINGH (FIR LR NO 3215868) residing at C - 76, Malviya Nagar ,NEW DELHI do hereby inform to the General Public that I have lost the original land document No' 2376/2007,Survey No 60/3-9.67 , Extension-9 Acre 67 cents, Village Nakkalapatty , Thalak Usilampatty,District Madurai state Tamilnadu. If anyone Person finds the said document, please contact me over phone no 9958168128.

NAME CHANGE
I, NO-14656710X, Rank- HAV Name-R SIVA KUMAR residing at H.NO-65, VILL-KALVELIPOTTAL, PO-VADAKKUKEERANUR, TEHSIL-ILAYANGUDI, DIST-SIVAGANGA, TAMILNADU-630702, have change my mother's name from R SUGAMATHI to SUGAMATHI RAMU for all future purposes vide affidavit dated 17/09/2025 before Notary Public, Delhi.

DATE OF BIRTH CHANGE
I, NO-14656710X, Rank- HAV Name-R SIVA KUMAR residing at H.NO-65, VILL-KALVELIPOTTAL, PO-VADAKKU-KEERANUR, TEHSIL-ILAYANGUDI, DIST-SIVAGANGA, TAMILNADU-630702, in my service records my mother's (SUGAMATHI RAMU) date of birth wrongly mentioned as 01/07/1961 instead of her correct date of birth as 10/02/1964 vide affidavit dated 17/09/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, BALDEV RAJ S/o GIAN CHAND DUA R/o WZ-249, 1st Floor, Gali No.14, Shiv Nagar, Jail Road, Janakpuri, West Delhi-110058 have changed my name to BALDEV RAJ DUA permanently.

NAME CHANGE
I, MD NOORE ALAM S/o MOHAMMAD ANWAR ALAM R/o 1662, BLK-I GALI NO-20, SANGAM VIHAR NEW DELHI-110062 have changed my name to MOHAMMAD NOORE ALAM for all future purposes .

NAME CHANGE
I, MD ANWAR ALAM S/o ABDUL MOGANI ANSARI R/o 1662 BLK-I GALI NO-20 SANGAM VIHAR, NEW DELHI-110062 have changed my name to MOHAMMAD ANWAR ALAM for all future purposes .

NAME CHANGE
I, ROZY PRAVEEN W/o MOHAMMAD NOORE ALAM R/o 1662, BLK-I GALI NO-20, SANGAM VIHAR, NEW DELHI-110062 have changed my name to ROZY for all future purposes .

NAME CHANGE
I, Kewal Krishan s/o Barkat Ram Bhola R/o D-200, D Block, Raj Nagar-II, Palam Colony, New Delhi-110077 have changed my name to Kewal Krishan Bhola for all future purposes

NAME CHANGE
SHAHIDA KHATOON H/S ABDUL MATIN R/O H.NO. 25/18 GROUND FLOOR LEFT SIDE SHOP NO 2 GALI NO -18 ZAKIR NAGAR JAMIA NAGAR OKHLA DELHI-110025 I have changed my name to Parveen Khatoon permanently

NAME CHANGE
I hitherto known as Bhoore lal S/O Ghamandi Lal, residing at Hno -D 2-288, Gali no 3, Hari Nagar ,Jait Pur extn Badarpur, South delhi, delhi-110044 ,Permanent Address, Belahar, PO: Belahar, DIST: Mainpuri, Uttar Pradesh - 205265, have changed my name and shall hereafter be known as Keshav Dayal.

NAME CHANGE
I, Aradhna Chadda W/O Naresh Chadda resident of H. No 41 road no 43 West Punjabi Bagh, New DELHI-110026. have changed my name to Aradhna Chadha for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Mohd Abdul Wahab S/o Mo. Ayyub R/o C-58/127, Mata Sundri Road, New Delhi-110002 have changed my name to Abdul Wahab.

NAME CHANGE
I, Shoeb S/o Abdul Wahab R/o 13-D, DDA Flats, Mata Sundri Road, Delhi-110002 have changed my name to Mohd Shoaib.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, MANISH BELLANI S/O RAMESH CHANDER R/O A/39 G/F, Duggal Colony, Khanpur Devil Rod, Relaxo Shoes, Dr Ambedkar Nagar, Dr Ambedkar Nagar, PO: Pushpa Bhawan, DIST: South Delhi, Delhi-110062 declare that name of mine has been wrongly written as MANISH in my minor son namely CHETAN aged 14 years in his School Records. the actual name of mine is MANISH BELLANI which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
It is for general Information that, I Parveen Kumar S/o Sh. Hemchand Singhal R/o H.No. A-7, Rajendra Park Extention, Nanglol, West Delhi, Delhi-110041, declare that name of mine has been wrongly written as Parveen Singhal & wife Renu Singhal & my Minor son's name Deepanshu Singhal (DOB-11.01.2011) in School Record. The actual name of mine is Parveen Kumar & my wife Renu Devi & my Minor son name Deepanshu which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, SANJAY KUMAR S/O BUDDHI MAL resident of C-62 FLAT NO-6, KHANPUR, DUGGAL COLONY, PUSHPA BHAWAN, DELHI, -110062. have changed my name to SANJAY KUMAR GOYAL for all future purposes.

NAME CHANGE
I, NO-15675329P Rank-HAV Name-SONTKKE SATISH MAROTRAO R/o VILL-WANI PIMPALGOAN, PO-SHIKH RAJURA, TEHSIL-PALAM, DIST-PARBHANI, MAHARASHTRA-431720 have changed my minor son's name from SONTKKE SIDDANT SATISH to SONTKKE SIDDHANT SATISH for all future purposes vide affidavit dated 17/09/2025 Before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, PUJA KUMARI W/O JITENDRA CHOUDHARY R/O WZ-274, E/4, PLOT NO 104, NAVYUG BLOCK, NEAR MANGAL BAZAR, VISHNU GARDEN, TILAK NAGAR, WEST DELHI, DELHI-110018 declare that name of mine has been wrongly written as POOJA in my minor son namely ARYAN CHOUDHARY aged 13 years in his School Records. The actual name of mine is PUJA KUMARI which may be amended accordingly. It is certified that I have complied with other legal requirements in the connection.

NAME CHANGE
I, KHUSHI VERMA D/O VISHAL VERMA resident of H. NO. 65, POCKET 1, SECTOR 22, ROHINI, DELHI-110086. have changed my name to PAVANI VERMA for all future purposes.

NAME CHANGE
It is for general information that I, ANANT KUMAR S/o SHIV NANDAN PRASAD R/o A-378, Inder Encalave Phase-2, Kirari Suleman Nagar, Dist.: North West Delhi, Delhi-110081, declare that name of my wife has been wrongly written as REKHA KUMARI in my minor daughter namely AAYUSHI KUMARI aged 14 years in her School Records and Birth Certificate Registration No. MCDOLR083696. The actual name of my wife is REKHA DEVI.

NAME CHANGE
I hitherto known as KANLA alias KAMLESH DEVI W/o Dharmaveer Singh, Dankaur Road, Kherli Hafizpur, PO: Gurukul Sikandrabad, DIST: Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh-203202 have changed my name and shall hereafter be known as KAMLESH DEVI

NAME CHANGE
I MOHAMMED ALAM S/O SUDDI MIYA R/O H.N0-A2/647 BLOCK- A/2 JJ COLONY, MADANPUR KHADAR DELHI-110076 HAVE CHANGE MY NAME TO MOHAMMAD ALAM FOR ALL PURPOSE

NAME CHANGE
I SEHRUN NISHA W/O MOHAMMAD ALAM R/O H.N0-A2/647 BLOCK- A/2 JJ COLONY, MADANPUR KHADAR DELHI-110076 HAVE CHANGE MY NAME TO SHAIRUN NISHA FOR ALL PURPOSE

NAME CHANGE
DHURV S/O VIJAY DASS R/O 606/2 GALI NO -7 LINEPAR SHANKAR GARDEN BAHADURGARH HARYANA 124507 I have changed my name to DHRUV ARYA Permanently

NAME CHANGE
It is for general information that I, VENKATA RAMANA ARISETTY S/O VENKATARAMANA MURTHY ARISETTY R/O H NO-A-101, TYPE-IV, NEAR PARK, A-BLOCK, PANDARA ROAD, DELHI-110003, declare that name of mine has been wrongly written as ARISETTY VENKATA RAMANA in my Service Record. The actual name of mine is VENKATA RAMANA ARISETTY, which may be amended accordingly. It is certified that I have complied with other legal requirements in the connection

NAME CHANGE
I, PYALA MAHALAXMI Mother of JC-442602H Rank-NB SUB Name-GANESH PYLA Presently residing at H NO. 6-46/16/5, VILL-JANATHA COLONY, PO-PADMANABA NAGAR, TEH-GOPALA PATNAM, DIST-VISAKHAPATNAM (URBAN), ANDHRA PRADESH-530029, have changed my name from PYALA MAHALAXMI to PYLA MAHALAXMI for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 01/06/1960 instead of my correct date of birth as 01/01/1966 vide Affidavit dated 17/09/2025 before Notary Public, Delhi.

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

डिजिटल कंपनी 40 करोड़ से ज्यादा की ठगी, छह गिरफ्तार

एजेंसी

गुरुग्राम। पुलिस ने साइबर ठगी के आरोप में नूंह जिला से छह लोगों को काबू किया है। आरोपियों ने गुरुग्राम की मोबिक्विक वॉलेट कंपनी में 40.22 करोड़ रुपये की ठगी की। पुलिस ने आरोपियों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे 2500 से अधिक बैंक खाते फ्रीज किए हैं। सेक्टर-53 थाना प्रभारी रामबीर सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। कंपनी से संबंधित दस्तावेज और बैंक की जानकारी मांगी गई है। शक यह भी है कि इस मामले में कंपनी के कर्मचारियों व अधिकारियों की भी भूमिका हो। मोबिक्विक कंपनी के कानूनी सलाहकार बालकिशन लाधानिया ने सेक्टर-53 थाने में एफआईआर दर्ज करवाई थी। उन्होंने बताया कि 12 सितंबर को खातों की जांच करते समय उन्हें कुछ संदिग्ध लेन-देन मिले। जांच में पता चला कि कुछ मोबिक्विक वॉलेट की गड़बड़ी के कारण ग्राहक उसका फायदा उठाते हुए गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। यूपीआई से कोई ट्रांजेक्शन फेल होती है तो पैसे दूसरे के खाते में ट्रांसफर नहीं होते। यहां तकनीकी खराबी की वजह से फेल हुई ट्रांजेक्शन के रुपये भी लोगों के बैंक खातों में ट्रांसफर हो रहे थे। कुछ लोगों द्वारा अपने वॉलेट में मौजूद राशि से भी अधिक रुपये ट्रांसफर किए जा रहे थे।

प्रत्येक नागरिक को गुणवत्ता पूर्वक इलाज करवाने का अधिकार: बालकृष्ण गोयल

नारनौल। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के स्पेशल मॉनिटर बालकृष्ण गोयल ने रामपुरा पीएचसी तथा आयुष्मान आरोग्य मंदिर हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर का निरीक्षण किया। इस मौके पर उन्होंने चिकित्सा अधिकारियों को नॉर्म के अनुसार सभी प्रकार की सुविधा मुहैया कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को इलाज का अधिकार है। ऐसे में प्रत्येक नागरिक को गुणवत्ता पूर्वक चिकित्सा सुविधायक मुहैया करवाना सुनिश्चित करें। इस मौके पर बालकृष्ण गोयल ने इलाज के लिए आए मरीजों से काफी देर तक बातचीत की भी की तथा वहां पर मिल रही सुविधा के बारे में फीडबैक लिया। सीएमओ डॉ अशोक कुमार ने बताया कि यहां पर लगभग 100 ओपीडी रोजाना की हो रही हैं। इसके अलावा हर रोज छह-सात मरीज दाखिल भी किए जा रहे हैं। इसके बाद बालकृष्ण गोयल ने पूछताछ खिड़की, जन्म मृत्यु पंजीकरण, ओपीडी , आयुष विभाग, आपातकालीन कक्ष, कोल्ड चेन रुम, टीकाकरण रूम में जाकर व्यवस्थाएं देखीं। स्टॉक भी चेक किया। इस मौके पर जिला समाज कल्याण अधिकारी अमित शर्मा भी मौजूद रहे।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने किया ईवीएम स्ट्रांग रूम का निरीक्षण

जींद। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मोहम्मद इमरान रजा ने भारत निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) और मतदाता सत्यापित पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपैट) मशीनों के लिए बनाए गए स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मोहम्मद इमरान रजा ने चुनाव आयोग के निर्देशों के अनुसार ईवीएम और वीवीपैट मशीनों को संग्रहित करने की जांच की जहां ईवीएम, सीयू, बीयू वीवीपैट सहित चुनाव सामग्री को स्ट्रांग रूम में पुलिस की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में सुरक्षित रखा गया है। उन्होंने कहा कि स्ट्रांग रूम की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सीसीटीवी कैमरों से आवागमन की हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही है। लॉग बुक को जिला चुनाव अधिकारी की देखरेख में रखा जाता है। इस अवसर पर नायब तहसीलदार प्रदीप कुमार, इंडियन नेशनल लोकदल से सुखबीर सिंह, बसपा से देशराज सरोहा, बीजेपी से नरेंद्र, जेजेपी से संजय गोयत, आम आदमी पार्टी से पंकज उपस्थित रहे।

एडीजीपी हिसार रेंज ने मालखाना का किया निरीक्षण

जींद। पुलिस लाइन स्थित मालखाने का हिसार रेंज के एडीजीपी केके राव ने औचक निरीक्षण किया। उन्होंने मालखाने का भौतिक निरीक्षण करने के साथ रिकार्ड को गहनता से जांचा। निरीक्षण के दौरान सब कुछ संतोषजनक रहा। इस अवसर पर एसपी कुलदीप सिंह, एएसपी सोनाक्षी सिंह, डीएसपी संदीप कुमार, नरवाना के डीएसपी कमलदीप राणा मौजूद रहे। उन्होंने माल मुकद्मों के रखरखाव से संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश दिए। एडीजीपी केके राव अचानक

पुलिस लाइन पहुंचे और माल खाने का औचक निरीक्षण करना शुरू कर दिया। पहले उन्होंने मालखाने में रखे नशीले एवं द्रव पदार्थों का भौतिक निरीक्षण किया। वहां रखे नशीले पदार्थों का वजन किया गया। उनके रिकार्ड को खंगाला गया। उन्होंने काफी देर तक बारीकी से मालखाने का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान एडीजीपी ने स्पष्ट किया कि पारदर्शिता और जवाबदेही पुलिस कार्यप्रणाली की पहली प्राथमिकता है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को मालखाना प्रबंधन की निगरानी, सुरक्षा व्यवस्था और रिकॉर्ड में पूरी पारदर्शिता बनाए रखने के निर्देश दिए।

स्वच्छता, नशा मुक्ति और स्वस्थ जीवन शैली को बनाएं जन आंदोलन : नायब सिंह सैनी

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि स्वच्छता, नशा मुक्ति और स्वस्थ जीवन शैली को अब जनआंदोलन बनाना चाहिए। इस संकल्प को लेकर जनभागीदारी के साथ हम एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। उन्होंने यह बात बुधवार की सुबह रोहतक में मानसरोवर पार्क के समीप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में ड्रग फ्री हरियाणा थीम को लेकर आयोजित नमो मैराथन में पहुंचे युवाओं को संबोधित करते हुए कही। मुख्यमंत्री ने अल सुबह रोहतक में स्वयं श्रमदान कर स्वच्छता अभियान की शुरुआत की। नमो मैराथन से पहले उन्होंने मानसरोवर पार्क में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। नायब सिंह सैनी ने प्रदेशवासियों की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की

शुभकामनाएं दी। उन्होंने नमो मैराथन में उमड़ी युवा शक्ति को संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिन, समर्पण, सेवा और राष्ट्र निर्माण की भावना का उत्सव है। प्रधानमंत्री का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा है। साधारण पृष्ठभूमि से असाधारण नेतृत्व की जीवन यात्रा हम सबके लिए प्रेरणा है। हमें ऐसे ऊर्जावान व्यक्तित्व पर गर्व है जिनके लिए नेतृत्व पद नहीं बल्कि सेवा, त्याग और ईमानदारी है। उनके नेतृत्व में भारत ने आत्मनिर्भरता, नवाचार और समावेशी विकास की दिशा में अभूतपूर्व प्रगति की है और वैश्विक मंच पर देश को नई पहचान मिली। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारी डबल इंजन सरकार ने नारी सशक्तिकरण को प्राथमिकता देते हुए उल्लेखनीय कार्य किया है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना, मातृ वंदना योजना व स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से नारी शक्ति को सशक्त बनाने का कार्य किया है। उन्होंने नमो मैराथन को नशामुक्त समाज की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति को नशे से दूर कर खेल और फिटनेस की ओर ले जाना ही इस अभियान का उद्देश्य है। उन्होंने कार्यक्रम में पहुंचे लोगों से पर्यावरण संरक्षण के लिए आगे आने का आह्वान भी किया।

गृह मंत्री तीन अक्टूबर को कुरुक्षेत्र में नए आपराधिक कानूनों पर आयोजित प्रदर्शनी का करेंगे उद्घाटन

एजेंसी

चंडीगढ़। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह 3 अक्टूबर, 2025 को कुरुक्षेत्र में नए लागू आपराधिक कानूनों पर आधारित एक प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे। इस आयोजन की सुचारू व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने आज यहाँ वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की। प्रदर्शनी एवं उद्घाटन समारोह की तैयारियों की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि यह महत्वपूर्ण प्रदर्शनी 4-5 दिनों तक चले ताकि अधिवक्ता, छात्र, अभिभावक और आम नागरिक इसमें शामिल होकर आपराधिक न्याय प्रणाली में हुए बदलावों को समझ सकें। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि नए कानूनों पर व्याख्यान और पैनल चर्चा का आयोजन किया जाए, जिसमें कानूनी विशेषज्ञों और नागरिक समाज के प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी में वास्तविक जीवन के उदाहरणों को भी प्रदर्शित किया जाना चाहिए जहाँ इन कानूनों के लागू होने के बाद जघन्य अपराधों का अति शीघ्र समाधान किया गया हो । इससे लोगों को इन सुधारों के सकारात्मक प्रभाव को देखने में मदद मिलेगी। इस पहल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदर्शनी का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय न्याय संहिता, 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 के माध्यम से भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में किए गए महत्वपूर्ण सुधारों के बारे में नागरिकों को जागरूक और शिक्षित करना है।

मुख्यमंत्री ने कुरुक्षेत्र में सिख और संत रविदास संग्रहालयों के लिए शोध समितियों के गठन के दिए निर्देश

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कुरुक्षेत्र में बनने वाले 'सिख संग्रहालय एवं विरासत केंद्र' और 'संत रविदास भवन एवं संग्रहालय' के लिए शोध समितियां गठित करने के निर्देश दिए हैं। ये समितियाँ पवित्र गुरुओं की जीवन यात्रा, शिक्षाओं और आदर्शों से संबंधित विषय-वस्तु का परीक्षण एवं सत्यापन करेंगी, जिससे दोनों महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के कार्य को शीघ्र गति मिल सके। समितियों में ऐसे विद्वान सम्मिलित किए जाएंगे जिन्होंने गुरुओं के जीवन एवं योगदान पर गहन अध्ययन और शोध कार्य किया है।मुख्यमंत्री 'सिख संग्रहालय एवं विरासत केंद्र' और 'संत रविदास भवन एवं संग्रहालय' की प्रगति की समीक्षा हेतु आयोजित एक बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक के दौरान नायब सिंह सैनी ने दोनों संग्रहालयों के संकल्पना डिज़ाइनों की भी समीक्षा की और अधिकारियों को कम से कम 4-5 विकल्प प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सर्वोत्तम विकल्प को शीघ्र अंतिम रूप देकर कार्य प्रारंभ किया जाए। मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश

दिए कि संग्रहालयों के लिए वास्तुशिल्पीय डिजाइन तैयार करते समय संरचनाओं की एकरूपता सुनिश्चित की जाए तथा भवन चारों ओर से समान रूप से प्रभावशाली और आकर्षक दिखाई दें। मुख्यमंत्री ने कहा कि कुरुक्षेत्र में बनने वाला सिख संग्रहालय सिख इतिहास, संस्कृति और गुरुओं की यात्रा को विस्तार से प्रस्तुत करे। इसी प्रकार, संत शिरोमणि गुरु रविदास संग्रहालय न केवल स्थापत्य की दृष्टि से प्रभावशाली हो, बल्कि संत रविदास जी के आध्यात्मिक दर्शन, शिक्षाओं और सामाजिक समरसता के शाश्वत संदेश को भी अभिव्यक्त करे। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि सिख गुरुओं के इतिहास और शिक्षाओं के साथ-साथ संत शिरोमणि गुरु रविदास जी के जीवन एवं विचारों पर आधारित पुस्तकों की तैयारी अभी से प्रारंभ कर दी जाए, ताकि संग्रहालयों के उद्घाटन अवसर पर उनका विमोचन किया जा सके।

अनिल विज का राहुल गांधी पर तंज: बहुत देर कर दी हुजूर आते-आते, पानी तो आकर चला भी गया

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने आज कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा कि ''बहुत देर कर दी हुजूर आते-आते, पानी तो आकर चला भी गया और उतर भी गया, जब पानी में लोग डूब रहे थे, तब तुम्हारा राहत भरा हाथ किसी की ओर बढा नहीं''। विज ने कहा कि ''जब सारा पानी उतर गया है, तो जैसे कार्यवाही डाली जाती है, उसी प्रकार राजनीतिक कार्यवाही के तौर राहुल गांधी जी आए हैं कि मैं भी गया था''। विज आज चण्डीगढ में मीडिया कर्मियों द्वारा राहुल गांधी के पंजाब में बाढग्रस्त इलाकों के दौरे के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब दे रहे थे। कांग्रेस ने सिग्नेचर अभियान शुरू किया है, के संबंध में पूछे गए सवाल के जवाब में विज ने कहा कि ''कांग्रेस पार्टी को देश की प्रजातांत्रिक संस्थाओं पर भरोसा नहीं है, तथा इनके कुछ लोगों में मूक सहमति हुई है कि तमाम प्रजातांत्रिक संस्थाओं को परेशान किया जाए। ईडी और सीबीआई की कार्यवाही पर कांग्रेस के नेता बोलते हैं और कोर्ट

के फैसलों के ऊपर भी कांग्रेस के नेता बोलते हैं। वहीं, चुनाव आयोग की अपनी एक प्रक्रिया है, आयोग मतदाताओं का रिवीजन करता है और इस दौरान गलतियां रह सकती है और रहती भी है जिसके लिए समय दिया जाता है, कि एक महीना के अंदर दुरूस्त करवाया जा सकता है और गलत बनने पर कटवाया भी जा सकता है। फिर भी यदि तकलीफ है तो कांग्रेस को वोटें न मिलने की है और इस तकलीफ को कोई दूर नहीं कर सकता है''। वक्फ बिल पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा रोक लगाने से किए गए इंकार के संबंध में पूछे गए सवाल के जवाब में विज ने सुप्रीम कोर्ट का धन्यवाद किया है और कहाकि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को सबकों मानना चाहिए। इस बारे में सम्पतियों का पंजीकरण एक पोर्टल के माध्यम से हो रहा है जिससे बहुत समस्या का समाधान हो जाएगा तथा यह भी पता चल पाएगा कि किस-किस समय पर किस-किस के पास कौन-कौन सी संम्पतियां है और कब से है। यह डाटा ऑनलाईन होने से काम आसान हो जाएगा। भारत-पाकिस्तान के मैच में भारत की जीत व हाथ न मिलाने के संबंध में पूछे गए सवाल के जवाब में विज ने कहा कि ''फिर मारा-फिर मारा-फिर मारा पाकिस्तान को, अब क्रिकेट के मैदान में भी पाकिस्तान को मारा''।

मुख्यमंत्री सैनी ने किया स्टेट एनवायरमेंट प्लान-2025 का शुभारंभ, हर जिले में ई-वेस्ट कलेक्शन सेंटर्स स्थापित करने का सरकार का लक्ष्य

एजेंसी

पंचकूला। हरियाणा ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए प्रदूषण नियंत्रण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए बड़ा कदम उठाया है। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने स्टेट एनवायरमेंट प्लान-2025 का शुभारंभ और नॉन - सीओ2 पाथवेज़ रिपोर्ट 2025-26 का विमोचन किया। यह कदम हरियाणा के सतत् विकास और पर्यावरण संरक्षण में मील का पत्थर साबित होगा। इस योजना के लागू होने से वायु गुणवत्ता में सुधार होगा, प्रदूषण के स्तर में कमी आएगी और प्रदेश के नागरिकों को एक स्वच्छ, स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण मिलेगा। साथ ही, यह पहल हरियाणा को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सतत् विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में अग्रणी बनाएगी। मुख्यमंत्री पंचकूला में आयोजित स्टेट एनवायरमेंट प्लान-2025 के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर पर्यावरण, वन एवं वन्यजीव मंत्री राव नरबीर सिंह उपस्थित रहे। नायब सिंह सैनी ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में

ऐसी पहल करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य बन गया है। राज्य पर्यावरण योजना केवल एक या दो विभागों का काम नहीं है। इस योजना के लिए कई विभागों को मिलकर काम करना होगा। इसके लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया जाएगा, जो विभिन्न विभागों के बीच तालमेल और प्रगति की निगरानी का काम करेगी। यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी विभाग मिशन मोड में काम करें, पूरी पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ आगे बढ़ें और जनता की भागीदारी भी सुनिश्चित हो।उन्होंने कहा कि आज पेड़ काटे जा रहे हैं, जंगल सीमित हो रहे हैं, जिससे पर्यावरण में असंतुलन पैदा हो रहा है और उसका दुष्परिणाम मानव जाति पर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य पर्यावरण योजना भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा, शुद्ध पानी और हरी-भरी धरती सुनिश्चित करने की दिशा में बड़ा कदम है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और बढ़ते प्रदूषण से निपटने के लिए राज्य सरकार ने विशेषज्ञों के साथ मिलकर व्यापक योजना लागू की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी जल, वायु, मिट्टी जैसे संसाधनों को बचाने का संदेश दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजनीति में कुछ ऐसे लोग भी हुए हैं, जो वाहवाही लूटने के लिए डंपिंग ग्राउंड पर खड़े होकर कचरे को साफ करने की बातें करते थे। लेकिन कचरा कभी साफ नहीं हुआ बल्कि उन्होंने लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ किया, ये भी एक प्रकार का प्रदूषण ही है, जबकि पिछले 11 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में कचरे के निपटान की दिशा में मजबूत कदम उठाए गए हैं और कचरे का निरंतर निपटान सुनिश्चित किया जा रहा है।

नायब सैनी जनता के सीएम, विपक्ष माने या न माने कोई फर्क नहीं पड़ता: कृष्ण बेदी

एजेंसी

चंडीगढ़। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण बेदी ने विपक्ष द्वारा मुख्यमंत्री नायब सैनी को सीएम न मानने को लेकर दिए गए बयान पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि नायब सैनी जनता के सीएम हैं, विपक्ष उन्हें सीएम माने या न माने कोई फर्क नहीं पड़ता है। उन्होंने इनेलो का नाम लिए बिना तंज कसा कि जब उनकी सरकार थी तो उन्होंने किसी को सम्मान नहीं दिया। यहां तक कि अपने मंत्री व विधायकों का भी सम्मान नहीं किया। अब वे कहते हैं कि सीएम को सीएम नहीं मानते, तो मत मानो। मंत्री कृष्ण बेदी चंडीगढ़ स्थित भाजपा विधायक दल कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नायब सैनी के नेतृत्व में भाजपा ने न केवल चुनाव लड़ा, बल्कि 48 विधायक जीतकर आए और तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई। विपक्ष के हाल का सबको पता है। लोग आकलन करके वोट देते हैं। वे लोगों के आकलन में कहीं नहीं ठहरते हैं, फिर ये ईवीएम पर आरोप लगाते हैं। बेदी ने केंद्र सरकार की ओर से जीएसटी में सुधारों को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त को इस सुधार की घोषणा की थी और केवल 20 दिनों के भीतर इस घोषणा को पूरा कर दिया गया। इसका उद्देश्य आम आदमी के जीवन को बेहतर करना और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। कृष्ण बेदी ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि पूर्व की कांग्रेस की सरकार जीएसटी को लागू नहीं कर पाई। कांग्रेस ने कई अलग-अलग तरह के टैक्स लगा रखे थे जिससे आम लोगों, व्यापारियों आदि को नुकसान होता था। बेदी ने कांग्रेस के वोट चोरी अभियान को लेकर कहा कि महात्मा गांधी विचार धारा पर देश चलता है। सभी को अपनी बात रखने का अधिकार है।

मोदी सरकार ने जीएसटी रिफार्म के माध्यम से आम लोगों को दीपावली का उपहार दिया : प्रेम शुक्ला

ज्योति दर्पण

चंडीगढ़। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम शुक्ला ने रोहतक में मोदी सरकार के जीएसटी सुधारों को गिनाने के साथ-साथ कांग्रेस को भी आड़े हाथों लिया। भाजपा कार्यालय मंगल कमल में प्रेस कांफ्रेंस में प्रेम शुक्ला ने कहा कि कांग्रेस सरकार के समय टैक्स स्ट्रक्चर शोषण करने वाला था, लेकिन वेट के मुकाबले जीएसटी ने लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त किया है। अब नेक्स्ट जेन जीएसटी रिफॉर्म से व्यापारी, उधोगपति और आम आदमी आर्थिक रूप से और अधिक मजबूत होगा। यह मोदी सरकार का देश के लोगों को दीवाली का बड़ा तोहफा है, जो 22 सितंबर से मिलेगा। शुक्ला ने कहा कि कांग्रेस की सरकार में टूथपेस्ट पर भी 27 प्रतिशत टैक्स लगता था जोकि अब मोदी सरकार में पांच प्रतिशत है। कांग्रेस सरकारें बच्चों की टॉफी पर 21 प्रतिशत टैक्स लेती थी, अब मोदी सरकार में पांच प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार में साइकिल पर 17 फीसदी टैक्स होता था, लेकिन अब मोदी सरकार ने पांच प्रतिशत करके बड़ी राहत दी है। माताओं बहनों की स्वाभिमान की वस्तु सिलाई मशीन पर भी कांग्रेस

की सरकार 16 प्रतिशत टैक्स लेती थी, लेकिन मोदी सरकार ने इसे घटाकर पांच प्रतिशत कर दिया। कांग्रेस सरकार में होटलों के कमरों पर 14 प्रतिशत टैक्स था जो अब भाजपा शासन में पांच प्रतिशत कर दिया गया है।भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि दवाईयों पर कांग्रेस की सरकारों ने 16 प्रतिशत टैक्स लगाया हुआ था, अब भाजपा सरकार ने पांच प्रतिशत कर दिया है। अनेक दवाईयों को तो टैक्स फ्री कर दिया है। मोदी सरकार ने आटा, चाय, दूध, दही, इंश्योरेंस आदि पर जीरो प्रतिशत टैक्स कर दिया है। टीवी, फ्रीज, ऐसी पर कांग्रेस के समय 31 प्रतिशत टैक्स था जो अब आधा रह गया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तो पानी पर भी 27 प्रतिशत टैक्स लेती थी और लोग भी पानी पीने में कंजूसी बरतते थे, लेकिन अब पेट भर पानी पी सकते हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने लोगो के शोषण का टैक्स स्ट्रैक्चर खड़ा किया था। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने कांग्रेस शोषण तंत्र को समाप्त करने का काम किया है। शुक्ला ने कहा कि जीएसटी रिफार्म से भारत की अर्थ व्यवस्था विश्व मे तजी से आगे बढ़ेगी। सामान्यजनों की खरीद पॉवर बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि विकसित भारत बनाने और राम राज्य की स्थापना की दिशा में मोदी जी का यह ऐतिहासिक कदम है जिसका भाजपा का एक-एक कार्यकर्ता अभिनंदन और आभार व्यक्त करता है। एक सवाल का जवाब देते हुए प्रेम शुक्ला ने कहा कि मोदी सरकार ने तो महंगाई को कम किया है। कांग्रेस के समय में तो 27 फीसदी टैक्स था जो अब पांच प्रतिशत तक रह गया है। पिछली सरकारों में महंगाई की दर 10 प्रतिशत तक रहती थी, पिछली दिवाली पर महंगाई दर 1.8 प्रतिशत थी। एक अन्य सवाल पर उन्होंने कहा कि मां-बेटा और यहां तक उनके जीजा भी भ्रष्टाचार के मामले में बेल पर हैं।

चौ. देवीलाल जयंती पर प्रदेश में होंगे कार्यक्रम: दुष्यंत चौटाला

सिरसा। पूर्व डिप्टी सीएम एवं जेजेपी नेता दुष्यंत चौटाला ने कहा कि चौ. देवीलाल की 112वीं जयंती पर पूरे प्रदेश में जिला स्तर पर 112 कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। 25 सितंबर को सभी जिलों में प्रार्थना सभाएं होंगी। दुष्यंत चौटाला सिरसा में पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से इस बार स्व. चौधरी देवीलाल के पुराने सभी साथियों साथियों को जिला स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। दुष्यंत चौटाला बताया कि इससे पूर्व 23 सितंबर तक पूरे प्रदेश में चौ. देवीलाल की 72 प्रतिमाएं भी स्थापित की जाएंगी, जिसमें सिरसा में सबसे ज्यादा 15, हिसार में 8 और रोहतक में 8 प्रतिमाएं शामिल हैं। पूर्व डिप्टी सीएम ने बताया कि अगर प्रदेशभर में चौधरी देवीलाल की कोई भी प्रतिमा यदि डैमेज पाई गई तो उसकी मरम्मत करवाई जाएगी।

विभागीय कार्यों को तत्परता से पूरा करते हुए नजर आए विकासात्मक परिवर्तन : आरती सिंह राव

ज्योति दर्पण

रेवाड़। हरियाणा की स्वास्थ्य एवं आयुष मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि रेवाड़ी जिला के विभागीय अधिकारी पूरी संजीदगी के साथ अपने दायित्व का निर्वहन करें। विभागीय कार्यों की प्रगति बारे समीक्षा के दौरान उन्होंने अधिकारियों को कहा कि विकास कार्यों को तत्परता से पूरा करते हुए रेवाड़ी जिला में विकासात्मक परिवर्तन नजर आना चाहिए।

स्वास्थ्य मंत्री रेवाड़ी में इस जिला से जुड़े विकास कार्यों व जनहितकारी पहलुओं पर संबंधित अधिकारियों की बैठक ले रही थी। बैठक में रेवाड़ी से विधायक लक्ष्मण सिंह यादव व बावल से विधायक डा.कृष्ण कुमार सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि वे रामपुरा गांव की बेटी हैं जोकि रेवाड़ी जिला में है, ऐसे में रेवाड़ी जिला उनकी जन्म व कर्म भूमि होने पर वे इस जिला के उत्थान के लिए पूरी तरह से सदैव सजग हैं और रहेंगी। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में विकासात्मक स्वरूप के साथ रेवाड़ी जिला नजर आए इसके लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य होने सुनिश्चित किए जाएं। उन्होंने बैठक में शहर की सफाई और कचरा प्रबंधन पर विस्तार से चर्चा करते हुए

शहरी निकाय विभाग के अधिकारियों को शहरी स्वच्छता अभियान में अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से निभाने के निर्देश दिए। साथ ही अधिकारियों को शहर में सफाई व्यवस्था की निरंतर मॉनिटरिंग करने के लिए भी कहा गया। उन्होंने कहा कि सभी विभागाध्यक्ष अपने कार्यालयों की सफाई रखना भी सुनिश्चित करें ताकि आने वाली 2 अक्टूबर तक हमारे जिला के शहरी क्षेत्रों सहित सभी सरकारी कार्यालय नए लुक में नजर आएं। स्वास्थ्य मंत्री ने विकास कार्यों को लेकर तैयार एजेंडे में शामिल सड़कों के सुधारीकरण पर संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि बरसात का मौसम अब खत्म हो गया है, ऐसे में अब जिला की सभी सडक़ों की मरम्मत की जाए व नई सड़कों का निर्माण कार्य भी यथाशीघ्र शुरू करवाना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने सड़क निर्माण कार्यों में प्रयोग होने वाली निर्माण सामग्री की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान रखने के आदेश दिए। उन्होंने शहर की नई आबादी में जलभराव की समस्या के उचित समाधान बारे जानकारी ली। उन्होंने हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को रेजांगला पार्क क्षेत्र से अतिक्रमण हटवाने के आदेश दिए।

किसानों के हित में सरकार तुरंत कदम उठा, किसानों को मुआवजा देने में न करे देरी:कुमारी सैलजा

एजेंसी

चंडीगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा है कि हाल ही में आई भीषण बाढ़ ने किसानों की फसलों को भारी नुकसान पहुंचाया है। इस कठिन समय में किसानों को राहत पहुंचाने की बजाय सरकार उन्हें पोर्टल की उलझनों में फंसा रही है। ऐसे में सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह तत्काल किसान हित में कदम उठाए और जल्द से जल्द पीड़ित किसानों को उचित मुआवजा प्रदान करे। मीडिया को जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा है कि किसानों की ओर से शिकायतें मिल रही हैं कि बाढ़ पीड़ितों के लिए बनाए गए पोर्टल पर न तो समय पर इंटरनेट सुविधा मिल रही है और न ही पोर्टल सुचारु रूप से काम कर रहा है। कई स्थानों पर पोर्टल बंद मिला और अंतिम तिथि 17 सितम्बर होने के बावजूद किसान अपनी फसल दर्ज नहीं कर पाए। 15 सितंबर को तो सर्वर दिन भर डाउन रहा। कुमारी सैलजा ने कहा कि यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब किसानों को तुरंत सहायता और राहत की आवश्यकता है, तब सरकार अपनी जिम्मेदारी से बच रही है। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार की ओर पोर्टल तभी कामयाब हो सकते है जब इंटरनेट सुविधा बेहतर हो, शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र में तो इंटरनेट सुविधा का बुरा हाल होता है, किसान सुबह से शाम तक सीएससी सेंटर के चक्कर काटते रहते है और हर बार पता चलता है कि सर्वर डाउन है या इंटरनेट काम नहीं कर रहा। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा है कि सरकार किसानों को परेशान न करने वाला कोई कदम न उठाए। बाढ़ से धान को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है और उसका ही मुआवजा देने में बीमा कंपनी आना कानी कर रही है, सरकार को इस दिशा में भी कदम उठाना चाहिए। सांसद कुमारी सैलजा ने सरकार से मांग की है कि सरकार स्वयं गिरदावरी करवाए और बाढ़ से हुए वास्तविक नुकसान का आकलन करे, किसानों को बिना देरी के तुरंत मुआवजा दिया जाए, प्रभावित किसानों के कर्ज की वसूली एक वर्ष के लिए स्थगित की जाए तथा इस अवधि का ब्याज सरकार स्वयं वहन करे और किसानों को पोर्टल की तकनीकी समस्याओं में उलझाने की बजाय राहत और सहायता उन तक सीधी पहुंचाई जाए।

अर्बन कंपनी आईपीओ की धमाकेदार लिस्टिंग

- निवेशकों को मिला 8,400 रुपए से ज्यादा मुनाफा

नई दिल्ली

डॉमेस्टिक हेल्प से संबंधित सर्विसेज प्रोवाइडर अर्बन कंपनी आईपीओ के शेयर को बाजार में शानदार एंट्री के साथ लिस्ट हो गए। अर्बन कंपनी आईपीओ के शेयर बीएसई पर 161 रुपये प्रति शेयर पर लस्ट हुए। यह आईपीओ प्राइस बैंड के अपर एंड 103 रुपये की तुलना में 58 रुपये या 56.31 प्रतिशत का प्रीमियम दर्शाता है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर पटेल रिटेल के शेयर 162.25 रुपये पर लिस्ट हुए। यह इश्यू प्राइस के मुकाबले 59.25 रुपये या 57.52 प्रतिशत जायदा है। अर्बन कंपनी का आईपीओ लिस्टिंग काफी हद तक ग्रे मार्केट की उम्मीदों के अनुरूप रही। दलाल स्ट्रीट पर कंपनी की लिस्टिंग से पहले कंपनी के शेयर ग्रे मार्केट में लगभग 157.5 रुपये प्रति शेयर पर कारोबार कर रहे थे, जो आईपीओ इश्यू प्राइस से 54.5 रुपए या लगभग 52.91 प्रतिशत का ग्रे मार्केट प्रीमियम दर्शाता है। अर्बन कंपनी आईपीओ ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। कंपनी के शेयर बीएसई पर 161 रुपये के भाव पर लिस्ट हुए। आईपीओ के हर लॉट में 145 शेयर थे। इस तरह, निवेशकों को हर लॉट पर 8410 रुपये का तगड़ा फायदा हुआ है। एनएसई के आंकड़ों के अनुसार, अर्बन कंपनी के आईपीओ को 109 गुना सब्सक्रिप्शन मिला। आईपीओ को पेशकश पर रखे गए 10.15 करोड़ शेयरों के मुकाबले 11.06 अरब शेयरों के लिए बोलियां मिली। क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल खरीदारों ने आईपीओ को सबसे ज्यादा अप्लाई किया। उन्होंने अपने लिए रिजर्व हिस्से को 147.35 गुना अप्लाई किया।

जबकि नॉन-इंस्टीट्यूशनल निवेशकों ने 77.82 गुना सब्सक्राइब किया। रिटेल निवेशकों के लिए रिजर्व हिस्से को 41.5 गुना बुक किया गया

ओला ने इंसेंटिव स्कीम के तहत सरकार से मांगी 400 करोड़ की प्रोत्साहन राशि

-कंपनी ने यह क्लेम 2024-25 में 3,000 करोड़ की बिक्री के आधार पर किया

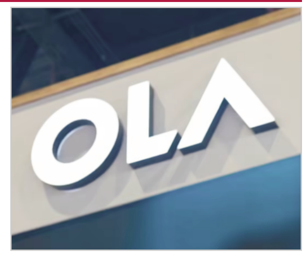

नई दिल्ली

भारत की इलेक्ट्रिक व्हीकल इंडस्ट्री में अग्रणी कंपनी ओला इलेक्ट्रिक ने प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम के तहत सरकार से करीब 400 करोड़ रुपए की प्रोत्साहन राशि का दावा किया है। कंपनी ने यह क्लेम वित्त वर्ष 2024-25 में करीब 3,000 करोड़ की पात्र बिक्री के आधार पर किया है इससे कंपनी के शेयरों में हल्की तेजी आई और यह करीब 60.50 पर ट्रेड कर रहा है, जो पिछले बंद भाव से करीब 3 फीसदी की बढ़त दर्शाता है। ओला इलेक्ट्रिक को यह फायदा इसलिए मिलने वाला है क्योंकि कंपनी ने उत्पादन और बिक्री दोनों में सरकार द्वारा तय मानकों को पूरा किया है। पीएलआई योजना के तहत कंपनियों को स्थानीय उत्पादन और रेगुलेटरी नियमों का पालन करने पर इंसेंटिव दिया जाता है। इस आधार पर ओला को बिक्री का करीब 13 से 14 फीसदी यानी करीब 400 करोड़ रुपए मिलने की उम्मीद है। बता दें ओला इलेक्ट्रिक पिछले साल भी इस योजना के तहत इंसेंटिव पाने वाली इकलौती टू-व्हीलर कंपनी थी।

लगातार दूसरे साल भी कंपनी ने पात्र बिक्री में नंबर-वन पोजिशन हासिल कर अपनी लीडरशिप को मजबूत किया है।हाल ही में कंपनी ने ऐलान किया था कि उसकी जेन 3 स्कूटर लाइनअप, जिसमें एस1 सीरीज के सभी मॉडल शामिल हैं, पूरी तरह से पीएलआई योजना के तहत प्रमाणित हो चुकी है।

यह कंपनी की सबसे ज्यादा बिकने वाली रेंज है और इसका सीधा असर कंपनी की कमाई और मुनाफे पर पड़ेगा। वहीं विशेषज्ञों का मानना है कि 2026 की दूसरी तिमाही से कंपनी की प्रॉफिटेबिलिटी में बड़ा उछाल आ सकता है। यह इंसेंटिव न केवल ओला की लिक्विडिटी और फाइनेंशियल पोजिशन को मजबूत करेगा, बल्कि पूरी ईवी इंडस्ट्री को भी सकारात्मक संदेश देगा।

महाराष्ट्र सरकार ने प्याज किसानों को राहत देने कई अहम फैसले लिए

– जमाखोरी पर सख्ती, सौर ऊर्जा से प्याज प्रसंस्करण और किसानों के हितों की सुरक्षा पर सरकार का फोकस

मुंबई

महाराष्ट्र के विपणन मंत्री जयकुमार रावल ने जानकारी दी कि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने केंद्र सरकार से प्याज निर्यात पर मिलने वाली सब्सिडी को दोगुना करने का आग्रह किया है। इसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय बाजार में निर्यात को प्रतिस्पर्धी बनाना और घरेलू बाजार में कीमतों को स्थिर रखना है।

मंत्री ने बताया कि इस साल राज्य में प्याज का उत्पादन 55 लाख टन तक बढ़ गया है, जिससे कीमतों में गिरावट की संभावना है। इसे देखते हुए निर्यात को बढ़ावा देने और किसानों को उचित लाभ दिलाने के लिए यह कदम आवश्यक है। केंद्र सरकार ने इस संबंध में सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। लासलगांव की मंडी, जो एशिया की सबसे बड़ी प्याज मंडी है, की कीमतें बाजार में मानक के रूप में देखी जाती हैं। इसलिए राज्य सरकार ने बाजार में जमाखोरी और कृत्रिम गिरावट पर रोक लगाने के लिए जिला कलेक्टरों के अंतर्गत सतर्कता समितियों को सक्रिय किया है।

दीर्घकालिक उपायों के तहत सरकार सौर ऊर्जा आधारित प्याज निर्जलीकरण परियोजनाएं शुरू करने जा रही है। इन परियोजनाओं के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पादक संगठनों की मदद से एक लाख टन प्याज का पाउडर और चिप्स के रूप में प्रसंस्करण किया जाएगा। इसके अलावा मंत्री ने वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राज्य की 28 कृषि उपज बाजार समितियों के अध्यक्षों और सचिवों से संवाद कर स्थानीय स्तर पर गड़बड़ियों पर अंकुश लगाने और किसानों के हितों की रक्षा करने के निर्देश दिए।

एनायरा एनर्जी ने हिंदुस्तान पेट्रोलियम को आपूर्ति बढ़ाई

नई दिल्ली

नायरा एनर्जी ने सरकारी कंपनी हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपसीएल) को परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति बढ़ा दी है। वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने बताया कि दरअसल, यूरोपियन यूनियन (ईयू) के प्रतिबंधों के बाद रोसनेफ्ट समर्थित नायरा एनर्जी की इस रिफाइनरी से निर्यात अचानक गिरकर शून्य हो गया है। अधिकारी ने एक कार्यक्रम में अलग से बताया, नायरा उत्पादों (पेट्रोलियम)की आपूर्ति घरेलू कंपनियों में मुख्यतौर पर एचपीसीएल और कुछ छोटी कंपनियों शैल को करेगी।' नायरा एनर्जी में रूस की दिग्गज तेल कंपनी रोसनेफ का 49 प्रतिशत स्वामित्व है। यूरोपियन यूनियन ने 18वें प्रतिबंध पैकेज की घोषणा 18 जुलाई को की थी। इससे नायरा एनर्जी की रिफाइनरी से यूरोप को होने वाला निर्यात पूरी तरह खत्म हो गया था। नायरा के परिष्कृत उत्पादों के एचपीसीएल को अधिक आपूर्ति करने से कंपनी पर प्रतिबंधों का असर कम होगा। कंपनी ट्रक और पाइपलाइन के जरिए गुजरात स्थित एचपीसीएल के टर्मिनल को उत्पादों की आपूर्ति कर सकती है। नायरा प्रमुख तौर पर एचपीसीएल को प्राथमिक तौर पर आपूर्ति बढ़ा रही है जबकि भारत की अन्य तेल कंपनियों जैसे इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसीएल), भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (बीपीसीएल) और रिलायंस इंडस्ट्रीज (आरआईएल) के पास अपनी मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त रिफाइनिंग क्षमता है। अधिकारी ने बताया कि निर्यात नहीं होने और कच्चे तेल की बाधित आपूर्ति के कारण अभी नायरा अपनी रिफाइनिंग क्षमता का 60 से 80 प्रतिशत ही उपयोग कर रही है।

भारत का बड़ा लक्ष्यः 2047 तक 1,800 गीगावॉट गैर जीवाश्म ऊर्जा क्षमता

नई दिल्ली

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्रह्लाद जोशी ने एक एनर्जी ट्रांजिशन समिट में बताया कि भारत ने गैर जीवाश्म ईंधन स्रोतों पर आधारित बिजली उत्पादन क्षमता 2047 तक बढ़ाकर 1,800 गीगावॉट करने का लक्ष्य रखा है। वर्तमान में यह क्षमता 252 गीगावॉट है। उन्होंने कहा कि भारत 2030 तक इसे 500 गीगावॉट तक बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। जोशी ने बताया कि भारत की सौर बिजली उत्पादन क्षमता 2014 में 2.82 गीगावॉट से बढ़कर अब 124 गीगावॉट तक पहुंच चुकी है। पवन ऊर्जा क्षमता भी इसी दौरान 21 गीगावॉट से 53 गीगावॉट हो गई है। देश में नवीकरणीय ऊर्जा का तेजी से विकास हो रहा है और चालू वित्त वर्ष के पांच महीनों में 23 गीगावॉट की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़ी गई है। मंत्री ने कहा कि पीएम सूर्यघर योजना के तहत 20 लाख से अधिक सौर उत्पादन संयंत्र लगाए गए हैं। इस साल की नीतिगत पहलों के चलते 30 लाख नए संयंत्र लगाने का लक्ष्य है। इसी के साथ भारत 1.5 वर्षों में 1 करोड़ रूफटॉप सोलर इंस्टालेशन पूरा करने की दिशा में अग्रसर है। जोशी ने यह भी बताया कि देश की सौर मॉड्यूल विनिर्माण क्षमता अब 100 गीगावॉट तक पहुंच चुकी है, जो मार्च 2024 और मार्च 2025 के बीच दोगुनी हो जाएगी। साथ ही, सोलर फोटोवोल्टेइक सेल निर्माण क्षमता 9 गीगावॉट से बढ़कर 27 गीगावॉट हो गई है।यह स्पष्ट है कि भारत नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की ओर तेजी से बढ़ रहा है और 2047 तक अपने ऊर्जा उत्पादन को पूरी तरह से स्थायी बनाने का मजबूत संकल्प लिए हुए है।

अटलांटा इलेक्ट्रिकल्स का 687 करोड़ का आईपीओ 22 सितंबर को खुलेगा

नई दिल्ली

बिजली, वाहन और इन्वर्टर ड्यूटी ट्रांसफार्मर बनाने वाली कंपनी अटलांटा इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड का 687 करोड़ रुपये का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) 22 सितंबर को खुलेगा। कंपनी ने आईपीओ के लिए 718 से 754 रुपये प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया है, जिससे कंपनी का ऊपरी स्तर पर मूल्यांकन लगभग 5,800 करोड़ रुपये बैठता है। अटलांटा इलेक्ट्रिकल्स का आईपीओ 24 सितंबर को बंद होगा। एंकर निवेशक 19 सितंबर को शेयरों के लिए बोली लगा सकेंगे। गुजरात स्थित यह कंपनी आईपीओ के तहत 400 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी करेगी और प्रवर्तक तथा अन्य शेयरधारकों द्वारा मूल्य दायरे के ऊपरी स्तर पर 287 करोड़ रुपये मूल्य के 38.1 लाख इक्विटी शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) लाई जाएगी। कंपनी नए शेयरों की बिक्री से प्राप्त राशि का उपयोग ऋण भुगतान, कंपनी की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने और सामान्य कंपनी कामकाज के लिए करेगी।

भारत का एआई मिशन होगा और मजबूत

– बजट बढ़ाकर 20,000 रुपए करोड़ करने की तैयारी

नई दिल्ली भारत सरकार इं डिया एआई के तहत अगले पांच वर्षों में खर्च को 10,372 करोड़ से बढ़ाकर 20,000 करोड़ रुपए करने की योजना बना रही है। इस पहल का उद्देश्य देश को एआई तकनीक में आत्मनिर्भर बनाना और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। मामले से जुड़े सूत्रों के अनुसार, बढ़ा हुआ बजट जीपीयू क्षमता बढ़ाने, स्वदेशी फाउंडेशन मॉडल विकसित करने और अधिक स्टार्टअप्स को शामिल करने में खर्च किया जाएगा। सरकार ने पहले ही चार स्टार्टअप सर्वम एआइ, सॉकेट एआइ, गण एआइ और ज्ञानी एआइ को चयनित किया है, जो भारत के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में मल्टी-लैंग्वेज और एडवांस्ड एआइ मॉडल्स तैयार कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर सर्वम एआइ प्रशासनिक सेवाओं के लिए 120 अरब पैरामीटर वाला ओपन-सोर्स बना रहा है, जबकि ज्ञानी एआइ वॉयस-बेस्ड, रीयल-टाइम स्पीच प्रोसेसिंग मॉडल तैयार कर रही है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव के अनुसार, भारत की जीपीयू क्षमता को 18,417 से बढ़ाकर 40,000 किया गया है। यह मिशन भारत को एआइ स्टैक की हर परत–डेटा, मॉडल, क्लाउड से लेकर एप्लिकेशन तक में स्वतंत्र बनाने की दिशा में अहम भूमिका निभाएगा। सरकार आठ और कंपनियों को एआइ मॉडल डेवलपमेंट के अनुबंध देने की प्रक्रिया में है, जिनमें टेक महिंद्रा, फ्रैक्टल, भारतजेन और जेनलूप शामिल हैं।

आईसीआईसीआई बैंक को 49.11 करोड़ का जीएसटी नोटिस

नई दिल्ली आईसीआईसीआई बैंक को जीएसटी के कथित कम भुगतान को लेकर 49.11 करोड़ रुपए का डिमांड नोटिस मिला है। यह आदेश 15 सितंबर 2025 को पश्चिम बंगाल के अतिरिक्त राजस्व आयुक्त (अपील) द्वारा पश्चिम बंगाल जीएसटी अधिनियम, 2017 की धारा 107 के तहत जारी किया गया। इस मांग में 23.52 करोड़ कर, 23.23 करोड़ ब्याज और 2.35 करोड़ जुर्माना शामिल है। विवाद का मुख्य मुद्दा बैंक द्वारा उन ग्राहकों को दी गई सेवाएं हैं, जो अपने खातों में न्यूनतम शेष राशि बनाए रखते हैं। कर अधिकारियों का मानना है कि इन सेवाओं पर जीएसटी देय है। आईसीआईसीआई बैंक ने कहा है कि वह आदेश की समीक्षा कर रहा है और समयसीमा के भीतर अपील करेगा। बैंक ने पूर्व में भी इसी मुद्दे पर विभिन्न कर अधिकारियों से नोटिस और आदेश प्राप्त किए हैं।

इस्पात उद्योग को कार्बन-मुक्त करने योजना लाएगी सरकारः सचिव

नई दिल्ली इस्पात सचिव संदीप पौंड्रिक ने बुधवार को कहा कि सरकार स्वच्छ इस्पात निर्माण प्रौद्योगिकी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए 5,000 करोड़ रुपये की योजना पर काम कर रही है। मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी ने राष्ट्रीय राजधानी में 'एफटी लाइव एनर्जी ट्रांजिशन समिट इंडिया' के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि सतत इस्पात के लिए राष्ट्रीय मिशन का प्रस्ताव विचाराधीन है। यह 5,000 करोड़ रुपये की योजना है। पौंड्रिक ने कहा कि इस योजना में देश के सभी इस्पात विनिर्माता शामिल होंगे, जिसमें 75-80 प्रतिशत धनराशि द्वितीयक क्षेत्र की कंपनियों के लिए निर्धारित की गई है। इसका उद्देश्य स्वच्छ प्रौद्योगिकियों और वैकल्पिक सामग्रियों के उपयोग को प्रोत्साहित करके इस्पात उत्पादन में कम कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा देना है। उनकी यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत पेरिस समझौते पर हस्ताक्षरकर्ता है और इसका लक्ष्य शुद्ध-शून्य उत्सर्जन वाला देश बनना है।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया बुधवार को 74 पैसे की गिरावट के साथ ही 87.83 पर बंद हुआ। इससे पहले अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में कटौती की संभावना के बीच आज सुबह रुपया डॉलर के मुकाबले 28 पैसे मजबूत होकर 87.81 पर खुला। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय में रुपया मंगलवार को 88.09 से बढ़कर बुधवार को 87.81 पर पहुंच गया। इसके विपरीत, डॉलर सूचकांक 0.11 फीसदी बढ़कर 96.73 पर कारोबार कर रहा था, जो छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की स्थिति दर्शाता है। फेडरल रिजर्व की आगामी घोषणाओं से वैश्विक मुद्रा बाजार में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी हुई है ।

अदाणी पोर्ट्स करेगा 30,000 करोड़ का बड़ा निवेश

– 2030 तक 1 बिलियन टन माल हैंडलिंग का लक्ष्य

मुंबई अदाणी पोर्ट्स और स्पेशल इकोनॉमिक जोन (एपीएसईजेड) अगले दो वर्षों में अपने घरेलू ऑपरेशन को बढ़ाने के लिए लगभग 30,000 करोड़ का निवेश करने जा रहा है। यह निवेश मौजूदा वित्तीय वर्ष के 11,000-12,000 करोड़ रुपए के निवेश से दोगुना होगा। कंपनी का लक्ष्य 2030 तक सालाना 1 बिलियन टन माल संभालना है, जिसमें 850 मिलियन टन भारत के पोर्ट्स से और 140-150 मिलियन टन विदेशी पोर्ट्स से आएगा। वित्त वर्ष 26 में निवेश इस प्रकार होगाः पोर्ट्स में 6,500-7,000करोड़, लॉजिस्टिक्स में 2,300 करोड़, रिन्यूएबल्स में 1,500 करोड़ और मरीन सर्विसेज़ में 700-800 करोड़ खर्च किए जाएंगे। निवेश का बड़ा हिस्सा गुजरात के मुंद्रा, ओडिशा के धमरा और केरल के विजिन्जम पोर्ट्स में बर्थ और टर्मिनल बढ़ाने तथा विजिन्जम ट्रांसशिपमेंट हब के विस्तार में किया जाएगा। विजिन्जम हब ने लॉन्च के नौ महीनों में 1 मिलियन टीईयू से अधिक कंटेनर हैंडल कर लिए हैं। मुंद्रा पोर्ट पर रूसी क्रूड तेल लेकर आया प्रतिबंधित टैंकर स्पार्टनपहुंचा, जिसे एचपीसीएल-मित्तल इनर्जी लि मिटेड के लिए तेल उतारना था। एपीएसईजेड ने 11 तंबर से पश्चिमी देशों के प्रतिबंधित टैंकरों को पोर्ट में प्रवेश से रोक रखा है। वहीं, दूसरा प्रतिबंधित टैंकर नोबल वाकर ने मुंद्रा की जगह वडिनार पोर्ट का रुख किया। पिछले आठ महीनों में मुंद्रा पोर्ट ने रोजाना करीब 1,80,000 बैरल रूसी क्रूड तेल हैंडल किया है।

शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद सेंसेक्स 313, निफ्टी 91 अंक ऊपर आया

मुम्बई

भारतीय शेयर बाजार बुधवार को तेजी के साथ बंद हुए। सप्ताह के तीसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये तेजी दुनिया भर से मिले-जुले संकेतों के बीच भी खरीददारी हावी होने से आई है। आज 30 शेयरों वाला बीएसई बीएसई सेंसेक्स 313.02 अंक बढ़कर 82,693.71 अंकों पर बंद हुआ। इसी तरह 50 शेयरों वाला एनएसई का निफ्टी भी आज 91.15 अंकों की तेजी के साथ ही 25,330.25 अंकों पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस भी बाजार तेजी के साथ बंद हुआ था। आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स की 20 कंपनियों के शेयर बढ़त पर बंद हुए। वहीं इसी तरह निफ्टी 50 की 34 कंपनियों के शेयर ऊपर आकर बंद हुए। वहीं 16 कंपनियों के शेयरों में गिरावट रही। आज सेंसेक्स की कंपनियों में शामिल भारतीय स्टेट बैंक के शेयर सबसे ज्यादा 3.02 फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुए। जबकि, बजाज फिनसर्व के शेयर आज सबसे ज्यादा 0.99 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुए। बीईएल, कोटक महिंद्रा बैंक के शेयरों में उछाल आया। सेंसेक्स की बाकी कंपनियों में आज बीईएल के शेयर 2.36 फीसदी, कोटक महिंद्रा बैंक 1.43 फीसदी, , मारुति सुजुकी 1.35 फीसदी, ट्रेंट 1.21 फीसदी, , अल्ट्राटेक सीमेंट 1.20 फीसदी, , टेक महिंद्रा 1.03 फीसदी, , टीसीएस 0.87 फीसदी, , टाटा मोटर्स 0.77 फीसदी, , इंफोसिस 0.77 फीसदी, , महिंद्रा एंड महिंद्रा 0.76 फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुए। वहीं वहीं दूसरी ओर, टाइटन के शेयर 0.98 फीसदी, , आईटीसी 0.93 फीसदी, , टाटा स्टील 0.44 फीसदी, , पावरग्रिड 0.42 फीसदी, , हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.26 फीसदी, , एचसीएल टेक 0.21फीसदी, , आईसीआईसीआई बैंक 0.20 फीसदी टूटकर बंद हुए। इससे पहले आज सुबह कारोबार की शुरुआत तेजी से हुई। भारत और अमेरिका के बीच ट्रेड डील को लेकर सकारात्मक खबरों ने निवेशकों के सेंटीमेंट को मजबूती दी।

इससे बाजार में लगभग सभी सेक्टरों में खरीदारी देखी गई, खासकर आईटी स्टॉक्स ने बाजार को अच्छा सपोर्ट दिया। सेंसेक्स 82,506.40 अंक पर खुला और शुरुआती कारोबार में 150.49 अंक की तेजी के साथ 82,531.18 पर पहुंच गया। वहीं एनएसई निफ्टी 25,276 पर खुला और जल्द ही 25,300 अंक के पार निकल गया। वहीं एशियाई बाजारों में गिरावट रही, जिसका मुख्य कारण वॉल स्ट्रीट में मंगलवार को आई कमजोरी थी।

जापान का टॉपिक्स 0.53 फीसदी गिर गया, जबकि कोरिया का कोस्पी और ऑस्ट्रेलिया का एएसएक्स 200 क्रमशः 0.94 और 0.63 फीसदी नीचे रहे। निवेशकों की नजर अब अमेरिकी फेडरल रिजर्व की दो दिवसीय बैठक पर टिकी है। अनुमान है कि फेड इस बार ब्याज दरों में कटौती कर सकता है, जो वैश्विक बाजारों के लिए राहत की खबर हो सकती है।

सकरा वर्ल्ड हॉस्पिटल ने बैंगलोर में 50-बेड का नया अस्पताल शुरू किया

इंटरनेशनल नी एंड ऑर्थोपेडिक सेंटर के सहयोग से एचएसआर लेआउट में विश्व-स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएँ मिलेंगी

बेंगलुरु

भारत का पहला 100त्न एफडीआई आधारित अस्पताल, सकरा वर्ल्ड हॉस्पिटल ने इंटरनेशनल नी एंड ऑर्थोपेडिक सेंटर के साथ मिलकर बेंगलुरु के एचएसआर लेआउट में एक अत्याधुनिक मल्टी-स्पेशियलिटी अस्पताल खोला है। इस 50-बेड की नई सुविधा का उद्घाटन कर्नाटक सरकार के मंत्री एम. बी. पाटिल ने किया।इस नए अस्पताल में कई प्रमुख बीमारियों के लिए विशेषज्ञ सेवाएँ उपलब्ध होंगी, जिनमें ऑर्थोपेडिक्स, ऑर्थोस्पाइन, जनरल सर्जरी, कार्डियक सर्जरी, यूरोलॉजी, प्लास्टिक सर्जरी और न्यूरोसर्जरी शामिल हैं। यह पहल रोगी-केंद्रित देखभाल, उन्नत तकनीक और नैदानिक उत्कृष्टता को मिलाकर स्वास्थ्य सेवाओं को एक नई ऊँचाई पर ले जाएगी।उद्घाटन के दौरान, मंत्री एम. बी. पाटिल ने कहा, यह अत्याधुनिक संस्थान जोड़ों और रीढ़ की बीमारियों के उपचार में क्रांतिकारी साबित होगा। स्वस्थ नागरिक ही मजबूत परिवार और समृद्ध समाज का निर्माण करते हैं।सकरा वर्ल्ड हॉस्पिटल के प्रबंध निदेशक युइची नागानो ने कहा कि इंटरनेशनल नी एंड ऑर्थोपेडिक सेंटर के साथ यह सहयोग अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक नई शुरुआत है। उन्होंने कहा, हमारी विशेषज्ञता और उन्नत तकनीकों को समुदाय तक पहुँचाकर हम समय पर उपचार और बेहतर परिणाम सुनिश्चित करेंगे।

ग्रुप सीओओ लवकेश फासू ने बताया कि यह सुविधा रोगियों को केंद्र में रखकर बनाई गई है। हमारा उद्देश्य एक ऐसा स्वास्थ्य तंत्र बनाना है जो आधुनिक, उत्तरदायी और प्रगतिशील हो। वहीं, डॉ. चंद्रशेखर पी. ने कहा कि यह साझेदारी दो प्रतिष्ठित संस्थानों की शक्तियों को एक ही छत के नीचे लाएगी, जिससे एचएसआर लेआउट के निवासियों की बढ़ती स्वास्थ्य ज़रूरतों को पूरा किया जा सकेगा।यह नई सुविधा, अपने आधुनिक बुनियादी ढांचे, अनुभवी डॉक्टरों की टीम और 24×7 सहायक सेवाओं के साथ बनने जा रही है।

इस्पात उद्योग को कार्बन-मुक्त करने योजना लाएगी सरकारः सचिव

नई दिल्ली सचिव संदीप पौंड्रिक ने बुधवार को कहा कि सरकार स्वच्छ इस्पात निर्माण प्रौद्योगिकी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए 5,000 करोड़ रुपये की योजना पर काम कर रही है। मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी ने राष्ट्रीय राजधानी में 'एफटी लाइव एनर्जी ट्रांजिशन समिट इंडिया' के दौरान यह बात कही।

उन्होंने कहो कि सतत इस्पात के लिए राष्ट्रीय मिशन का प्रस्ताव विचाराधीन है। यह 5,000 करोड़ रुपये की योजना है। पौंड्रिक ने कहा कि इस योजना में देश के सभी इस्पात विनिर्माता शामिल होंगे, जिसमें 75-80 प्रतिशत धनराशि द्वितीयक क्षेत्र की कंपनियों के लिए निर्धारित की गई है। इसका उद्देश्य स्वच्छ प्रौद्योगिकियों और वैकल्पिक सामग्रियों के उपयोग को प्रोत्साहित करके इस्पात उत्पादन में कम कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा देना है। उनकी यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत पेरिस समझौते पर हस्ताक्षरकर्ता है और इसका लक्ष्य शुद्ध-शून्य उत्सर्जन वाला देश बनना है।

क्या इथेनॉल मिले पेट्रोल से गाड़ी खराब होती है? या पेट्रोल लॉबी वाहन मालिकों को डरा रही है?

नीरज कुमार दुबे

इथेनॉल क्यों जरूरी है। यदि इस पर चर्चा करें तो आपको बता दें कि भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का लगभग 88% कच्चा तेल आयात करता है। इससे न सिर्फ खजाने पर भारी बोझ पड़ता है बल्कि वैश्विक कीमतों में उतार-चढ़ाव का भी सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।

भारत की ऊर्जा नीति आज एक ऐसे निर्णायक मोड़ पर खड़ी है जहाँ जैव-ईंधन (बायोफ्यूल) न सिर्फ प्रदूषण कम करने का विकल्प है, बल्कि यह आयात पर निर्भरता घटाकर देश की ऊर्जा सुरक्षा को भी मजबूत कर सकता है। सरकार द्वारा पेट्रोल में 20% इथेनॉल मिश्रण (ए-20) लागू किए जाने के बाद यह बहस और तेज हो गई है कि क्या यह कदम व्यावहारिक और सुरक्षित है। इसी संदर्भ में पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने उन दावों को 'बकवास' करार दिया है जिनमें कहा गया था कि इथेनॉल मिश्रण से वाहनों के इंजन को नुकसान होता है।

इथेनॉल क्यों जरूरी है। यदि इस पर चर्चा करें तो आपको बता दें कि भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का लगभग 88% कच्चा तेल आयात करता है। इससे न सिर्फ खजाने पर भारी बोझ पड़ता है बल्कि वैश्विक कीमतों में उतार-चढ़ाव का भी सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसे में गन्ना, मक्का और अन्य अनाज से बनने वाला इथेनॉल एक सस्ता, घरेलू और पर्यावरण-अनुकूल विकल्प है। हम आपको बता दें कि 2014 में जहाँ पेट्रोल में इथेनॉल की हिस्सेदारी मात्र 1.4% थी, वहीं आज यह बढ़कर 20% तक पहुँच गई है। यह उपलब्धि आत्मनिर्भर भारत और हरित ऊर्जा संक्रमण (Green Transition) की दिशा में एक बड़ा कदम है।

हम आपको बता दें कि केपीएमजी के वार्षिक सम्मेलन एनरिच 2025 में बोलते हुए केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि इथेनॉल से इंजन खराब होने की सारी बातें 'बीएस' हैं– यानी बकवास हैं। उन्होंने साफ किया कि केवल पुराने वाहनों में कुछ रबर के पुर्जे. और गैस्केट बदलने की आवश्यकता हो सकती है, पर तकनीकी रूप से यह कोई बड़ी चुनौती नहीं है। ब्राजील जैसे देशों के अनुभव भी यही साबित करते हैं कि इथेनॉल मिश्रण न केवल सुरक्षित है बल्कि टिकाऊ विकल्प है।

हम आपको यह भी बता दें कि इस बहस का दूसरा पहलू है राजनीति। पिछले दिनों में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री

नितिन गडकरी पर आरोप लगाए गए कि उनकी परिवार-नियंत्रित कंपनी Cian Agro को इथेनॉल नीति से भारी लाभ हुआ है। कांग्रेस और कुछ सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसरों ने दावा किया कि कंपनी का टर्नओवर एक साल में रू. 18 करोड़ से रू.723 करोड़ तक पहुँच गया। गडकरी ने इसे 'राजनीतिक रूप से प्रेरित पेड कैंपेन' बताया। उनका कहना है कि इथेनॉल से जुड़े टेंडर और मूल्य निर्धारण का फैसला कैबिनेट स्तर पर होता है, न कि व्यक्तिगत मंत्रियों द्वारा। उन्होंने कहा कि देश में 450-500 इथेनॉल उत्पादक कंपनियाँ हैं, जिनमें उनकी कंपनी की हिस्सेदारी 0.5% से भी कम है। उन्होंने कहा कि इथेनॉल उत्पादन नीति उनकी कंपनी के सक्रिय होने से पहले ही लागू हो चुकी थी।

हम आपको बता दें कि गडकरी लंबे समय से वैकल्पिक ईंधन, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और हरित परिवहन व्यवस्था के समर्थक रहे हैं। इसलिए उनका इथेनॉल के पक्ष में बोलना उनके पुराने दृष्टिकोण के अनुरूप है। लेकिन उनकी स्वतंत्र छवि और लोकप्रियता के कारण वे विरोधियों के निशाने पर भी रहते हैं।

देखा जाये तो असल टकराव की जड़ है पेट्रोल लॉबी, जिसमें आयातक, रिफाइनर और बहुराष्ट्रीय तेल कंपनियाँ शामिल हैं, यह इथेनॉल को अपने लिए सीधा खतरा मान रही हैं। इथेनॉल के बढ़ते उपयोग का मतलब है कि पेट्रोल की खपत में कमी और कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता घटेगी। यह उन समूहों के हितों पर सीधा आघात है, जिन्होंने दशकों तक तेल आयात से मुनाफा कमाया है। इसी कारण से यह लॉबी सोशल मीडिया पर यह नैरेटिव गढ़ रही है कि इथेनॉल मिश्रण से वाहनों का माइलेज घटेगा और इंजन खराब होगा। हालाँकि मंत्रालय ने पहले ही साफ किया है कि ई-20 पेट्रोल से माइलेज में केवल 1-2% (चारपहिया वाहनों) और 3-6% (दोपहिया/अन्य वाहनों) की कमी आती है, जो नगण्य है।

हम आपको यह भी बता दें कि हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने भी इथेनॉल मिश्रण पर दायर याचिका को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि इस नीति में कोई गंभीर तकनीकी या कानूनी बाधा नहीं है। इससे सरकार को एक बड़ी राहत मिली और यह स्पष्ट हो गया कि नीति सही दिशा में है। दरअसल यह विवाद तकनीकी से अधिक राजनीतिक है। विपक्षी दलों के लिए गडकरी को निशाना बनाना सरकार की ऊर्जा नीति पर प्रश्नचिन्ह लगाने का आसान तरीका है। सोशल मीडिया पर चलाए गए पेड कैंपेन का मकसद था जनता के बीच भ्रम फैलाना और यह आभास देना कि इथेनॉल मिश्रण नीति कुछ व्यक्तियों के निजी लाभ के लिए लाई गई है। जबकि वास्तविकता यह है कि इथेनॉल मिश्रण नीति का लाभ किसानों, उपभोक्ताओं और देश की ऊर्जा सुरक्षा– सभी को होगा।

बहरहाल, भारत की ऊर्जा मांग अगले दो दशकों में दुनिया की औसत दर से तीन गुना बढ़ने वाली है और वैश्विक मांग में 25% बढ़ोतरी अकेले भारत से होगी। ऐसे में महंगे आयात पर निर्भर रहना आत्मघाती है। इथेनॉल भले ही संपूर्ण समाधान न हो, लेकिन यह भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक अहम ईंट है। इसके अलावा, हरदीप पुरी और नितिन गडकरी के स्पष्ट रुख यह संदेश देते हैं कि सरकार पीछे हटने वाली नहीं है। असली चुनौती यह है कि क्या भारत राजनीतिक हमलों और पेट्रोल लॉबी के दबाव से अपने ऊर्जा परिवर्तन कार्यक्रम को बचा पाएगा। यदि हाँ, तो इथेनॉल केवल एक ईंधन नहीं बल्कि भारत की ऊर्जा स्वतंत्रता का प्रतीक बन सकता है।

संपादकीय

सुप्रीम कोर्ट का इनकार

सुप्रीम कोर्ट ने आखिर, अपने अंतरिम आदेश में पूरे वक्फ संशोधन अधिनियम, 2025 पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। परंतु अदालत के समक्ष प्रस्तुत याचिकाओं में जिन प्रावधानों को लेकर आपत्तियां थीं, उन पर रोक जरूर लगा दी। गौरतलब है कि शीर्ष अदालत द्वारा मई के अंत में यह फैसला सुरक्षित रख लिया गया था। सरकार का मत है कि नया कानून वक्फ बोडरे में सुधार और पारदर्शिता निश्चित करने वाला है। परंतु इस संशोधन को असंवैधानिक बताने और मुसलमानों की संपत्ति हड़पने की मंशा रखने वाला बताने वालों ने सौ से ज्यादा लोगों ने याचिकाएं लगाई थीं। अदालत के अनुसार केंद्रीय वक्फ काउंसिल में चार से अधिक सदस्यों की संख्या नहीं हो सकती जबकि राज्य के बोर्ड में तीन सदस्य होंगे। जिलाधिकारी को घोषित वक्फ संपत्ति के सरकारी होने न होने के विषय में तय करने का अधिकार भी नहीं होगा। इस कानून का विरोध करने वालों को सबसे ज्यादा आपत्ति जिलाधिकारियों को दिए गए इसी अधिकार को लेकर थी जिसके अनुसार डीएम वक्फ के दावे वाली सरकारी जमीन के बारे में मसौदा सरकार को भेज सकता है, जिसे सरकार द्वारा स्वीकार करने के उपरांत राजस्व रिकॉर्ड में वह भूमि या संपत्ति सरकारी के तौर पर दर्ज की जा सकेगी। काउंसिल के दो गैर-मुसलमानों और महिला सदस्यों को लेने पर भी मुसलमानों को आपत्ति रही है। जैसा कि माना जाता है यह संपत्ति अल्लाह के नाम पर या धार्मिक/परोपकार के मकसद से दान की जाती है। धर्मस्थलों की आड़ में सरकारी या लंबे अरसे से खाली पड़ी जमीनों पर अतिक्रमण की घटनाएं देश में न अनूठी हैं, न ही नई। इस सरकार का वक्फ या मस्जिदों को निशाने पर रखने का मकसद किसी से छिपा नहीं है। वक्फ की संपत्ति की खरीद-फरोख्त नहीं होती, न ही इसका हस्तांतरण होता है। देश भर में वक्फ बोर्ड के पास तकरीबन पौने नौ लाख संपत्तियां बताई जाती हैं जिनकी कीमत एक लाख करोड़ रुपये से अधिक आंकी गई है। यह सरकारी लापरवाही और वोटों के लोभ में समुदाय विशेष को दिए गए संरक्षण का ही नतीजा है जो सरकारी संपत्तियों या भूमि पर अवैध कब्जा होता रहता है। सरकार को भी इसकी कीमत चुकानी होगी। विशेष धर्म के आधार पर कोई कानून बनाने की बजाय निष्पक्ष कानून बनाए जिसकी जद में हर धर्म आता हो। कहना होगा कि अतिक्रमणों को मुक्त कराने के प्रति राज्य सरकारों को मुस्तैद होना ही चाहिए।

चिंतन-मनन

आत्मा का दिव्य भाव

जो व्यक्ति दिव्य पद पर स्थित है, वह न किसी से ईष्या करता है और न किसी वस्तु के लिए लालायित रहता है। जब कोई जीव इस संसार में भौतिक शरीर से युक्त होकर रहता है, तो समझना चाहिए कि वह प्रकृति के तीन गुणों में से छूट जाता है। लेकिन जब तक वह शरीर से बाहर नहीं आ जाता, तब तक उसे उदासीन रहना चाहिए। उसे भगवान की भक्ति में लग जाना चाहिए जिससे भौतिक देह से उसका ममत्व स्वतः विस्मृत हो जाए। जब मनुष्य भौतिक शरीर के प्रति सचेत रहता है तो वह केवल इन्द्रियतृप्ति के लिए कर्म करता है, लेकिन जब चेतना कृष्ण में स्थानान्तरित कर देता है, तो इन्द्रियतृप्ति स्वतः रुक जाती है। मनुष्य को इस भौतिक शरीर की आवश्यकता नहीं रह जाती है और न उसे भौतिक शरीर के आदेशों के पालन की आवश्यकता रह जाती है। शरीर के भौतिक गुण कार्य करेंगे, लेकिन आत्मा ऐसे कार्य से पृथक रहेगी। वह न तो शरीर का भोग करना चाहती है, न उससे बाहर जाना चाहती है। इस प्रकार दिव्य पद पर स्थित भक्त स्वयमेव मुक्त हो जाता है। उसे प्रकृति के गुणों के प्रभाव से मुक्त होने के लिए किसी प्रयास की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। भौतिक पद पर स्थित व्यक्ति शरीर को मिलने वाले तथाकथित मान-अपमान से प्रभावित होता है, लेकिन दिव्य पद पर आसीन व्यक्ति ऐसे मिथ्या मान-अपमान से प्रभावित नहीं होता। वह इसकी चिन्ता नहीं करता कि कोई व्यक्ति उसका सम्मान करता है या अपमान। वह उन बातों को स्वीकार कर लेता है, जो कृष्णभावनामृत में उसके कर्त्तव्य के अनुकूल हैं, अन्यथा उसे किसी भौतिक वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती। वह प्रत्येक व्यक्ति को जो कृष्णभावनामृत के सम्पादन में उसकी सहायता करता है, मित्र मानता है और तथाकथित शत्रु से भी घृणा नहीं करता। वह समभाव वाला होता है और सारी वस्तुओं को समान धरातल पर देखता है, क्योंकि वह इसे भलीभांति जानता है कि उसे इस संसार से कुछ लेना-देना नहीं है।

सत्ता की चाभी रखनेवाले सीमांचल में मोदी का मिशन बिहार

कुमार कृष्णन

बिहार में चुनाव तारीखों की घोषणा से पहले राज्य में सियासी सरगर्मियां पूरे परवान पर है।सियासी दलों में मंथन का दौर जारी है।दूसरी ओर सत्तासीन एनडीए गठबंधन एक-एक कर आपने वादों को पूरा करने में जुटी है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार में चौथे एयरपोर्ट का उद्घाटन किया ।इसके साथ ही उन्होंने कई अन्य विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया।

प्रधानमंत्री मोदी के इस दौरे से सीमांचल के विकास को नई रफ्तार तो मिलेगी ही साथ ही राज्य के सत्ता की चाभी रखने वाले सीमांचल में एनडीए भी मजबूत होगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का दौरा उनके लिए चुनावी ही सही पर सीमांचल के विकास को गति भी दे गए। विपक्ष की असफलता पर भी साधा निशाना तो डबल इंजन की सरकार की ओर से बहाई गई विकास की गंगा को भी बताने से नहीं चुके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूर्णिया की यात्रा के साथ सीमांचल के विकास में गति लाने का जो वादा किया उसके कई आयाम का आज शिलान्यास हुआ तो कही लोकार्पण भी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्णिया की धरती से घुसपैठिए को ललकारते कहा कि बिहार में एक भी घुसपैठिया नहीं रहेगा। ये कांग्रेस और राजद वाले लोग घुसपैठिए को बचाने में लगे हैं। ये लोग बेशर्मी की हद भी पार कर चुके हैं। ये राजद और कांग्रेस वाले लोग देश की सुरक्षा और सम्मान को भी दाव पर लगा दे रहे हैं। ये राजद और कांग्रेस वाले जितना कर ले पर यह मोदी की गारंटी है कि यहां जो भी घुसपैठिए हैं उन्हें बाहर जाना ही पड़ेगा। जो नेता बचाव कर रहे हैं उन्हें चुनौती दे रहूंगा कि आप घुसपैठिए को बचाने की जितनी कोशिश कर लें पर यह में होने नहीं दूंगा। ये राजद और कांग्रेस वाले लोग घुसपैठिए की ढाल बने हुए है। ये लोग चाहे जितना जोर लगा लें, लेकिन एक भी घुसपैठिए को बिहार में रहने नहीं दिया जाएगा। घुसपैठिए के सवाल पर सरकार कार्रवाई भी करेगी। और देश में इसके परिणाम अच्छे रहेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज राजद और कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। पीएम मोदी ने कहा कि राजद और कांग्रेस वालों के कारण बिहार के सम्मान और बिहार के पहचान की भी खतरा है। ये वही कांग्रेस है जिनके लोग बिहार की तुलना बीडी से करते हैं। बिहार की डबल इंजन की सरकार निरंतर विकास के कार्यों से बिहार को समृद्ध करने में लगी है। किसानों के हित का ख्याल रखा। आज मखाना को जीआई टैग किस सरकार की देन है। 90 दशक की सरकार के समय बिहार से बाहर मखाना के बारे में कोई जानता था क्या? लेकिन नीतीश कुमार के शासन में किसानों के आय बढ़ाने का काम किया गया। बिहार की जनता से वादा किया था कि मखाना बोर्ड का गठन करेंगे। कर दिखाया न। पर पिछली सरकार को प्रगति रास नहीं आ रही थी। तब की सरकार किसानों का शोषण किया। बिहार की मिट्टी को धोखा दिया। आज वही बिहार अफ्रीका को रेल इंजन सप्लाई कर रहा है। दरअसल पिछली सरकार को अपनी तिजोरी भरना था। इसलिए जनता के लिए क्यों सोचते? ये लोग लालटेन जला कर हाथ से पैसा बटोरने में लगे थे। इनकी चिंता में बिहार नहीं अपना परिवार का विकास था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्णिया की जनसभा से 40000 करोड़ रुपए की परियोजनाओं को पूर्णिया की जनता के हवाले किया पीएम मोदी करीब 46 करोड़ की लागत से बने पूर्णिया एयरपोर्ट के टर्मिनल भवन का उद्घाटन कर काफी राहत पहुंचाई। पीएम मोदी 40,000 से अधिक लाभार्थियों को पक्का घर सौंपा। प्रधानमंत्री मोदी अररिया-गलगलिया रेलखंड पर ट्रेन को हरी झंडी दिखा कर जनता का भरोसा रखा। जोगबनी-दानापुर वंदे भारत एक्सप्रेस, सहरसा-छेहरटा (अमृतसर) अमृत भारत एक्सप्रेस और अमृत भारत एक्सप्रेस को भी रवाना किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज धर्म का पहिया घुमाते आधी आबादी का भी ख्याल रखा। दिवाली,छठ के पहले पीएम मोदी ने जीएसटी कम करने की बात कर आधी आबादी पर भी निशाना साधा। प्रधानमंत्री ने इस दौरान घोषणा भी की रसोई में इस्तेमाल होने वाले सामान पर जीएसटी कम करने की बात की। इस से महिलाओं के पर्स का बोझ हल्का होगा मसाले, सर्फ,साबुन,मंजन,पेस्ट आदि सस्ते होंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्णिया दौरे पर यहां के एयरपोर्ट का उद्घाटन किया। इसके साथ ही पूर्णिया हवाई मार्ग के जरिए देश के अन्य हिस्सों से जुड़ गया है। पूर्णिया एयरपोर्ट शुरू होने का क्रेडिट स्थानीय सांसद पप्पू यादव भी ले रहे हैं। पप्पू यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट लिखा- प्रणाम पूर्णिया, पूर्णिया के लिए चुनाव पूर्व लिया, हर संकल्प को ससमय पूर्ण करना परम लक्ष्य!आज से पूर्णिया आसमान में उड़ान भरेगा, विकास की नई गाथा रचेगा। बीस साल दूर था एक वर्ष तीन माह में सेवा समर्पण से समग्र प्रगति का समुचित प्रयास किया। यह अनवरत निरंतर जारी रहेगा। प्रणाम पूर्णिया सलाम पूर्णिया जोहार पूर्णिया! पूर्णिया लोकसभा क्षेत्र सीमांचल कोसी क्षेत्र को प्रगति पथ पर आगे लाकर देश में सर्वश्रेष्ठ बनाना है।

वहीं दूसरी तरफ सीएम नीतीश कुमार और पीएम मोदी के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन के तमाम नेता इसे अपनी उपलब्धि बता रहे हैं। बता दें कि 17 सितंबर से इंडिगो की फ्लाइट सेवा पूर्णिया से शुरू हो जाएगी। 68 करोड़ की लागत से बने पूर्णिया एयरपोर्ट का उद्घाटन खुद प्रधानमंत्री मोदी ने फीता काटकर किया।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए पूर्णिया में सजाए गए मंच पर पूर्णिया के निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव की मौजूदगी सबका ध्यान खींचती रही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंच पर तमाम एनडीए नेताओं के लिए कुर्सियां लगाई गई। उनमें एक सीट पूर्णिया सांसद पप्पू यादव के लिए भी लगाई गई। खासकर सोशल मीडिया पर यह तस्वीर सामने आने के बाद लोग इसपर तमाम सवाल उठा रहे हैं। लोग अपने अपने हिसाब से अनुमान भी लगा रहे हैं। पप्पू यादव भले ही निर्दलीय सासंद हैं, लेकिन वह तमाम सार्वजनिक मंचों से खुद को राहुल गांधी और प्रियंका गांधी का सिपाही बताते रहते हैं। गांधी परिवार भी पप्पू यादव को उतनी ही तवज्जो दे रही है। हाल ही में दिल्ली बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर बुलाई गई कांग्रेस नेताओं की बैठक में पप्पू यादव को भी बुलाया गया था। राहुल गांधी की ओर से निकाली गई वोट अधिकार यात्रा के दौरान भी पप्पू यादव को तेजस्वी यादव और राहुल गांधी के साथ कई मौकों पर गाड़ी पर जगह दी गई थी।

बिहार बीजेपी नेताओं से जब पप्पू यादव को लेकर सवाल पूछा गया तो उन्होंने इसको लेकर तर्क दिया है। बीजेपी नेताओं ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह कोई चुनावी रैली नहीं है। पीएम मोदी बतौर देश के नेता बिहार को सौगातें देने आए हैं। सरकारी कार्यक्रम होने के चलते बतौर स्थानी सांसद पप्पू यादव को मंच पर जगह दी गई है।

बिहार के सीमांचल में चार जिले कटिहार, पूर्णिया, अररिया और किशनगंज आता है। माना जाता है कि इन जिलों की कुल 24 विधानसभा सीटें हर चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। सीमांचल में भाजपा की राह कभी आसान नहीं रहती है, फिर चाहे लोकसभा का चुनाव हो या विधानसभा का। सीमांचल में भाजपा अपनी उम्मीदों के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाती है।

2015 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार के नेतृत्व में महागठबंधन ने यहां शानदार प्रदर्शन किया था, जिसमें राजद को 9, जेडीयू को 5 और कांग्रेस को भी 5 सीटें मिली थीं। भाजपा सीमांचल मे केवल 5 सीटों तक ही सिमट गई थी।

2020 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने पिछली बार से तीन सीटें ज्यादा जीती थीं। भाजपा ने कुल 8 सीटें जीती थीं। इसकी एक वजह नीतीश कुमार का भाजपा का साथ होना बताया गया। जबकि कांग्रेस को 5, जेडीयू को 4, और आरजेडी को 1 सीट मिली थी। एआईएमआईएम ने 5 सीटें जीतकर सबको चौंका दिया, हालांकि बाद में उसके चार विधायक राजद में शामिल हो गए। एक साल पहले 2024 के लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को सीमांचल की 4 लोकसभा सीटों में से सिर्फ अररिया सीट पर ही जीत मिली थी। किशनगंज और कटिहार कांग्रेस के खाते में गईं, जबकि पूर्णिया की सीट निर्दलीय प्रत्याशी पप्पू यादव ने जीती थी। सीमांचल क्षेत्र में मुस्लिम वोटों की दिशा ही चुनाव का रुख तय करती है। किशनगंज में 68 फीसदी, अररिया में 43 फीसदी, कटिहार में 45 फीसदी और पूर्णिया मे 39 प्रतिशत मुस्लिम है। इस क्षेत्र में लंबे समय से कांग्रेस और राजद की मजबूत पकड़ रही है। लेकिन, 2020 के चुनाव में एआईएमआईएम की एंट्री ने समीकरण बदल दिए। ओवैसी की पार्टी ने मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण किया, जिसका अप्रत्यक्ष लाभ भाजपा को मिला।

भारत-पाक मैच : हैंडशेक बटोर गया सुर्खियां

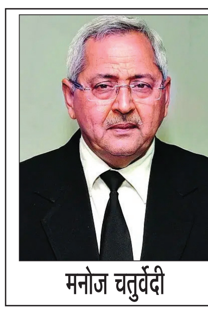

मनोज चतुर्वेदी

भारत-पाकिस्तान के बीच क्रिकेट एशिया कप मुकाबले में न तो बहले जैसा रोमांच दिखा और न ही दीवानगी दिखी।

वहीं मैच में भारत के सात विकेट से जीत के दौरान कप्तान सूर्यकुमार यादव, ओपनर अभिषेक शर्मा और चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव के प्रदर्शन के मुकाबले मैच में दोनों टीमों का हाथ नहीं मिलाना ज्यादा सुर्खियां पा गया। एकतरफा हार से बुरी तरह हताश पाकिस्तान टीम ने हाथ नहीं मिलाने के मुद्दे को एशिया कप के बायकाट की धमकी तक पहुंचा दिया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इस आईसीसी से शिकायत करते हुए कहा है कि मैच रेफरी एंडी पायक्राफ्ट को नहीं हटाया तो वह एशिया कप से हट जाएगा।

पीसीबी के चेयरमैन मोहसिन नकवी, जो एशियाई क्रिकेट काउंसिल के भी अध्यक्ष हैं, ने एक्स पर पोस्ट डाल कर इस शिकायत की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि पीसीबी ने क्रिकेट की भावना से जुड़े एमसीसी के नियम और आईसीसी की आचार संहिता के उल्लंघन को लेकर मैच रेफरी के खिलाफ दर्ज शिकायत में मैच रेफरी को तत्काल प्रभाव से हटाने की मांग की है। पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार मांग नहीं माने जाने पर पाकिस्तान चैंपियनशिप से हट सकता है। खबरों के मुताबिक पायक्राफ्ट टॉस से पहले पाकिस्तान के कप्तान सलमान आगा को एकतरफ ले गए और कहा कि दोनों कप्तानों के बीच हैंडशेक नहीं होगा। यह भी कहा गया कि मैच के बाद पाकिस्तान टीम कुछ दूरी तक भारतीय ड्रेसिंग रूम की तरफ गई पर कोई जवाबी प्रतिक्रिया न देख कर लौटगई। पीसीबी के अनुसार टीम मैनेजर नवेद चीमा ने भारतीय खिलाड़ियों के खेल भावना के विपरीत व्यवहार की शिकायत की है।

आइसीसी के पाकिस्तान की शिकायत पर झुकने की संभावना नहीं है। इसकी वजह है कि रूल में हाथ मिलाने को लेकर खास निर्देश नहीं है। यह असल में नियम न होकर परंपरा मात्र है। वैसे भी खेलों में इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं। साल 2023 के विम्बलडन में ही यूक्रेन की एलिना स्वितोलिना ने बेलारूस की विक्टोरिया अजारेंका से खेलते समय यह कहते हुए हाथ मिलाने से इंकार कर दिया था कि उनके देश ने हमारे देश पर हमला किया है। आयोजकों ने इस घटना पर कोई कार्रवाई नहीं की थी। पाकिस्तान को अपना मैच 17 सितम्बर को यूएई से खेलना है। पाकिस्तान यदि इस मैच में नहीं खेलता है तो उसके सुपर फोर में पहुंचने की सारी संभावनाएं खत्म हो जाएंगी। इसकी वजह यह है कि यूएई ओमान से मैच जीत चुका है, और पाकिस्तान नहीं खेलता है तो उसके चार अंक हो जाएंगे और वह सुपर फोर में पहुंच जाएगी। इसलिए यह तय है कि अगले 24 घंटे में पाकिस्तान को लेकर सारी स्थितियां स्पष्ट हो जानी हैं। सभी जानते हैं कि कुछ दिनों पहले पहलगाम में पाकिस्तान पोषित आतंकियों ने हमला करके निदरेषों को मार दिया था। इसे ध्यान में रखकर ही पाकिस्तान से मैच खेलने का विरोध किया जा रहा था पर सरकार की नीति है कि आईसीसी टूनार्मेंटों में भारत और पाकिस्तान खेल सकते हैं। भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने मैच के बाद कहा कि टीम ने मिल कर हाथ नहीं मिलाने का फैसला किया था। यह कदम पहलगाम आतंकी हमले में शहीद 26 निदरेषों के परिवारों के साथ एकजुटता दिखाने वाला कदम है। उन्होंने कहा कि कुछ बातें खेल भावना से ऊपर होती हैं। हम अपने सशस्त्र बलोंऔर उनके परिवारों के साथ खड़े हैं।

पाकिस्तान खेलने का फैसला करता है तो इस स्थिति का एक या दो बार सामना करना पड़ सकता है। पर भारत यदि इस ट्रॉफी को जीतता है तो उसके सामने भी परीक्षा की घड़ी आनी है। एशियाई क्रिकेट काउंसिल के अध्यक्ष होने के नाते मोहसिन नकवी विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान करेंगे। उस सूरत में देखने वाली बात होगी कि भारत उनके हाथों से ट्रॉफी लेता है, या नहीं। जहां तक बात पाकिस्तान के साथ मुकाबले की है तो उसमें बिल्कुल दम नजर नहीं आया। सही है कि दोनों ने युवा खिलाड़ियों की टीम उतारी हैं पर भारतीय टीम पिछले एक-डेढ़ साल में एकजुट हो गई है। वहीं पाकिस्तान की युवा टीम में ढेरों खामियां नजर आई। पाकिस्तान के उच्च क्रम के बल्लेबाज स्पिन खेलने में बौने साबित हुए।

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान वसीम अकरम का कहना है कि पाकिस्तानी बल्लेबाज कुलदीप यादव को पढ़ ही नहीं सके और उन्होंने पारी ढहाने में अहम भूमिका

निभाई। इस मुकाबले के बारे में पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली की टिप्पणी स्थिति का किसी हद तक सही बयान करती है। गांगुली ने कहा,..सबसे महत्त्वपूर्ण आतंक रुकना चाहिए, सिर्फ भारत और पाकिस्तान में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में। पर खेल कतई नहीं रुकने चाहिए। सही स्थिति यह है कि दोनों टीमों के बीच कोई मुकाबला ही नहीं था। मैं भारत-पाक मुकाबले की बजाय भारत के ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड और श्रीलंका ही नहीं अफगानिस्तान के साथ मुकाबले को देखना पसंद करूंगा। मुझे नहीं लगता कि भारत और पाकिस्तान मुकाबले में कोई दिलचस्पी बची है। हम पिछले पांच सालों से इस मुकाबले की हाइप जरूर बनाते हैं पर हर बार टांय टांय फिस्स जरूर हो रही है। अब यह मुकाबला वनवे ट्रैफिक हो गया है।

(लेख में विचार निजी हैं)

संक्षिप्त समाचार

म्यांमार में बोर्डिंग स्कूल के 19 छात्र सैन्य हवाई युद्ध में मरे

नाएप्यीडॉ, एजेंसी। एक जातीय मिलिशिया (अराकान आर्मी) की तरफ से जारी बयान के मुताबिक पिछले हफ्ते एक बोर्डिंग स्कूल पर म्यांमार की सेना के हवाई हमले में - 19 छात्र मारे गए। मृतकों की उम्र 15 से 21 वर्ष थी। संयुक्त राष्ट्र की बाल एजेंसी यूनिसेफ ने भी कहा कि म्यांमार के अशांत रखाइन प्रांत के क्याउक्तॉ टाउनशिप स्थित बोर्डिंग स्कूल में बच्चे मारे गए और घायल हुए। उसने मृतक संख्या नहीं बताई। बता दें, म्यांमार की सत्तारूढ़ सेना ने दिसंबर में प्रस्तावित चुनाव से पहले नियंत्रण अभियान तेज कर दिया है। यूनिसेफ ने कहा, यह हमला रखाइन प्रांत में बढ़ती विनाशकारी हिंसा की प्रवृत्ति को और बढ़ाता है, जिसकी अंतिम कीमत बच्चों और परिवारों को चुकानी पड़ रही है। राष्ट्रीय एकता सरकार ने कहा कि पिछले महीने सेना द्वारा देश भर में किए गए लगभग 500 हवाई हमलों में 40 से ज्यादा बच्चे मारे गए और 15 स्कूल प्रभावित हुए। बांग्लादेश की सीमा से लगे रखाइन प्रांत में सेना और तटीय क्षेत्र के लिए अधिक स्वायत्ता की मांग करने वाली अराकान आर्मी के बीच महीनों से भीषण लड़ाई चल रही है। यह लंबे समय से म्यांमार का सबसे अशांत राज्य रहा है।

मस्क की स्टारलिंक सेवा रुकने से यूक्रेनी अग्रिम पंक्ति प्रभावित

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी अरबपति और इंटरनेट सेवा प्रदाता स्टारलिंक के मालिक एलन मस्क की सैटेलाइट इंटरनेट सेवा स्टारलिंक सेवा सोमवार को कुछ देर तक बाधित होने के बाद फिर चालू हो गई। ट्रैकिंग वेबसाइट डाउनडिटेक्टर के मुताबिक, दोपहर बाद अधिकांश उपयोगकर्ताओं के लिए यह चालू हो गई। 12-35 बजे तक अमेरिका में 43,000 से ज्यादा यूजर्स प्रभावित हुए। इस बाधा ने रूस के साथ चल रहे युद्ध में यूक्रेन की अग्रिम पंक्ति को भी प्रभावित किया। यूक्रेन के ड्रोन बलों के कमांडर रॉबर्ट ब्रोवडी ने बताया कि स्टारलिंक की रुकावट ने सुबह 7-28 बजे से रूस के साथ युद्ध की पूरी अग्रिम पंक्ति पर असर डाला। इससे यूक्रेनी सेनाओं के युद्ध संचार व ड्रोन अभियान प्रभावित हुए।

ब्रिटेन में चीन के लिए जासूसी का आरोप झेल रहे दो लोगों पर से केस हटा

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन में चीन के लिए जासूसी के आरोप में गिरफ्तार किए गए दो लोगों के खिलाफ चल रहे आपराधिक केस को अब बंद कर दिया गया है। अभियोजन पक्ष ने कहा है कि उनके पास पर्याप्त सबूत नहीं हैं, इसलिए अब दोनों आरोपियों पर मुकदमा नहीं चलेगा। इन दो लोगों में एक हैं क्रिस्टोफर कैश जो ब्रिटिश संसद में शोधकर्ता थे और चाइना रिसर्च ग्रुप का नेतृत्व करते थे। दूसरे हैं क्रिस्टोफर बेरी, जो ऑक्सफोर्डशायर में एक अकादमिक (शिक्षाविद) हैं और 2015 से चीन में पढ़ा चुके हैं। इन दोनों पर अप्रैल 2024 में केस दर्ज हुआ था। आरोप था कि इन्होंने 2021 के अंत से लेकर फरवरी 2023 के बीच ऐसी जानकारी या दस्तावेज दिए जो ब्रिटेन की सुरक्षा के खिलाफ और दुश्मन के लिए फायदेमंद हो सकते थे। आरोप था कि इन दोनों एक-दूसरे और एक संदिग्ध चीनी खुफिया एजेंट के संपर्क में थे। इनका ट्रायल अगले महीने लंदन के केंद्रीय आपराधिक न्यायालय में शुरू होने वाला था, जो लगभग छह हफ्ते चलता। लेकिन अब केस को सबूतों की कमी के चलते बंद कर दिया गया है।

फ्री नॉर्थ कोरिया रेडियो के संस्थापक किम सियोंग मिन का निधन

सियोल, एजेंसी। दक्षिण कोरिया के मशहूर रेडियो प्रसारक किम सियोंग मिन का 63 साल की उम्र में निधन हो गया। किम सियोंग मिन ने रेडियो प्रसारण, यूएसबी स्टिक और सूत्रों के नेटवर्क की मदद से उत्तर कोरियाई जनता को उनकी सत्तावादी सरकार की सच्चाई बताई। किम सियोंग उत्तर कोरिया के निवासी थे, लेकिन वे भागकर दक्षिण कोरिया पहुंच गए। दक्षिण कोरिया में किम सियोंग ने फ्री नॉर्थ कोरिया रेडियो की स्थापना की। किम सियोंग को शुक्रवार को सियोल के एक अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर्स ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। किम सियोंग कई वर्षों से फेफड़ों के कैंसर से जूझ रहे थे। किम सियोंग ने उत्तर कोरियाई सेना में बतौर कैप्टन काम किया था और साल 1999 में सियोंग भागकर दक्षिण कोरिया पहुंच गए थे। अपने रेडियो कार्यक्रम मे किम सियोंग, उत्तर कोरिया से भागकर दक्षिण कोरिया पहुंचे लोगों की सफलता की कहानियां, उत्तर कोरियाई शासक की विलासितापूर्ण जिंदगी और विभिन्न राजनीतिक खबरों की जानकारी दी जाती थी।

अदालत ने पलटा ट्रंप का फैसला, अपील कोर्ट ने फेडरल रिजर्व गवर्नर लिसा कुक को पद से हटाने पर लगाई रोक

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की एक अपीलीय अदालत ने राष्ट्रपति ट्रंप को झटका देते हुए उनके एक आदेश पर रोक लगा दी है। दरअसल ट्रंप ने फेडरल रिजर्व की गवर्नर लिसा कुक को पद से हटाने का आदेश दिया था, जिसे अब अपीलीय अदालत ने खारिज कर दिया है। अमेरिका में ब्याज दरों को लेकर महत्वपूर्ण बैठक होनी है, उससे पहले लिसा कुक की पद पर बहाली ट्रंप के लिए परेशानी खड़ी कर सकती है। लिसा कुक को पद से हटाने के लिए अब ट्रंप प्रशासन सुप्रीम कोर्ट का रुख कर सकता है।

लिसा कुक पर लगे धोखाधड़ी के आरोप : अमेरिका में फेडरल रिजर्व आमतौर पर स्वतंत्र होता है और उसमें सरकार का दखल नहीं होता है। फेडरल रिजर्व एजेंसी के 112 साल के इतिहास में कभी किसी राष्ट्रपति ने फेडरल रिजर्व गवर्नर को पद से नहीं हटाया। लिसा कुक पर मॉर्गेज फ्रॉड (गृह ऋण में धोखाधड़ी) का आरोप लगा था। ये आरोप फेडरल हाउसिंग फाइनेंस एजेंसी (एफएचएफए) के डायरेक्टर बिल पुल्टे ने लगाए, जो ट्रम्प के कट्टर समर्थक और फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल के आलोचक माने जाते हैं। बिल पुल्टे का आरोप है कि जून 2021 में लिसा कुक ने मिशिगन में एक प्रॉपर्टी खरीदी थी और 15 साल के मॉर्गेज एग्रीमेंट में इसे अपना प्रिंसिपल रेजिडेंस यानी मुख्य घर बताया था। इसके एक महीने बाद जुलाई 2021 में कुक ने जॉर्जिया के अटलांटा में एक और प्रॉपर्टी खरीदी और 30 साल के एग्रीमेंट में इसे भी अपना मुख्य घर बताया था। अमेरिका में मुख्य घर के लिए मिलने वाले लोन में ब्याज दरें कम होती हैं, और इस तरह के दावे से फायदा उठाने को मॉर्गेज फ्रॉड माना जा सकता है। पुल्टे ने आरोप लगाया कि, जो महिला अपनी ब्याज बचाने के लिए झूठ बोल रही है, वह ब्याज दरों को कंट्रोल करने की जिम्मेदारी कैसे ले सकती है? ट्रंप ने भी इस मुद्दे को तूल देते हुए पहले कुक से इस्तीफा मांगा और फिर 22 अगस्त को एलान किया कि अगर कुक इस्तीफा नहीं देतीं, तो वह उन्हें बर्खास्त कर देंगे। आखिरकार, 26 अगस्त को ट्रंप ने कुक को फेडरल रिजर्व गवर्नर पद से हटा दिया। लिसा कुक फेडरल रिजर्व बोर्ड की पहली अश्वेत महिला गवर्नर हैं और उनकी मौजूदा नियुक्ति 2038 तक है। सीनेट ने स्टीफन मिरान को फेडरल रिजर्व बोर्ड में शामिल करने की मंजूरी दी सीनेट ने राष्ट्रपति ट्रंप के करीबी और उनके शीर्ष आर्थिक सलाहकार स्टीफन मिरान को फेडरल रिजर्व की गवर्निंग बॉडी में शामिल करने की मंजूरी दे दी है। फेडरल रिजर्व बोर्ड में अभी दो गवर्नर क्रिस्टोफर वालर और मिशेल बोमैन की नियुक्ति ट्रंप ने की थी। हाल ही में एक अन्य गवर्नर, एड्रियाना कुगलर ने इस्तीफा दिया था, जिसके बाद कुगलर की जगह ट्रंप ने अपने आर्थिक सलाहकार स्टीफन मिरान को नामित किया था। अगर कुक भी पद से हट जाती हैं तो उनकी जगह फिर कोई ट्रंप समर्थक फेड बोर्ड में शामिल होगा और इस तरह बोर्ड में ट्रंप समर्थकों का दबदबा हो जाएगा। इसके बाद ट्रंप फेडरल रिजर्व संबंधी नीतियों पर अपना प्रभाव डाल सकेंगे। फेड की ब्याज दर निर्धारण समिति मंगलवार और बुधवार को सभी सात गवर्नरों और 12 क्षेत्रीय बैंक अध्यक्षों के साथ बैठक करेगी। इन 19 अधिकारियों में से बारह केंद्रीय बैंक की अल्पकालिक ब्याज दर में बदलाव पर मतदान करेंगे। फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल ने पिछले महीने संकेत दिए थे कि फेडरल रिजर्व इस बैठक में ब्याज दरों में कटौती कर सकता है।

पूर्वी ऑर्थोडॉक्स नेता राष्ट्रपति ट्रंप से की मुलाकात

वाशिंगटन, एजेंसी। पूर्वी ऑर्थोडॉक्स नेता और ईसाइयों के आध्यात्मिक नेता, कुमेंसियल पैट्रियार्क बार्थोलोम्यू चार वर्षों में अपनी पहली अमेरिका यात्रा पर हैं। सोमवार दोपहर उन्होंने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात की और इस दौरान राष्ट्रपति ट्रंप ने पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने के लिए उन्हें सम्मानित किया। बार्थोलोम्यू रविवार को वाशिंगटन पहुंचे और 25 सितंबर तक अमेरिका में विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

बार्थोलोम्यू को रूढ़िवादी पैट्रियार्कों में पहला माना जाता है क्योंकि वे प्राचीन राजधानी कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रियार्क हैं, जिसे अब तुर्की में इस्तांबुल के नाम से जाना जाता है। यह भूमिका उन्हें विभिन्न स्वशासी अधिकार और चर्च में प्रमुखता तो देती है, लेकिन पोप जैसी शक्ति नहीं। पैट्रियार्क, अधिकांशतः मुस्लिम देश तुर्किए में रहने वाले ईसाई समुदाय के संरक्षक माने जाते हैं। वे विदेशों में भी कुछ समुदायों, जैसे कि ग्रीक ऑर्थोडॉक्स आर्चडायोसिस ऑफ़ अमेरिका और कुछ छोटे अमेरिकी अधिकार क्षेत्रों की देखरेख करते हैं।

'गाजा जल रहा है', इजरायल ने रात भर बरसाए गोले, चारों ओर आग और गहरा काला धुंआ

गाजा, एजेंसी। इजरायल के रक्षा मंत्री ने गाजा शहर पर रात भर हुए भारी हमलों के बाद मंगलवार को कहा कि गाजा जल रहा है। इजरायल काट्ज की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब इजरायल गाजा शहर पर नए हमले की योजना बना रहा है। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने इजरायल से कतर जाते समय पत्रकारों से बातचीत में संकेत दिया कि आक्रमण शुरू हो गया है। उन्होंने कहा, 'इजरायलियों ने वहां कार्रवाई शुरू कर दी है। इसलिए हमें लगता है कि हमारे पास समझौते के लिए बहुत कम समय बचा है।' रुबियो ने कहा कि हमारे पास अब महीने नहीं हैं, हमारे पास शायद कुछ दिन या शायद कुछ हफ्ते ही बचे हैं।

अमेरिकी मीडिया आउटलेट एक्सियोस ने इजरायली अधिकारियों के हवाले से ताजा जानकारी दी। इसने बताया कि इजरायल की सेना ने गाजा शहर पर कब्जा करने के लिए जमीनी हमला शुरू किया है। टाइम्स ऑफ इजरायल के अनुसार, आईडीएफ हाल के दिनों में शहर और उसके आसपास हवाई हमलों का धीरे-धीरे विस्तार कर रहा है, लेकिन उसने घनी आबादी वाले उत्तरी शहर में जमीनी सैनिकों को नहीं भेजा है। गाजा में स्थानीय सूत्रों और प्रत्यक्षदर्शियों ने गाजा शहर में किसी

भी इजरायली टैंक के घुसपैठ से इनकार किया है।

हवाई हमले और ड्रोन से बमबारी : गाजा शहर के स्थानीय लोगों के अनुसार, अभी तक शहर के अंदरूनी हिस्सों में इजरायली टैंकों के प्रवेश या आवाजाही का कोई दृश्य नहीं देखा गया है। लेकिन उन्होंने गाजा शहर के अधिकांश हिस्सों में तीव्र हवाई हमलों और ड्रोन बमबारी की पुष्टि की है। चारों ओर आग की लपटें और गहरा काला धुंआ नजर आ रहा है। फिलिस्तीन की आधिकारिक समाचार एजेंसी डब्ल्यूएएफए ने मंगलवार तड़के खबर दी कि इजरायली सेना ने सोमवार रात से गाजा शहर पर अपने हमले तेज कर दिए हैं। इजरायली युद्धक विमान शहर पर लगातार हमले कर रहे हैं और रुकने का नाम नहीं ले रहे। हाल के हफ्कों में 10 लाख की आबादी वाले गाजा शहर से लगभग तीन लाख फिलिस्तीनी भाग गए हैं।

गाजा पर अमेरिका ने भी मान लिया, कूटनीति से हल नहीं

तेल अवीव, एजेंसी। कतर में सोमवार को 60 मुस्लिम देशों की मीटिंग हुई, जिसमें इजरायल के खिलाफ प्रस्ताव पारित हुआ। वहीं उसी समय इजरायल में अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो मौजूद थे। उन्होंने इजरायल के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू के साथ कई घंटे तक मीटिंग की और मीडिया से बात की। इस दौरान उन्होंने साफ किया कि गाजा में जारी जंग का कोई कूटनीतिक समाधान होने की उम्मीद नहीं दिखती। उन्होंने कहा कि हमास एक आतंकी और बर्बर संगठन है। वह जब तक सरेंडर नहीं करेगा, तब तक फिलिस्तीन के मसले पर किसी समाधान की उम्मीद करना बेमानी होगा। उनका यह स्टैंड अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से एकदम उलट है, जिन्होंने पिछले दिनों कहा था कि जल्दी ही गाजा में जंग समाप्त होगी। मार्को रुबियो के बयान से स्पष्ट है कि गाजा में अब इजरायल और आक्रामक हो सकता है क्योंकि उसे अमेरिका की ओर से समर्थन हासिल है। यही नहीं इजरायल ने गाजा पर हमले करना शुरू भी कर दिया है। सोमवार देर रात से ही इजरायल की ओर से गाजा पर हमले जारी हैं। रुबियो ने कहा कि हम चाहते हैं कि जंग समाप्त हो, लेकिन हमास एक आतंकी संगठन है, जो सरेंडर नहीं कर रहा है। उसके सरेंडर किए बिना गाजा में जंग का कोई कूटनीतिक समाधान निकलने की उम्मीद बेहद कम है।

उन्होंने कहा कि हमास का घोषित लक्ष्य इजरायल की बर्बादी है। उसने लगातार कई हमले इजरायल पर किए हैं। इसलिए उसके खात्मे के साथ ही समाधान संभव है। फिलहाल गाजा में भीषण हमलों का दौर जारी है। इजरायल की चेतावनी के बाद से हजारों लोग गाजा छोड़कर निकल रहे हैं। इसी को लेकर रुबियो ने चेतावनी दी है कि हमास के पास कुछ दिन का ही वक्त बचा है। वह सीजफायर डील को स्वीकार कर ले या फिर गाजा पर इसी तरह बमबारी जारी रहेगी। इजरायल ने तो ऑपरेशन शुरू भी कर दिया है। हालांकि इजरायल के लिए भी राह आसान नहीं है। एक तरफ मुस्लिम देश एकजुट हैं तो वहीं यूरोप के कई मुल्क भी इजरायल के खिलाफ हैं।

दोहा पर हमले से पहले नेतन्याहू ने ट्रंप को बता दिया था, उन्होंने मना नहीं किया; दावे से हड़कंप

दोहा, एजेंसी। इजरायल ने कतर की राजधानी दोहा में पिछले हफ्ते हमास के नेताओं पर हवाई हमला किया था। रिपोर्ट में अब दावा किया गया है कि इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को इसकी सूचना पहले ही दे दी थी। ट्रंप को यह जानकारी अटैक से करीब 50 मिनट पहले दी गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, 7 इजरायली अफसरों ने एक्सिओस को बताया कि व्हाइट हाउस को पिछले मंगलवार को मिसाइलें दागने से पहले खबर मिल गई थी। हालांकि, राष्ट्रपति ट्रंप ने हमले के बाद कहा था कि यूएस को दोहा स्ट्राइक की ठीक तरीके से चेतावनी नहीं मिली थी। उन्होंने कोशिश तो की मगर कतर को वार्निंग देने का समय ही नहीं मिला। वह इस घटना से बहुत नाराज भी हुए। डोनाल्ड ट्रंप ने रिपोर्टर्स से कहा कि इजरायल को कतर के साथ डील

करते वक्त बहुत सावधान रहना चाहिए। उन्होंने कतर को यूएस का शानदार सहयोगी भी बताया। हालांकि, हमले को लेकर रिपोर्ट में जो दावा किया गया है वो ट्रंप के बयान से अलग है। इसमें कहा गया कि इजरायल ने जब नोटिस भेजा, तब ट्रंप के पास स्ट्राइक रोकने का पूरा टाइम था। तीन अफसरों ने बताया कि नेतन्याहू ने सुबह करीब 8 बजे ट्रंप को फोन किया और दोहा में धमाकों की पहली खबर इसके 50 मिनट बाद आई। सीनियर इजरायली अफसर ने एक्सिओस को कहा, नेतन्याहू और ट्रंप के बीच पॉलिटिकल लेवल पर बात हुई। ट्रंप ने ना नहीं कहा। दूसरे अफसर का कहना था कि अगर ट्रंप रोकना चाहते तो रोक सकते थे, लेकिन प्रैक्टिकल में उन्होंने कुछ नहीं किया।

इजरायल से भड़कीं अरब सरकारें : दोहा में इजराली हमले में हमास के 5 गैर-प्रमुख सदस्य और एक कतरी सुरक्षा अधिकारी मारे गए। हालांकि, टॉप लीडर्स सुरक्षित बच गए। अरब सरकारें अटैक से भड़क उठी हैं। सोमवार को इस हमले को लेकर आपातकालीन बैठक हुई, जिसमें इजरायल के साथ कूटनीतिक संबंध रखने वाले देशों के नेता शामिल थे। इस बैठक में यहूदी राष्ट्र की कड़ी निंदा की गई। इजरायल ने हमास के 7 अक्टूबर 2023 के हमले के जवाब में गाजा पर आक्रमण शुरू किया था। तब से वह इस सशस्त्र समूह सहित ईरान के एक्सिस ऑफ रेजिस्टेंस के अन्य सदस्यों पर भी ईरान, लेबनान, सीरिया, यमन और अब कतर में जवाबी कार्रवाई कर चुका है। इससे पश्चिम एशिया के देशों में व्यापक आक्रोश पैदा हो गया है, जो पहले से ही गाजा में युद्ध के दौरान 64,000 से अधिक फिलिस्तीनियों के मारे जाने से नाराज हैं। साथ ही, यह चिंता भी बढ़ रही है कि खाड़ी अरब देशों की रक्षा के लिए अमेरिका की प्रतिबद्धता पर्याप्त मजबूत नहीं हो सकती।

लग्जमबर्ग ने भी फिलिस्तीन को राष्ट्र के रूप में मान्यता देने का समर्थन किया

लग्जमबर्ग, एजेंसी। फिलिस्तीन को राष्ट्र के तौर पर मान्यता देने का समर्थन करने वाले देशों की फेहरिस्त लगातार लंबी ही होती जा रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक लग्जमबर्ग ने भी संयुक्त राष्ट्र महासभा में फिलिस्तीन को राष्ट्र के रूप में मान्यता देने का समर्थन करने का फैसला किया है। पॉलिटिको की रिपोर्ट के मुताबिक लग्जमबर्ग के प्रधानमंत्री लूक फ्रीडेन और विदेश मंत्री जेवियर बीटल ने इस फैसले के बारे में अपनी कैबिनेट को जानकार दे दी है।

बता दें कि भारत ने भी संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन को राष्ट्र के रूप में मान्यता देने का समर्थन किया है। संयुक्त राष्ट्र में न्यूयॉर्क डिक्लेरेशन को मंजूरी गई। इसके तहत दो राष्ट्र समाधान निकालने लिए 142 देशों ने समर्थन में वोट किया जबकि 10 देशों ने विरोध किया। वहीं 10 देशों ने वोटिंग से दूरी

बना ली।

क्या है न्यूयॉर्क डिक्लेरेशन : सऊदी अरब और फ्रांस की अगुआई में एक प्रस्ताव तैयार किया गया है जिसके अंतरगत जुलाई में दो राष्ट्र समाधान के लिसए एक उच्च स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस डिक्लेरेशन में कहा गया था कि युद्धविराम की घोषणा के बाद फिलिस्तीनी प्रशासन को पूरे इलाके का प्रशासन सौंप दिया जाएगा। इसके अलावा यूएन के तहत एक अस्थायी अंतरराष्ट्रीय मिशन गाजा में तैनात किया जाएगा जो कि शांति समझौते की निगरानी करेगा।

भारत ने न्यूयॉर्क डिक्लेरेशन का खुलकर समर्थन किया है। वहीं यूएन में फिलिस्तीनी राजदूत रियाद मंसूर ने कहा है कि यह शांति की एक उम्मीद है। उन्होंने कहा कि यह डिक्लेरेशन दुनिया की चाहत को दिखाता है। वहीं इजरायल ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया। इजरायल ने कहा कि फिलिस्तीन जैसा कोई राष्ट्र नहीं होगा। इजरायली राजदूत ने कहा कि यह सब नाटक भर है। अमेरिका ने भी इजरायल का ही साथ दिया है।

बता दें कि न्यूयॉर्क डिक्लेरेशन में सात अक्टूबर को हमास द्वारा इजरायल पर किए गए हमले किनंदी की गई है। इसके अलावा गाजा में भी आम लोगों को निशाना बनाने और भुखमरी की स्थिति के लिए इजरायल की आलोचना की गई है। गाजा में इजरायली हमलों में अब तक 6400 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है।

एफबीआई का दावा, चार्ली किर्क के हत्यारे से जुड़ा डीएनए मिला

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) के निदेशक काश पटेल ने कहा कि जांचकर्ताओं को चार्ली किर्क के कथित हत्यारे टायलर रॉबिन्सन के खिलाफ अपराध स्थल से डीएनए सबूत मिले हैं, जो उसे पिछले हफ्ते हुई घटना से जोड़ते हैं। पटेल ने फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में कहा, हमें छत पर मिले पेचकस और उस तौलिए पर डीएनए मिला है, जिसमें बंदूक लपेटी गई थी।

उन्होंने आगे बताया कि राइफल की जांच मैरीलैंड स्थित ब्यूरो ऑफ अल्कोहल, टोबैको, फायरआर्म्स एंड एक्सप्लोसिव्स (एटीएफ) की प्रयोगशाला में की जा रही है। एफबीआई निदेशक ने यह भी कहा कि संदिग्ध के परिवार ने सामूहिक रूप से जांचकर्ताओं को बताया है कि वह वामपंथी विचारधारा का अनुयायी था। यह पिछले कुछ वर्षों में अधिक हो गया था।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, दक्षिणपंथी कार्यकर्ता और प्रभावशाली व्यक्ति चार्ली किर्क को बुधवार को यूटा वैली यूनिवर्सिटी में दर्शकों के सामने गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, जब वह एक कार्यक्रम में बोल रहे थे।

घटना के लगभग 33 घंटे बाद, 22 वर्षीय संदिग्ध को यूटा के वाशिंगटन काउंटी में गिरफ्तार किया गया, जब उसके रिश्तेदारों ने जांचकर्ताओं द्वारा जारी की गई तस्वीरों से उसकी पहचान की। यूटा के गवर्नर स्पेंसर कॉक्स ने शुक्रवार को बताया कि रॉबिन्सन के एक पारिवारिक सदस्य ने अपने एक पारिवारिक मित्र से संपर्क किया, जिसने वाशिंगटन काउंटी शेरिफ कार्यालय को जानकारी दी कि रॉबिन्सन ने उनके सामने अपना अपराध कबूल कर लिया है।

यूटा के गवर्नर ने एनबीसी पर रविवार को दिए इंटरव्यू में कहा कि रॉबिन्सन के मित्रों और रिश्तेदारों के साथ जांचकर्ताओं द्वारा किए गए साक्षात्कारों से पता चला कि उसकी वामपंथी विचारधारा थी, जो उसके रूढ़िवादी परिवार से काफी अलग थी। हालांकि, वह एक रजिस्टर्ड मतदाता है, लेकिन राज्य मतदान रिकॉर्ड दिखाते हैं कि रॉबिन्सन का किसी भी राजनीतिक दल से संबद्ध नहीं है और संकेत देते हैं कि उसने नवंबर के राष्ट्रपति चुनाव में वोट नहीं दिया था, जो 18 वर्ष की आयु पूरी होने के बाद उसका पहला राष्ट्रपति चुनाव था। उसके माता-पिता दोनों पंजीकृत रिपब्लिकन हैं।

अमेरिका का वेनेजुएला की बोट पर फिर हमला, 3 की मौत, ट्रम्प बोले- नशीले पदार्थ ला रहे थे; आगे और भी बड़े हमले करने का प्लान

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिकी सेना ने सोमवार को एक बार फिर वेनेजुएला के ड्रग तस्करों की बोट पर हमला किया। इस हमले में 3 लोग मारे गए। राष्ट्रपति ट्रम्प ने इसकी जानकारी सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दी। उन्होंने इन तस्करों को नार्को टेररिस्ट यानी ड्रग कार्टेल से जुड़े आतंकवादी बताया। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, मेरे आदेश पर अमेरिकी सेना ने ड्रग तस्करी करने वाले कार्टेल और नार्को टेररिस्ट पर स्ट्राइक की। ये लोग वेनेजुएला से नशीले पदार्थ अमेरिका की ओर ले जा रहे थे। उन्होंने कहा कि ड्रग कार्टेल अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति और हितों के लिए बड़ा खतरा हैं। ट्रम्प ने यह भी बताया कि इस हमले में अमेरिकी बलों को कोई नुकसान नहीं हुआ। दो हफ्ते पहले भी अमेरिकी सेना ने वेनेजुएला के कुख्यात ट्रेन डी अरागुआ गैंग से जुड़े 11 लोगों को मार गिराने का दावा किया था। विदेश मंत्री मार्को

रुबियो ने भी संकेत दिए कि अमेरिका ड्रग कार्टेल के खिलाफ और बड़े हमले कर सकता है।

अमेरिका ट्रेन डी अरागुआ को आतंकवादी संगठन घोषित कर चुका : अमेरिका ट्रेन डी अरागुआ गिरोह को आतंकवादी संगठन घोषित कर चुका है। हालांकि अमेरिकी संसद ने ट्रेन डे अरागुआ या वेनेजुएला के खिलाफ किसी तरह की सैन्य कार्रवाई को मंजूरी नहीं दी है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक ऐसा पहले कभी नहीं हुआ जब किसी देश ने आत्मरक्षा के नाम पर ड्रग्स तस्करी के शक में लोगों को उड़ा दिया हो। ट्रम्प प्रशासन ने फरवरी, 2025 में वेनेजुएला के ट्रेन डी अरागुआ, अल सल्वाडोर के रस्-13 और मेक्सिको के छह ड्रग कार्टेल्स को विदेशी आतंकी संगठन घोषित किया था। आमतौर पर यह दर्जा अल-कायदा या इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकी संगठनों के लिए होता है, लेकिन ट्रम्प प्रशासन ने कहा कि ये गिरोह ड्रग तस्करी, मानव तस्करी और हिंसा के जरिए इतना बड़ा नुकसान पहुंचा रहे हैं कि इन्हें आतंकी संगठन माना जाना चाहिए।

कानून में तस्करों को मारने की इजाजत नहीं : अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने पिछले हफ्ते कहा था कि सरकार को ड्रग तस्करों के खिलाफ सैन्य बल इस्तेमाल करने का अधिकार है। लेकिन अमेरिकी कानून के जानकारों के मुताबिक ऐसा नहीं है। आतंकवादी घोषित करने से सरकार उनकी संपत्ति जब्त कर सकती है या उन पर वित्तीय पाबंदी लगा सकती है, लेकिन युद्ध जैसी कार्रवाई का अधिकार नहीं मिलता। 2001 में संसद ने अल-कायदा और तालिबान के खिलाफ अफगानिस्तान में सैन्य बल इस्तेमाल करने की मंजूरी दी थी। बाद में अलग-अलग अमेरिकी सरकारों ने इस कानून का विस्तार कर दूसरे इस्लामी उग्रवादी संगठनों के खिलाफ भी कार्रवाई की। लेकिन इस कानून के तहत ड्रग्स कार्टेल के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की इजाजत नहीं मिलती।

शरीर के 7 चक्र क्या हैं और सेहत पर उनका क्या असर पड़ता है?

ऐसा माना जाता है कि अगर ये चक्र सुसुप्त यानी सो रहे हैं तो आपका जीवन भी नीरस है। इसलिए परम आनंद के साथ मोक्ष प्राप्ति के लिए इनको जागृत करना बहुत जरूरी है। जागृत होने के बाद ये चक्र शरीर के साथ मन और आत्मा को किस तरह प्रभावित करते हैं, इसके बारे में इस लेख में हम विस्तार से बात करते हैं।

क्या हैं चक्र

चक्र एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ पहिया होता है। ये शरीर के अंदर स्थित वे बिंदु हैं, जिनसे शरीर को ऊर्जा मिलती है, ये सात प्रकार के होते हैं। ये विभिन्न अंगों तथा मन एवं बुद्धि के कार्य को सूक्ष्म-ऊर्जा प्रदान करते हैं। ये व्यक्ति की सूक्ष्मदेह से संबंधित होते हैं। इनको कुंडलिनी चक्र भी कहा जाता है।

मूलाधार चक्र

यह गुदा और लिंग के बीच चार पंखुड़ियों वाला आधार चक्र है। प्राणायाम करके, अपना ध्यान मूलाधार चक्र पर केंद्रित करके मंत्र का उच्चारण करने से यह जागृत होता है। इसका मूल मंत्र 'लं' है। धीरे-धीरे जब यह चक्र जागृत होता है तो व्यक्ति में लालच खत्म हो जाता है और व्यक्ति को आत्मीय ज्ञान प्राप्त होने लगता है। यह लालच को समाप्त करता है।

स्वाधिष्ठान चक्र

मूलाधार चक्र के ऊपर और नाभि के नीचे स्थित होता है, स्वाधिष्ठान चक्र, इसका संबंध जल तत्व से होता है। इस चक्र के जागृत हो जाने पर शारीरिक समस्या और विकार, क्रूरता, आलस्य, अविश्वास आदि दुर्गुणों का नाश होता है। शरीर में कोई भी विकार जल तत्व के ठीक न होने से होता है। इसका मूल मंत्र 'वं' है।

मणिपूर चक्र

यह नाभि से ऊपर होता है। यौगिक क्रियाओं से कुंडलिनी जागरण करने वाले साधक जब ऊर्जा मणिपूर चक्र में जुटा लेते हैं, तो वो कर्मयोगी बन जाते हैं। यह प्रसुप्त पड़ा रहे तो लालच, ईर्ष्या, चुगली, लज्जा, भय से मन प्रभावित होता है। इसके जागृत होने से ये विकृतियां समाप्त हो जाती हैं।

अनाहत चक्र

यह चक्र व्यक्ति के सीने में रहता है। इसको जागृत करने हृदय पर ध्यान केंद्रित कर मूल मंत्र 'यं' का उच्चारण करना चाहिए। यह जागृत होते ही बहुत सिद्धियां प्राप्त होती है। यह सोता रहे तो कपट, तनाव, अहं यानी मोह और अहंकार से मनुष्य भरा रहता है।

विशुद्ध चक्र

यह चक्र गले में रहता है। इसे जागृत करने के लिए व्यक्ति को कंठ पर ध्यान केंद्रित कर मूल मंत्र 'हं' का उच्चारण करना चहिए। इसके जागृत होने से व्यक्ति अपनी वाणी को सिद्ध कर सकता है। इस चक्र के जागृत होने से संगीत विद्या सिद्ध होती है, मस्तिष्क अधिक क्रियाशील हो जाता है और सोचने समझने की शक्ति बेहतर हो जाती है।

सहस्रार चक्र

सहस्रार चक्र व्यक्ति के मष्तिष्क के मध्य भाग में होता है। बहुत कम लोग होते हैं जो इसको जागृत कर पाते हैं, चूंकि इसे जाग्रत करना बहुत मुश्किल काम है। इसको जाग्रत कर व्यक्ति परमानंद प्राप्त करता है और सुख-दुःख का उस पर असर नहीं होता है।

आज्ञा चक्र

आज्ञा चक्र भ्रू मध्य अर्थात दोनों आंखों के बीच में केंद्रित होता है। इस चक्र को जागृत करने के लिए व्यक्ति को मंत्र ' ' का जाप करना चाहिए। इसके जाग्रत होने से इंसान को आत्म ज्ञान प्राप्त होता है।

रेसिपी

ब्लैक करंट शीर

सामग्री

- बटर/मक्खन: 2 टेबलस्पून
- 1/4 कप सेवई: 2 टेबलस्पून
- चीनी: 1/2 कप ■ दूध: 3 कप
- किशमिश: 2 टेबलस्पून
- खजूर कटे हुए: 2 टेबलस्पून
- चिरौंजी: 1 टीस्पून ■ इलायची पाउडर: 1/2 टीस्पून ■ गुलाब जल: 2 टेबलस्पून
- ब्लैककरंट छोटे टुकड़ों कटें (फालसेब) : 1/4 कप
- इलायची पाउडर: एक चुटकी

विधि

सबसे पहले नॉनस्टिक तवे में बटर डालकर धीमी आंच पर गर्म करें। इसके बाद सेवई डालें और सुनहरा होने तक भून लें। सेवई के सुनहरी होने के बाद दूध डालकर एक से दो उबाल आने तक पकाएं। इसके बाद चीनी डाल दें, साथ ही साथ ड्राई फ्रुट्स और किशमिश डालकर अच्छे से मिला लें और 3 से 4 मिनट तक पकाएं। तय समय बाद खजूर, चिरौंजी, इलायची पाउडर और गुलाब जल डालकर 1 से 2 मिनट तक ढककर पकाएं। अगर शीर खुरमा ज्यादा गाढ़ा हो जाए तो थोड़ा गर्म पानी मिला लें। तय समय बाद आंच बंद कर लें। तैयार शीर खुरमा को कटोरी में डाल लें। इसमें चुटकीभर इलायची पाउडर और ब्लैककरेंट/फालसेब डालकर अच्छे से मिलाएं और सर्व करें।

दही पराठा

सामग्री

- आटा: 2 कप ■ दही: 1 कप
- पुदीना: एक मुट्ठी ■ हल्दी: 1/4 टीस्पून
- धनियापत्ती: 1/2 मुट्ठी ■ घी: 1/2 कटोरी
- 1 प्याज, बारीक कटा ■ अजवाइन: 1/4 टीस्पून ■ 3 हरी मिर्च बारीक काटी ■ 1/2 छोटी कटोरी दाल ■ नमक: स्वाद के अनुसार ■ पराठा सेंकने के लिए तेल ■ जरूरत के अनुसार पानी

विधि

सबसे पहले पुदीना-धनियापत्ती का धोकर बारीक काट लें। एक बर्तन में आटा लेकर प्याज, अजवाइन, हरी मिर्च, हल्दी, नमक और 3-4 चम्मच घी डालकर मिक्स करें। इसमें पुदीना-धनियापत्ती, दही और दाल डालकर आटा तैयार करें। तैयार आटे पर तेल लगाकर 10 मिनट रख दें। फिर से आटे को गूंद लें। एक प्लेट पर पलथन/सूखा आटा रख लें। आटे की बराबर लोइयां काट लें। एक लोई लेकर रोटी जैसे बेल लें। इस पर घी लगाएं और सूखा आटा लगाकर आधा मोड़ दें। इस हिस्से पर भी घी और सूखा आटा छिड़ककर मोड़ दें। इसे पराठे को बेलकर चौड़ा कर लें। मीडियम आंच पर तवा गर्म करें। इस पर पराठा डालकर दोनों तरफ सेंक लें। तैयार दही पराठा चटनी-अचार के साथ खिलाएं।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)
धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। कार्यक्षेत्र में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शुभांक-2-4-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)
घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। हाथ में आने वाला धन भी किसी अवरोध का शिकार हो जाएगा। व्यापार में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। धार्मिक यात्रा का योग है। शुभांक-5-7-9

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा)
चापलूस मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। सब्र का फल मीठा होता है अत:धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। शुभांक-4-6-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)
थोड़े प्रयास से कार्य सिद्ध होंगे। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होने से वातावरण आनन्द देने वाला बना रहेगा। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। सुबह-सुबह की महत्त्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह बना रहेगा। शुभ कार्यों का तत्काल फल मिलेगा। शुभांक-5-7-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)
पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी वातावरण में तनाव पैदा करेंगे। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। आवेग में आकर किये गए कार्यों का म्लान, अवसाद रहेगा। अपने काम को प्राथमिकता से करें। शुभांक-6-8-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)
प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित लाभ होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-7-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते)
कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अपने हित के काम सुबह-सबेरे निपटा लें। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। माता-पिता के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी। शुभांक-5-8-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू)
व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना। मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। शुभांक-1-3-5

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे)
शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रख। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। शुभांक-2-4-6

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी)
रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। राजकीय कार्यों से लाभ। शुभांक-3-5-7

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)
समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-4-7-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)
महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-4-8-9

काकुरो पहेली - 2590

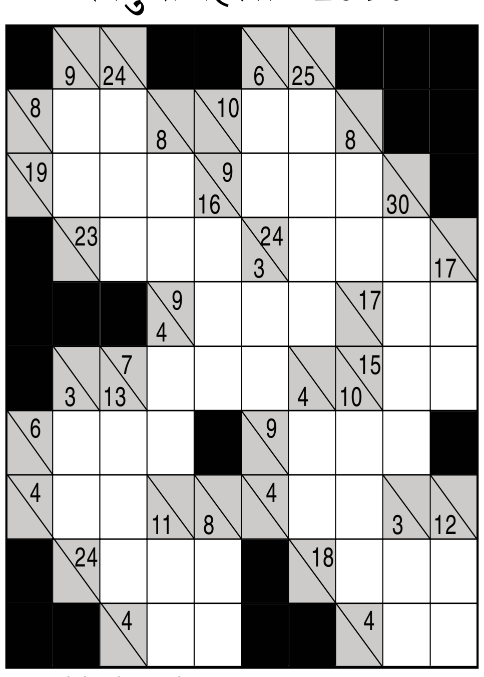

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

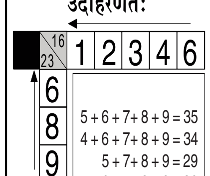

काकुरो - 2589 का हल

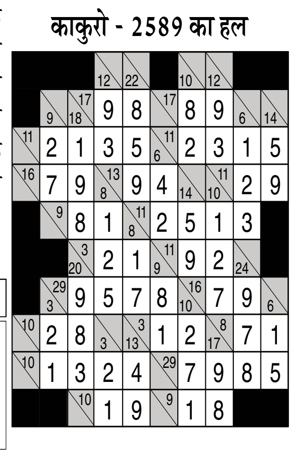

लॉफिंग ज़ोन

प्रेमी नेता सभा के पश्चात अपनी प्रेमिका पर बरस पड़े - तुमने मुझे इतना लंबा भाषण क्यों लिखकर दिया था? भाषण के बीच कई बार तो बहुत हूटिंग हुई.

प्रेमिका ने माफी मांगते हुए कहा - भाषण ज्यादा नहीं था. हां.. इतनी गलती मुझसे जरूर हो गई कि मैंने भाषण की चारों कापियां तुम्हें थमा दी थी.

☺ ☺ ☺

पागलखाने का दौरा करने आये मंत्री जी से पागलो का परिचय कराते हुए निरीक्षक ने कहा - ये है उमेश, यह सुरेश और यह है बेचारा मुकेश.

मंत्री जी ने बीच में ही टोक कर पूछा - बेचारा मुकेश, तुमने इसे बेचारा क्यों कहा?

निरीक्षक ने मुंह बिचका कर जवाब दिया- दरअसल साहब यह अकेला ऐसा व्यक्ति है, जो विवाह से पहले ही पागल हो गया.

☺ ☺ ☺

वकील - जब इन दोनों पति-पत्नी में लड़ाई हो रही थी, तो क्या तुम वहां मौजूद थे?

गवाह - जी हां.

वकील - तो तुम्हें कुछ कहना है?

गवाह - यही कि मैं कभी शादी नहीं करुंगा

☺ ☺ ☺

फिल्म वर्ग पहेली- 2590

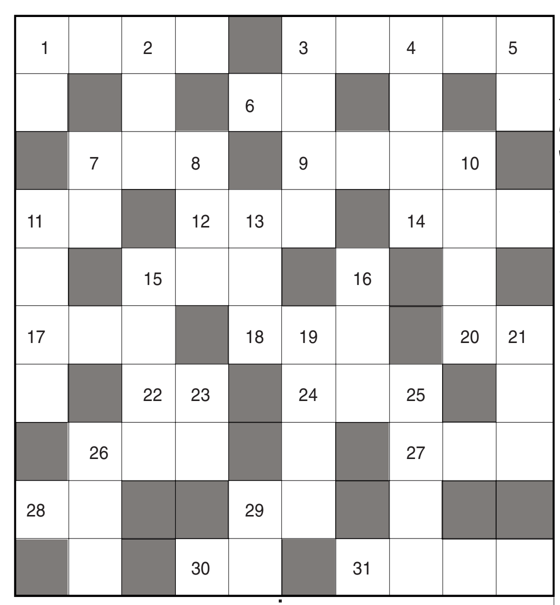

बायें से दायें:-

१. 'तू मिले दिल खिले और' गीत वाली नागार्जुन, रमैया, मनीषा की फिल्म-४
३. राजकपूर, माला की 'आँसू भरी हैं ये जीवन की राहें' गीत वाली फिल्म-५
६. 'केसरिया बालम' गीत वाली श्रेयस तलपदे, आयशा टाकिया की फिल्म-२
७. शाहरूख, माधुरी की 'अठरा बरस की कँवारी कली थी' गीत वाली फिल्म-३
९. 'वो चाँद जैसी' गीत वाली शाहरूख खान, माधुरी, ऐश्वर्या की फिल्म-४
११. जैकी श्रॉफ, डिम्पल कपाड़िया की 'फूल ये कहाँ से' गीत वाली फिल्म-२
१२. शॉवर अली, तरूण अरोड़ा, मेघना की फिल्म-३
१४. संजय दत्त, फरहा की 'मेरा प्यार तेरे जीवन के संग' गीत वाली फिल्म-३
१५. विनोद मेहरा, बिंदिया की फिल्म-३
१७. हिमालय, भाग्यश्री की 'तेरा ही प्यार मेरे इस दिल में' गीत वाली फिल्म-३
१८. फिल्म 'कभी कभी' में ऋषि की नायिका कौन थी-३
२०. अनिल, अक्षय खन्ना, ऐश्वर्या की 'इश्क बिना क्या' गीतवाली फिल्म-२
२२. दिलीप कुमार, रेखा, ममता कुलकर्णी की फिल्म-२
२४. अमिताभ, रेखा की 'कोई गाता मैं सो जात' गीत वाली फिल्म-३
२६. 'बागां मां जब मोर बोले' गीत वाली अक्षयकुमार, करीना की फिल्म-३
२७. विनोद खन्ना, हेमा की अरूणा राजे द्वारा निर्मित एवं निर्देशित फिल्म-३
२८. 'क्यूं मेरा दिल तुझको' गीत वाली करण नाथ, मनीषा की फिल्म-२
२९. नसीर, ओमपुरी, स्मिता की 'शमशीर बजे ना' गीत वाली फिल्म-२
३०. 'बंधन' में सलमान का नाम?-२
३१. फिल्म 'काफी हाउस' में शम्मी कपूर की नायिका?-२,२

ऊपर से नीचे:-

१. 'दिल ना दिया' गीत वाली फिल्म-२
२. विनोद खन्ना, बिंदू की फिल्म-३
३. 'दो दिल मिल रहे' गीत वाली फिल्म-४
४. विनोद मेहरा, रीना राय की फिल्म-४
५. 'आप से प्यार हुआ' गीत वाली फिल्म-२
७. 'सिर्फ संडे को करती हूँ मैं' गीत वाली अब्बास, शर्बाणी मुखर्जी की फिल्म-२
८. देव आनंद, आशा पारेख की 'ये दुनिया वाले पूछेंगे' गीत वाली फिल्म-३
१०. 'बड़ी दूर से आये हैं प्यार' गीत वाली अनिल घवन, योगिता की फिल्म-४
११. देव आनंद, मधुबाला की 'उन के खयाल आए तो' गीत वाली फिल्म-२,२
१३. 'जब लिया हाथ में हाथ' गीत वाली राजेंद्रकुमार, गीताबाली की फिल्म-३
१५. जयराज, निरूपा की 'ना किसी की आँख का नूर हूँ' गीत वाली फिल्म-२,२
१६. फिल्म 'शिवा' में नागार्जुन के साथ नायिका कौन थी-३
१९. 'लेके पहला पहला प्यार गीत वाली फिल्म-१,२,१
२१. मिथुन, आदित्य, डिम्पल, मंदाकिनी की फिल्म-३
२३. अनिल घवन, रश्मि वर्मा, सोनिका गिल की एक सस्पेंस फिल्म-२
२५. 'पियू बोले जिया' गीत वाली फिल्म-४
२६. बिस्वजीत, माला की 'अजी हो ताश के बावन पत्ते' गीत वाली फिल्म-३
२९. 'चालबाज' में श्रीदेवी के एक किरदार का नाम अंजू था दूसरे किरदार का नाम?-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2589

बा	बु	ल		आ	का	श		यु	द्ध
रि		गा	य	ब		र्मी		गां	
श	गु	न		रू	दा	ली		ध	र्म
	म		फू		ग		डो	र	
गु		दि	ल	से		मि	ली		भा
म	शा	ल		ह	म			जं	ग
रा		ज	य	रा	ज		माँ		म
ह	म	ला			बू	म		र	भा
	ह		स	फ	र		दे		ग
य	ल	गा	र			बे	व	फा	

सूडोकु -2590

7	8	6		1		5		2
	9			8				3
1			6	9		7		
	3	8	2		1			
2	7	5				6	3	1
			5		7	2	8	
		9		7	4			6
8				2			5	
4		2		5		9	1	7

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2589 का हल

2	9	5	3	1	4	6	8	7
3	6	1	2	8	7	4	9	5
8	4	7	5	9	6	3	2	1
5	7	4	1	6	2	8	3	9
1	3	6	9	4	8	5	7	2
9	8	2	7	3	5	1	4	6
6	2	8	4	7	1	9	5	3
4	5	3	6	2	9	7	1	8
7	1	9	8	5	3	2	6	4

शब्द पहेली - 2590

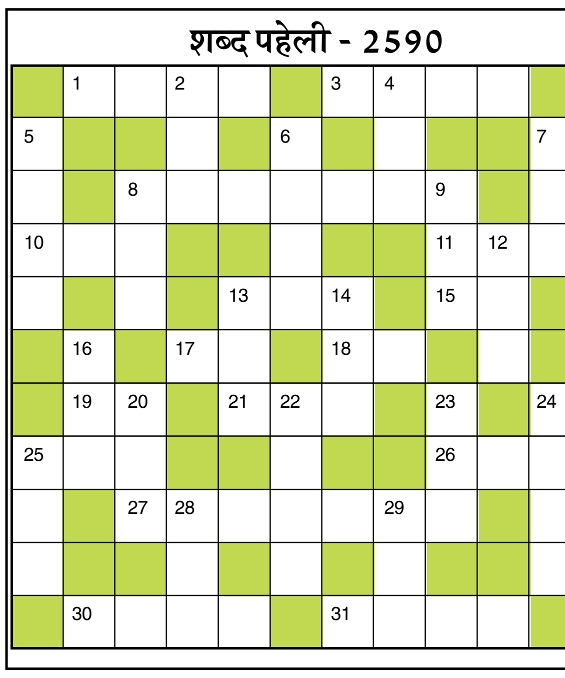

बाएँ से दाएँ

1.ईष्ट कृपा,वर-4
3.मान का विलोम-4
8.शैतानी करना-4,3
10.झगड़ा,बैर-3
11.जंगल,वन-3
13.सर्दी से बचने के लिये जलाई गई लकड़ियों का ढेर-3
15.जलने के बाद बचे अवशेष-2
17.कार्य-2
18.पतवार-2
19.नमाज से पहले हाथ-पांव धोना-2
21.नमस्कार-3
25.बूंद-3
26.जिज्ञासा,लगन-3
27.आत्मोत्सर्ग करना-4,3
30.मां के माता-पिता-2,2
31.रपटना-4

ऊपर से नीचे

2.वलय,घेरा-3
4.तीन घंटे का समय-3
5.खिसकना-4
6.उन्मादी,मदमस्त-4
7.यज्ञ,होम-3
8.नगर-3
9.तिरस्कृत-3
12.रूप अभिमान-3
13.शांति-3
14.प्रतिज्ञा-3
16.सहभोज-3
20.मोजा, पायताबा-3
22.उदारता-4
23.परवरिश करना-3
24.वचन तोड़ना-4
25.लेखनी-3
28.लिखावट-3
29.अमीर,धनवान-3

शब्द पहेली -2589 का हल

अ	मा	न	त		अ		बी	र	ब	ल
	ला		वा		म	हि	मा		ल	व
म			य	की	न		र			कु
त	क	ली	फ		चै	त्र		क	ल	श
वा		ड		रा	न		गै		ह	
ला	प	र	वा	ह		का	र	गु	जा	री
	र		दा		अ	स्त		मा		मा
प्र	ख	र		पा	प		म	न	च	ला
जा			शा		ह	न	न			गू
प	र		पि	ह	र		ह		शा	
ति	जा	र	त		ण		र	ह	म	त

भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर आयोजित 'नमो प्रदर्शनी' का किया उद्घाटन

एजेंसी

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर प्रदेशभर में विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को जयपुर के जवाहर कला केन्द्र में नमो प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया।मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए गए नवाचारों एवं महत्वपूर्ण योजनाओं के आधार पर लगाई गई स्टॉल्स का अवलोकन किया। इसमें मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, वोकल फोर लोकल, आत्मनिर्भर भारत सहित विभिन्न कार्यक्रम शामिल रहे। साथ ही, ऑपरेशन सिंदूर एवं अयोध्या में राम मंदिर निर्माण जैसे प्रधानमंत्री के अहम निर्णयों पर आधारित स्टॉल्स भी इस प्रदर्शनी में लगाई गईं। प्रदर्शनी में एक चित्रकार ने मुख्यमंत्री का चित्र भी बनाया। जवाहर कला केन्द्र में मुख्यमंत्री ने बड़ी संख्या में पूर्व सैनिकों, युवा उद्यमियों, कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर बातचीत की। कार्यक्रम में 'मोदी स्टोरी' श्रृंखला के तहत विभिन्न जनप्रतिनिधियों के प्रधानमंत्री के साथ प्रेरणादायी अनुभवों पर आधारित शॉर्टफिल्म का प्रसारण किया गया।

प्रधानमंत्री मोदी के 75वें जन्मदिन पर धर्मेंद्र प्रधान ने दी शुभकामनाएँ, 'सेवा पखवाड़ा' में भागीदारी का आह्वान

भुवनेश्वर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने हार्दिक शुभकामनाएँ दीं और भगवान श्रीजगन्नाथ से उनके दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना की। प्रधान ने एक वीडियो संदेश जारी कर कहा कि जिस पृष्ठभूमि से प्रधानमंत्री मोदी ने देश का नेतृत्व संभाला और राष्ट्र की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, वह हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है। उनके नेतृत्व ने जनता के आत्मविश्वास को बढ़ाया है और बीते 11 वर्षों में गरीब, किसान, महिलाएँ, युवा और जनजातीय समाज केंद्र में रखकर एक कल्याणकारी शासन व्यवस्था की नई शुरुआत हुई है। प्रधान ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन के अवसर पर भाजपा की ओर से 17 सितंबर से 2 अक्टूबर (गांधी जयंती) तक 'सेवा पखवाड़ा' का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने ओडिशा की जनता से अपील की कि वे इस पखवाड़े के दौरान स्वच्छता, वृक्षारोपण, स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण जैसे क्षेत्रों में योगदान दें। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत 75 लाख पौधे लगाने, 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा देने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के प्रयास प्रधानमंत्री के लिए सच्चा जन्मदिन उपहार होंगे।

सीआईडी ने महाराष्ट्र के नागपुर से दो साइबर अपराधियों को किया गिरफ्तार

रांची। अपराध अनुसंधान विभाग (सीआईडी) ने एक बड़े साइबर धोखाधड़ी रैकेट का खुलासा किया है, जिसमें एक फर्जी ट्रेडिंग ऐप के माध्यम से लोगों से करोड़ों रुपये ठगे गए थे। इस मामले में सीआईडी की साइबर क्राइम यूनिट ने महाराष्ट्र के नागपुर से दो साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है जिनमें जयंत ताराचंद और अजय रामभरोसे शामिल है। इनके पास से दो मोबाइल व चार सिम बरामद किए गए। दोनों महाराष्ट्र के नागपुर के निवासी हैं। सीआईडी के साइबर क्राइम थाना की डीएसपी नेहा बाला ने बताया कि यह मामला 4 अगस्त को साइबर क्राइम थाना, रांची में दर्ज किया गया था। पीड़ित ने अपनी शिकायत में बताया कि उन्हें फेसबुक, व्हाट्सएप और गूगल सर्च के माध्यम से एनजे फाइनेंशियल रिसर्च नामक एक फर्जी कंपनी का विज्ञापन दिखाया गया था। इस विज्ञापन में आकर्षक निवेश योजनाओं का लालच दिया गया। पीड़ित को एचएनएसी नामक एक फर्जी ऐप पर पैसे निवेश करने के लिए प्रेरित किया गया, जहां उन्हें कुछ ही समय में अपनी मूल राशि का 5 से 10 गुना लाभ कमाने का झूठा वादा किया गया था। उन्होंने बताया कि इस जाल में फंसकर पीड़ित ने कुल 23 लाख रुपये का निवेश किया, जिसे साइबर अपराधियों ने अवैध रूप से हस्तांतरित कर लिया। जांच और अनुसंधान के दौरान पाया गया कि आरोपितों ने पीड़ितों से पैसे विभिन्न बैंक खातों में जमा करवाए थे। मामले में शामिल एकाउंट में 23 दिनों में दो करोड़ 51 लाख 18 हजार 320 रुपये क्रेडिट हुआ है।

मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम ने की उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात

नई दिल्ली। मॉरीशस के प्रधानमंत्री, डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम ने उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन से मुलाकात की। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने एक्स पर तस्वीरें साझा करते हुए कहा कि आज मॉरीशस के प्रधानमंत्री,डॉ. नवीनचंद्र रामगुलामसे उपराष्ट्रपति एन्कलेव में मुलाकात हुई।

इस मुलाकात में भारत और मॉरीशस के बीच व्यापार, आर्थिक और लोगों के बीच संबंधों को मज़बूत करने पर चर्चा हुई।

मुख्यमंत्री ने बारिश से हुए नुकसान की समीक्षा की, राहत एवं पुनर्वास कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए

एजेंसी

शिमला। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने राज्य में पिछले 48 घंटों के दौरान हुई भारी वर्षा से हुए नुकसान की समीक्षा के लिए आज यहां आयोजित बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने प्राकृतिक आपदा से हुई जानमाल की क्षति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। पिछले दो दिनों में भारी बारिश के कारण पांच लोगों ने अपनी जान गंवाई है, जिनमें तीन लोग जिला मंडी के निहारी तथा दो के सदर उपमंडल के पंडोह मोहाल सुमा क्षेत्र से संबंधित है, जबकि दो लोग अभी भी लापता हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सितम्बर माह में राज्य में सामान्य से 136 प्रतिशत

अधिक बारिश जबकि पूरे मॉनसून सीजन के दौरान अब तक 45 प्रतिशत अधिक बारिश दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि इस मॉनसून सीजन में अब तक 417 लोगों ने जान गंवाई है, 45 लोग लापता हैं और भारी वर्षा, बादल फटने तथा भू-स्खलन के कारण 4582 करोड़ रुपये की संपत्ति का नुकसान हुआ है। इस दौरान 15,022 संरचनात्मक नुकसान दर्ज किए गए हैं, जिनमें 1502 घर पूरी तरह से क्षतिग्रस्त तथा 6467 घर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त, 6316 गौ शालाएं तथा 594 दुकानें शामिल हैं। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने सभी उपायुक्तों को सतर्क रहने और प्रभावित क्षेत्रों का व्यक्तिगत रूप से दौरा कर राहत एवं पुनर्वास कार्यों की निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को विशेषकर सेब उत्पादक क्षेत्रों में सड़क संपर्क शीघ्र बहाल करने के निर्देश दिए ताकि सेब की फसल मंडियों तक पहुंच सके और बागवानों को आर्थिक नुकसान न उठाना पड़े। उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में बिजली, पानी की परियोजनाओं तथा अन्य आवश्यक सेवाओं को प्राथमिकता के आधार पर बहाल करने के निर्देश दिए। इसके अलावा, उन्होंने एचपीएमसी को अपने संग्रहण केंद्रों से सेब ढुलाई के लिए अतिरिक्त वाहन लगाने को कहा।

आयुर्वेद दिवस पर अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान की बाइक रैली

एजेंसी

नई दिल्ली। आयुर्वेद दिवस 2025 के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईए आई ए) ने बाइक रैली का आयोजन किया। इस वर्ष का विषय जन-जन के लिए आयुर्वेद, धरती के लिए आयुर्वेद था, जिसके माध्यम से स्वास्थ्य संवर्धन और पर्यावरणीय संतुलन में आयुर्वेद की भूमिका को रेखांकित किया गया। रैली का शुभारंभ एआईए आई ए के निदेशक प्रो. (डॉ.) प्रदीप कुमार प्रजापति ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पूर्व निदेशक (प्रभारी) प्रो. (डॉ.) मंजुषा राजगोपाल, विभिन्न विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी शोधार्थी तथा संस्थान के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर निदेशक प्रो. (डॉ.) प्रदीप कुमार प्रजापति ने कहा कि यह रैली आयुर्वेद के शाश्वत संदेश 'संतुलन' को दर्शाती है न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्य के लिए भी। ऐसे आयोजनों के माध्यम से हम युवाओं और नागरिकों को आयुर्वेद को जीवनशैली के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करना चाहते हैं। प्रतिभागियों ने एआईए आईए से आयुष मंत्रालय तक बाइक रैली निकाली और हाथों में आयुर्वेद दिवस का लोगो तथा विषय दर्शाते हुए झंडे लेकर यात्रा की। यह रैली निवारक स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक बनी। यह रैली आगामी 23 सितम्बर को मनाए जाने वाले राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के लिए एक प्रभावी भूमिका सिद्ध हुई। हाल ही में भारत सरकार द्वारा यह तिथि प्रतिवर्ष आयुर्वेद दिवस के रूप में निश्चित की गई है ताकि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे समान रूप से मनाया जा सके।

हैदराबाद सहित कई जिलों में एसीबी के छापे, बिजली विभाग के एडीई के घर मिला कुबेर का खजाना

एजेंसी

हैदराबाद। तेलंगाना में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने मणिकोंडा इलाके में बिजली विभाग के एक अधिकारी के 18 ठिकानों पर छापेमारी की। इस दौरान अधिकारियों ने 2 करोड़ रुपये नकद और कई बेशकीमती भवन और जमीन के दस्तावेज मिले हैं। खबर लिखे जाने तक एसीबी की कार्रवाई चल रही है। एसीबी ने आरोपित एडीई अंबेडकर को गिरफ्तार कर लिया है। एसीबी अधिकारियों को बिजली विभाग के मणिकोंडा में कार्यरत एक सहायक संभागीय अभियंता (एडीई) अंबेडकर के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति की शिकायतें मिली थीं। इसी सिलसिले में एसीबी ने मंगलवार सुबह हैदराबाद के कोठागुडा में अंबेडकर के आवास सहित कई स्थानों पर छापा मारा। एसीबी ने एडीई के मणिकोंडा स्थित उनके घर, उनके रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों के घरों के साथ-साथ गच्चीबावली और माधापुर हैदराबाद, रंगारेड्डी, मेडक और नलगोंडा ज़िलों के विभिन्न इलाकों समेत 18 जगहों पर छापेमारी की। एसीबी अधिकारी उन्होंने बताया कि आरोपित बिजली विभाग के एडीई अंबेडकर को गिरफ्तार कर लिया गया है। अधिकारियों ने बताया किया कि

अन्य जिलों में भी बिजली विभाग के एडीई आंबेडकर की संपत्तियों की तलाशी ले रहे हैं। एसीबी के अधिकारियों ने गाचीबावली में अंबेडकर के बेनामी सतीश के घर की भी तलाशी ली है। यहां अधिकारियों ने 2 करोड़ रुपये नकद बरामद किये हैं। इसके अलावा गाचीबावली में एक महंगी इमारत होने के दस्तावेज भी मिले है । अंबेडकर के पास सूर्यपेट ज़िले के पेनपहाड़ में 10 एकड कृषि भूमि और एक हज़ार गज में एक फार्महाउस है। एसीबी अधिकारियों ने इन तलाशियों में मिले कृषि भूमि के दस्तावेज़ ज़ब्त किए हैं। एसीबी के डीएसपी आनंद ने बताया कि तलाशी पूरी होने के बाद पूरी जानकारी सामने आएगी। इस मामले में और कौन-कौन शामिल है, इसका पता लगाने के लिए जांच जारी है।

भारतीय संस्कृति में विज्ञान और अध्यात्म का सदैव से रहा है संतुलनः राज्यपाल

एजेंसी

हरिद्वार। उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (से.नि.) गुरमीत सिंह ने कहा कि एआई केवल एक तकनीकी साधन नहीं, बल्कि सही दिशा में यदि उपयोग किया जाए तो यह मानवता के कल्याण का सशक्त माध्यम बन सकता है। राज्यपाल सिंह यहां देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित एआई = फेथ व फ्यूचर अंतरराष्ट्रीय महासम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में विज्ञान और अध्यात्म का संतुलन सदैव से रहा है। अब समय आ गया है कि हम एआई को केवल तकनीकी दृष्टि से न देखकर, इसे आध्यात्मिक मूल्यों के साथ जोड़ें और मानव कल्याण के लिए प्रयोग करें। राज्यपाल ने कहा कि आने वाले समय में एआई का प्रयोग शिक्षा, चिकित्सा और सामाजिक कल्याण जैसे क्षेत्रों में बड़े स्तर पर किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए जरूरी है कि इसे नैतिकता, करुणा और सेवा भावना के साथ जोड़ा जाए। राज्यपाल ने आशा व्यक्त कि वर्ष 2027 तक भारत आत्मनिर्भर, विकसित और विश्वगुरु बनने जा रहा है। तब तक हमें रुकना नहीं है। राज्यपाल ने कहा कि एआई से मानवता को लाभ होना चाहिए, तभी इसका

आविष्कार सार्थक होगा। देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ चिन्मय पण्ड्या ने एआई के अध्यात्मिक मूल्यों की अवधारणा पर विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि एआई को भस्मासुर होने से बचाना होगा। इस असवर पर स्विट्जरलैण्ड, अमेरिका सहित 20 देशों से आये एआई विशेषज्ञों ने भी अपने-अपने विचार रखे। समारोह में देश-विदेश के वैज्ञानिक, आध्यात्मिक धर्मगुरुओं, शिक्षाविदों और छात्रों ने भाग लिया। युवा आइकॉन ने राज्यपाल जी को रुद्राक्ष माला, गायत्री महामंत्र लिखित चादर आदि भेंटकर सम्मानित किया। सायंकाल प्रतिभागियों ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

नितिन गडकरी ने किया 'दीपस्तम्भ' पुस्तक का विमोचन, कहा- संघ समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाया

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने हिंदुत्व के आधार पर राष्ट्रीय विचारधारा को बढ़ावा देकर सामर्थ्यशाली, समृद्ध और संपन्न राष्ट्र निर्माण की भावना को देश के प्रत्येक व्यक्ति में प्रज्वलित किया। संघ से जुड़े लोगों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए कार्य किया, जिसमें भारतीय मजदूर संघ, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, विश्व हिंदू परिषद और वनवासी कल्याण आश्रम जैसे संगठनों की स्थापना शामिल है। संघ की विचारधारा समता, बंधुत्व और स्वावलंबन पर आधारित है, और यह समाज से जाति व्यवस्था को समाप्त करने के लिए दशकों से काम कर रहा है। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने यह बात यहां हिंदी विवेक मासिक पत्रिका द्वारा

प्रकाशित पुस्तक 'दीपस्तम्भ' का विमोचन करते हुए कही। इस मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार टोली सदस्य मुकुल कानिटकर और हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था के अध्यक्ष रमेश पतंगी भी मौजूद रहे। गडकरी ने कहा कि 'दीपस्तम्भ' का प्रतीकात्मक महत्व समुद्र में जहाजों को दिशा दिखाने वाले दीपस्तम्भ जैसा है, जो समाज को सही दिशा प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि संघ की कार्यपद्धति सामान्य व्यक्ति को असाधारण कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव आता है। उन्होंने संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के योगदान को याद करते हुए कहा कि उन्होंने समाज के असंगठित और विभाजित होने को देश की कमजोरी माना और व्यक्ति निर्माण के जरिए संगठित समाज की नींव रखी। उन्होंने कहा कि सहकारी समितियों और कोऑपरेटिव बैंकों के माध्यम से प्रमाणिकता के साथ आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया गया। उन्होंने किसान संगठन की स्थापना का जिक्र किया, जिसने गांव-गांव में गरीब किसानों और मजदूरों की प्रगति के लिए कार्य किया। संघ की कार्यपद्धति लंबी और व्यापक है, लेकिन इसके मूल में समता, बंधुत्व और स्वावलंबन जैसे विचार हैं, जिन्हें साकार करने के लिए लाखों कार्यकर्ता देशभर में कार्यरत हैं।उन्होंने कहा कि संघ की शाखाओं और कार्यस्थलों पर किसी की जाति या धर्म नहीं पूछा जाता।

बिहार के कई सरकारी अस्पतालों के पैथोलॉजी केंद्र में केमिकल की कमी, जांच बंद

एजेंसी

पटना। बिहार के कई जिलों के सरकारी अस्पतालों में इन दिनों पैथोलॉजी जांच केंद्र में जांच बंद कर दी गई हैं। सरकारी अस्पतालों में पैथोलॉजी केंद्र के बाहर सरकारी नोटिस चस्पा कर दिए गए हैं। इनमें कहा गया है कि केमिकल नहीं होने के कारण कई महत्वपूर्ण जांच बंद कर दी गई हैं। जनता परेशान है और स्वास्थ्य विभाग मूकदर्शक बना हुआ है। हाल के दिनों में औरंगाबाद, नांलदा, बिहार शरीफ समेत कई जिलों में एएलपी ,एएसओ,आरए फैक्टर एसजीओटी, सीआरपी, क्रैटाइन, टीजी, एचबीएवनसी, पीटीआईएनआर जैसी महत्वपूर्ण जांचें न हो पाने से सैकड़ों मरीजों को खाली हाथ वापस लौटना पड़ा। यह जांचें आम तौर पर लीवर एवं अन्य संक्रमण के कारगर इलाज के लिए अहम होती हैं। बिहार में इस समय डेंगू तेजी से पैर पसार रहा है। डेंगू से लगभग पांच सौ लोग संक्रमित हो चुके हैं। अस्पताल के जिम्मेदार अधिकारी यह दलील दे रहे हैं कि ऊपर से वेंडर को केमिकल का आर्डर नहीं मिलने के कारण यह जांचें नहीं पा रही हैं। इसके लिए वह खेद भी जता रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि बिहार में पीपीपी मॉडल के आधार पर पैथोलॉजी जांचें होती हैं। इसके तहत बिहार स्वास्थ्य विभाग को आवश्यकता अनुसार समय- समय पर नियुक्त एजेंसियों को रीजेन्ट (केमिकल) का आर्डर देना पड़ता है। पिछले कुछ महीनों से यह काम धीमा हो गया है। इसका खामियाजा बिहार की जनता भुगत रही है। गरीब लोगों को महंगे दामों पर बाहर से टेस्ट कराने पड़ रहे हैं।

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान को मिशन मोड में लाने की आवश्यकताः भूपेन्द्र यादव

एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव ने दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण को कम करने के लिए अधिक से अधिक पौधरोपण करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान को मिशन मोड में लाने की आवश्यकता है। नागरिकों के सहयोग से सभी को अपने शहर को हरा भरा रखने के लिए एक पेड़ लगाना चाहिए। भूपेन्द्र यादव दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता प्रबंधन पर यहां आयोजित उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में प्रमुख हितधारकों ने भाग लिया, जिनमें वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीक्यूएम), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, हरियाणा, पंजाब तथा अन्य संबंधित एजेंसियां शामिल थीं। इस बैठक में दिल्ली के पर्यावरण मंत्री सरदार मंजिन्दर सिंह सिरसा और नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रह्मण्यम ने भी भाग लिया। केंद्रीय मंत्री यादव ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सभी एजेंसियों द्वारा समन्वित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता

पर जोर दिया। उन्होंने दिल्ली-एनसीआर में विभिन्न एजेंसियों द्वारा लागू वायु प्रदूषण नियंत्रण उपायों की निगरानी के लिए एकीकृत कमांड और नियंत्रण केंद्र की आवश्यकता पर भी बल दिया। इसके साथ ही उद्योग जगत से वायु प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में सक्रिय सहयोग देने का आह्वान किया। यादव ने कहा कि प्रयासों का केंद्र सभी संबंधित पक्षों- उद्योग, नागरिक और एजेंसियों- के व्यवहार परिवर्तन पर होना चाहिए, ताकि प्रदूषण कम करने वाली गतिविधियों को धीरे-धीरे सभी अपनाएं। इसके साथ वायु प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में नागरिकों की भागीदारी को सुगम बनाने के लिए विभिन्न ऐप्स के एकीकरण पर ज़ोर दिया गया।

मनसा देवी पहाड़ी से रेलवे ट्रैक पर गिरा मलबा, 1 घंटे के लिए रेलवे ट्रैक हुआ बंद

हरिद्वार। मनसा देवी पर्वत से भीमगोडा क्षेत्र में काली मंदिर के निकट आज शाम बोल्डर व मलबा आ जाने से रेल यातायात अवरुद्ध हो गया। हरिद्वार से देहरादून व ऋषिकेश रेलवे ट्रैक करीब एक घंटे तक बाधित रहा। इस दौरान रेलवे विभाग ने युद्ध स्तर पर काम कर रेल ट्रैक से मलबा हटाया। हालांकि इस बीच यात्रियों को बसों द्वारा देहरादून व ऋषिकेश भेजे जाने की व्यवस्था की गई थी, किंतु उसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। हरिद्वार रेलवे स्टेशन अधीक्षक दिनेश कुमार ने बताया कि शाम करीब 6=30 बजे मलबा गिरने की सूचना प्राप्त हुई थी। रेलवे अभियांत्रिकी विभाग ने तत्काल कार्रवाई करते हुए 1 घंटे के अंदर मलबे को हटाकर रेलवे ट्रैक को क्लियर कर दिया। इस बीच ऋषिकेश-उदयपुर एक्सप्रेस ट्रेन को रीशेड्यूल करना पड़ा। गौरतलब है कि मनसा देवी पहाड़ी के इस हिस्से में लगातार भूस्खलन जारी है। इन बरसातों में चार बार मलबा आने से रेल यातायात अवरुद्ध हो चुका है। हालांकि मलबा रोकने के लिए रेलवे प्रशासन ने यहां पर लोहे के बड़े-बड़े गार्डर लगाकर बैरिकेटिंग की है।

शिवराज चौहान ने दी प्रधानमंत्री मोदी को दी जन्मदिन की शुभकामनाएं, बताया पहली भेंट का किस्सा

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र को उनके जन्मदिन की शुभकामनाएं दी और उनके साथ पहली मुलाक़ात का किस्सा एक्स पर बताया। बुधवार को एक्स पर साझा किए अपने संदेश में शिवराज सिंह ने कहा कि 1992-93 जब भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हुआ करते थे डॉक्टर मुरली मनोहर जोशी, कश्मीर की घाटी पर आतंक चरम पर था, कांग्रेस की सरकार थी, श्रीनगर के लाल चौक पर कोई तिरंगा झंडा फहराने की सोच भी नहीं सकता था। तब पार्टी ने फैसला किया पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का, आतंकवाद को चुनौती देने का और तय किया कि डॉक्टर मुरली मनोहर जोशी के नेतृत्व में एकता यात्रा निकलेगी। कन्याकुमारी से श्रीनगर के लाल चौक तक अलख जगाते हुए, जागरण का मंत्र फूंकते हुए श्रीनगर के लाल चौक पर जोशी जी तिरंगा झंडा फहराएंगे। सवाल था, ऐसी यात्रा जिसकी राह पर कदम-कदम पर खतरा है। इस यात्रा से जनता को जोड़ना, पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोना, सफलता पूर्वक यात्रा का संचालन

कौन करेगा..? तब एक ही नाम याद आया- नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का। वो यात्रा के प्रभारी बनाए गए। मेरी पहली मुलाकात उनसे वहीं हुई थी। मैं तब विदिशा से सांसद चुना ही गया था। यात्रा से नौजवानों को जोड़ने के लिए केसरिया ब्रिगेड बनाई गई और मुझे केसरिया ब्रिगेड का राष्ट्रीय संयोजक बनाया गया। तब मोदी जी से मिलने का सौभाग्य मिला। पहली बार मैंने देखा, एकता यात्रा से जनता को जोड़ने के लिए उनके पास कितने आइडियाज हैं। उन्होंने कहा एक ही यात्रा क्यों निकले..? मुख्य यात्रा होगी लेकिन जगह-जगह से उपयात्राएं उसमें जुड़ेगी। अलख जगाते हुए, जागरण का मंत्र फूंकते हुए, भारत माता की जय का उद्घोष करते हुए देश का हर हिस्सा क्यों ना जुड़े इस यात्रा से और तब उपयात्रा निकालने का निर्णय लिया गया जो मुख्य यात्रा से अलग-अलग स्थानों पर जुड़ेगी। एक उप यात्रा निकालने का दायित्व मुझे भी मिला। जबलपुर, मंडला, मैहर, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर से होते हुए होशंगाबाद में मुख्य यात्रा से मिलनी थी। केसरिया विग्रह के संयोजक के नाते भी मैंने देशभर में उस समय दौरा किया था। और तब मैं आश्चर्य से देखता था दिन और रात मेहनत करते हुए मोदी जी को, समाज का हर वर्ग यात्रा से जुड़े इसके लिए नए-नए कार्यक्रम सुझाते और उनको क्रियान्वित करते। लाल चौक में तिरंगा झंडा लहराए, यात्रा पूरे देश को जगाती, जन जन यात्रा से जुड़ जाए इस संकल्प से भरे हुए वो दिखाई देते थे। आत्मविश्वास से भरे नरेंद्र मोदी जिद, जुनून और जज्बा उनकी आंखों में था, उत्साह से परिपूर्ण लेकिन धैर्य भी देखने लायक था। शांत और स्थिर चित्त, एक ही लक्ष्य चिड़िया की आंख की तरह श्रीनगर में लाल चौक पर झंडा फहराना है और इस यात्रा को जन आंदोलन बना देना है।

छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में 54 बालिग-नाबालिग लड़कियां लापता : दीपिका शोरी

एजेंसी

सुकमा/रायपुर। छत्तीसगढ़ महिला आयोग की सदस्य दीपिका सोरी ने बस्तर संभाग के सुकमा में आयोजित एक प्रेसवार्ता में जानकारी दी है कि सुकमा, दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों में कई बालिग और नाबालिग लड़कियां लापता हैं। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार सुकमा में 14, दंतेवाड़ा में 35 और बीजापुर में 5 लड़कियां अभी भी गायब हैं। दीपिका सोरी ने कहा कि पिछले पांच वर्षों में बस्तर संभाग से लगातार लड़कियां गायब हो रही हैं, लेकिन इनकी कोई रिकॉर्डिंग पुलिस सिस्टम में नहीं है, जो एक बड़ा चिंता का विषय है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए बताया कि तीन महीने पहले एक लड़की लापता हुई थी, जो बाद में राजस्थान में कोर्ट मैरिज कर चुकी थी, ऐसे में उसे वापस लाना मुश्किल हो गया। दीपिका शोरी ने पत्रकारों को जानकारी दी कि बस्तर संभाग में पिछले 5 वर्षों में लगातार आदिवासी नाबालिक युवतियां एवं महिलायें लापता हो रही हैं जो काफी गंभीर मामला है। सुकमा, बीजापुर और दंतेवाड़ा के आंकड़ों का जिक्र करते हुए कि उन्होंने बताया कि मानव तस्करी, देह व्यापार, जैसे माकड़ जाल में लापता महिलाओं के धकेलना का काम भी हो सकता है, इसीलिए सतर्क रहने की बहुत जरूरत है। लेकिन पुलिस की मदद से अधिकांश महिलाओं को ढूंढ निकाला गया है, जबकि पिछले पांच वर्षों में सुकमा जिले में 84 नाबालिक युवतियां लापता हुई थी। जिसमें से 82 को ढूंढ निकाला और अभी भी 2 लापता है। इसके अलावा बालिक महिलाएं की लापता होने की संख्या 132 है जिसमें 120 महिलाओं को ढूंढ निकाला गया एवं 12 महिलाएं अभी भी लापता है, जबकि दंतेवाड़ा जिले में 2021 से 2025 तक 35 बालिक एवं दो नाबालिक युवतियां लापता हैं। बीजापुर जिले में इन 5 वर्षों में पांच महिलाएं लापता हुए हैं। लापता महिलाओं को पुलिस भी ढूंढने में लगी हुई है, लेकिन अब तक उनका कोई सुराग नहीं लग पा रहा है।उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया के जरिए सबसे अधिक नाबालिक युवतियां सैकड़ो किमी दूर बैठे किसी अनजाने व्यक्ति से दोस्ती कर लेते हैं। नाबालिक युवतियां दोस्ती और प्रेम प्रसंग के नाम पर उन्हें फंस लिया जाता है।जिसके बाद यह सामने वाले व्यक्तियों के इशारे पर अपने अपने माता-पिता और घर परिवार को बिना बताए गायब हो जाते हैं। यह एक प्लानिंग और सुनियोजित तरीके से नाबालिक युवतियां ट्रैप में फंसाया जा रहा है, जबकि अगर कोई युवती इस तरह से फंस जाती है तो उसके साथ कुछ भी होता है, उसकी जानकारी किसी को नहीं लगती है, इसीलिए उन्होंने कहा कि किसी भी अनजान व्यक्ति से सोशल मीडिया में दोस्ती एवं बातचीत करने से बचे।

भारत में पहली बार वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप, झाझरिया बोले- 20 से अधिक पदक जीतेंगे भारतीय खिलाड़ी

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत पहली बार विश्व के सबसे बड़े पैरा खेल आयोजन की मेजबानी करने जा रहा है। इंडियन ऑयल नई दिल्ली 2025 वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप 27 सितम्बर से 05 अक्टूबर तक जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित होगी। इस प्रतियोगिता में 104 देशों से 2,200 से अधिक पैरा एथलीट्स और सपोर्ट स्टाफ हिस्सा लेंगे। भारत इस ऐतिहासिक आयोजन में अब तक के सबसे बड़े 73 सदस्यीय खिलाड़ी दल के साथ उतर रहा है। पैरा ओलंपिक कमेटी ऑफ इंडिया (पीसीआई) के अध्यक्ष और दो बार के पैरा ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता देवेंद्र झाझरिया ने दावा किया कि भारतीय दल इस बार 20 से अधिक पदक जीतकर नया इतिहास बनाएगा। उन्होंने कहा, 'पिछली बार कोबे में भारत ने 17 पदक जीते थे। इस बार टीम कहीं ज्यादा मजबूत है और मुझे पूरा विश्वास है कि हम 20 से ज्यादा मेडल जीतेंगे।' भारतीय टीम की कमान स्टार जैवलिन थ्रोअर और मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन सुमित अंतिल संभालेंगे। टीम में प्रवीण कुमार, निशाद कुमार, सिमरन शर्मा, प्रीति पाल, नवदीप, धरमबीर नैन और प्रणव सूरमा जैसे अनुभवी खिलाड़ी शामिल हैं। इसके अलावा, इस बार 35 खिलाड़ी पहली बार वर्ल्ड चैम्पियनशिप में हिस्सा ले रहे हैं। इनमें महेंद्र गुर्जर भी हैं, जिन्होंने हाल ही में स्विट्जरलैंड में नॉटविल ग्रां प्री के दौरान एफ42 जैवलिन थ्रो में 61.17 मीटर का विश्व रिकॉर्ड बनाया था।

वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन : गुलवीर सिंह, लिली दास और संजीवनी जाधव करेंगे शानदार मुकाबले

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली 12 अक्टूबर को एक बार फिर विश्व एथलेटिक्स के सबसे बड़े आयोजनों में से एक की गवाह बनेगी। प्रो-कैम इंटरनेशनल के तत्वावधान में आयोजित होने वाली 20वीं वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन में इस बार 40,000 से अधिक धावक हिस्सा लेंगे। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम से शुरू होने वाली इस प्रतिष्ठित दौड़ की कुल इनामी राशि 2,60,000 अमेरिकी डॉलर है। पुरुष वर्ग में एशियन गेम्स पदक विजेता और राष्ट्रीय रिकॉर्डधारी गुलवीर सिंह पहली बार इस हाफ मैराथन में उतरेंगे। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ना है। उनके सामने चुनौती होगी इस वर्ष बेंगलुरु वर्ल्ड 10के के विजेता और नेशनल इंटर-स्टेट चैम्पियनशिप में दोहरे स्वर्ण पदक विजेता अभिषेक पाल की। महिला वर्ग में मुकाबला बेहद रोमांचक होगा। अमेरिका में पोर्टलैंड ट्रैक फेस्टिवल में व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली और हाल ही में बेंगलुरु 10के की स्वर्ण पदक विजेता संजीवनी जाधव के साथ मौजूदा चैंपियन लिली दास और 2023 की विजेता कविता यादव खिताब की दावेदार होंगी।

अपोलो टायर्स बना टीम इंडिया का नया स्पॉन्सर

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने अपोलो टायर्स को टीम इंडिया का नया प्रमुख प्रायोजक (स्पॉन्सर) घोषित किया है। अब भारतीय पुरुष और महिला टीम की जर्सी पर सभी मैचों में अपोलो टायर्स का लोगो नजर आएगा। यह करार मार्च 2028 तक चलेगा। गुरुग्राम स्थित अपोलो टायर्स ने 579 करोड़ रुपये की भारी बोली लगाकर कैनवा और जेके सीमेंट को पीछे छोड़ दिया। इसका मतलब है कि कंपनी को हर घरेलू या द्विपक्षीय मुकाबले पर करीब 4.77 करोड़ रुपये खर्च करने होंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) और अन्य बहुराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में यह रकम लगभग 1.72 करोड़ रुपये प्रति मैच होगी। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि अपोलो टायर्स का टीम इंडिया से जुड़ना हमारे खिलाड़ियों की मेहनत और प्रदर्शन का नतीजा है। यह सिर्फ समझौता नहीं, बल्कि भरोसे की साझेदारी है बीसीसीआई उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने कहा कि यह ऐतिहासिक कदम है। भारतीय क्रिकेट की लोकप्रियता और अपोलो टायर्स की पहचान मिलकर बड़ी सफलता दिलाएंगे। अपोलो टायर्स के उपाध्यक्ष नीरज कंवर ने कहा कि क्रिकेट देश का सबसे बड़ा खेल है। टीम इंडिया का हिस्सा बनना हमारे लिए गर्व की बात है। यह साझेदारी हमारे ब्रांड को मजबूत बनाएगी और खेल को नई ऊंचाई देगी।

स्मृति मंधाना आईसीसी वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में फिर बनीं नंबर वन

नई दिल्ली। भारत की स्टार बल्लेबाज़ स्मृति मंधाना ने आईसीसी महिला वनडे बल्लेबाज़ी रैंकिंग में एक बार फिर शीर्ष स्थान हासिल कर लिया है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रविवार को खेले गए पहले वनडे में मंधाना ने 63 गेंदों पर 58 रन बनाए थे, जिसकी बदौलत उन्होंने इंग्लैंड की कप्तान नैट स्किवर-ब्रंट को पीछे छोड़ते हुए नंबर-1 पोजीशन हासिल की। यह चौथी बार है जब मंधाना ने वनडे बल्लेबाज़ी रैंकिंग में नंबर-1 स्थान पाया है। उन्होंने जनवरी 2019 में पहली बार यह उपलब्धि हासिल की थी और जुलाई 2025 में भी वह नंबर-1 बनी थीं, लेकिन बाद में स्किवर-ब्रंट ने उन्हें पीछे छोड़ दिया था। भारत की कप्तान हरमनप्रीत कौर 12वें और जेमिमा रोड्रिग्स 15वें स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी तीन स्थान ऊपर चढ़कर पांचवें नंबर पर पहुंच गई हैं, जबकि एनाबेल सदरलैंड और फोबे लिचफील्ड संयुक्त रूप से 25वें स्थान पर हैं। न्यू चंडीगढ़ में खेले गए पहले वनडे में ऑस्ट्रेलिया ने भारत का 282 रन का लक्ष्य आठ विकेट और 35 गेंद शेष रहते हासिल कर लिया था।

एशिया कप 2025: यूएई मुकाबले से पहले पाकिस्तान ने रद्द की प्रेस कॉन्फ्रेंस

एजेंसी

दुबई। एशिया कप 2025 में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के खिलाफ होने वाले अहम मुकाबले से पहले पाकिस्तान ने अपनी प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस रद्द कर दी। हालांकि टीम ने अभ्यास सत्र जारी रखा, जो इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) अकादमी के उसी परिसर में हुआ जहां भारतीय टीम भी प्रैक्टिस कर रही थी। यह सब हाल ही में हुए हैंडशेक विवाद के बाद के तनावपूर्ण माहौल में हुआ। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने आईसीसी से मैच रेफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट को हटाने की अपील की थी, लेकिन इसे खारिज कर दिया गया। पाइक्रॉफ्ट ने भारत-पाक मैच से पहले पाकिस्तान कप्तान सलमान अली आगा को सूचित किया था कि टॉस के समय उनके भारतीय समकक्ष सूर्यकुमार यादव से हाथ नहीं मिलाया जाएगा। इसी वजह से कयास लगाए जा रहे थे कि पाकिस्तान यूएई के खिलाफ मुकाबले से हट भी सकता है। हालांकि, फिलहाल पाइक्रॉफ्ट ही इस मैच में रेफरी की भूमिका निभाने वाले हैं। यह मुकाबला पाकिस्तान और यूएई दोनों के लिए करो या मरो की स्थिति वाला है, क्योंकि विजेता टीम सुपर फोर में जगह बनाएगी। वहीं भारत पहले ही लगातार दो जीत दर्ज कर सुपर फोर में पहुंच चुका है। भारतीय टीम ने शाम 6 बजे से तीन घंटे तक भीषण गर्मी में अभ्यास किया। दूसरी ओर पाकिस्तान ने रात 8 बजे से लगभग 20 मिनट तक हल्के-फुल्के अंदाज में फुटबॉल वॉर्म-अप किया। भारत की ओर से संजू सैमसन, अक्षर पटेल और हार्दिक पांड्या ने सबसे पहले नेट्स में बल्लेबाजी की, उसके बाद शुभमन गिल और सूर्यकुमार यादव ने पिच पर हाथ आजमाया। इस दौरान हर्षित राणा ने कुछ जोरदार शॉट खेले, जिनमें से एक छक्का पाकिस्तान टीम के अभ्यास स्थल की ओर चला गया। भारतीय गेंदबाजों ने अपेक्षाकृत हल्का अभ्यास किया क्योंकि वे पिछले दो मैचों में लंबा समय मैदान पर बिता चुके हैं। वहीं, गरम और उमस भरे मौसम को देखते हुए उम्मीद है कि तेज़ गेंदबाज़ जसप्रीत बुमराह को शुक्रवार को होने वाले ओमान के खिलाफ मुकाबले में आराम दिया जा सकता है।

यूएस ओपन विजेता आर्यना सबालेंका चोट के कारण चाइना ओपन से हटीं

एजेंसी

नई दिल्ली। बेलारुस की दिग्गज महिला टेनिस खिलाड़ी और यूएस ओपन चैंपियन आर्यना सबालेंका ने चोट के कारण चाइना ओपन से अपना नाम वापस ले लिया है। आयोजकों ने उक्त जानकारी दी। इस महीने की शुरुआत में अमांडा अनिसिमोवा को हराकर लगातार दूसरी बार यूएस ओपन और चौथा ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने वाली बेलारूसी खिलाड़ी पिछले साल बीजिंग में डब्ल्यूटीए 1000 इवेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुँची थीं। सबालेंका ने आयोजकों द्वारा दिए गए एक बयान में कहा, यूएस ओपन के बाद लगी एक छोटी सी चोट के कारण मुझे इस साल चाइना ओपन से हटने की घोषणा करते हुए दुख हो रहा है। उन्होंने आगे कहा, मैं साल के बाकी समय में पूरी तरह स्वस्थ रहने पर ध्यान केंद्रित करूँगी। अमेरिकी कोको गॉफ़ चाइना ओपन की गत विजेता हैं, जो 24 सितंबर से 5 अक्टूबर तक बीजिंग के नेशनल टेनिस सेंटर में आयोजित होगा।

मेजर लीग सॉकर :इंटर मियामी ने सिएटल साउंडर्स को 3-1 से हराया

एजेंसी

फोर्ट लौडरडेल। लियोनेल मेसी ने एक गोल और एक असिस्ट करते हुए इंटर मियामी को मंगलवार रात सिएटल साउंडर्स पर 3-1 की जीत दिलाई। यह मुकाबला लीग्स कप फाइनल में साउंडर्स से हार के दो हफ्ते बाद खेला गया। लीग्स कप फाइनल में 31 अगस्त को साउंडर्स ने इंटर मियामी को 3-0 से हराया था। लेकिन इस बार मेसी ने 12वें मिनट में शानदार आउटसाइड-ऑफ-द-फुट पास देकर जोर्डी आल्बा को असिस्ट किया और टीम को शुरुआती बढ़त दिलाई।

41वें मिनट में आल्बा ने वापसी करते हुए मेसी को असिस्ट किया, जिन्होंने गेंद को नेट में डालकर स्कोर 2-0 कर दिया। दूसरे हाफ की शुरुआत में ही रोड्रिगो डी पॉल के कॉर्नर पर इयान फ्रे ने हेडर से गोल कर इंटर मियामी की बढ़त 3-0 कर दी। सिएटल के लिए ओबेड वर्गास ने 69वें मिनट में गोल किया, जो मेक्सिको के स्वतंत्रता दिवस पर आया। इंटर मियामी के स्टार लुइस सुवारेज़ इस मैच में भी नहीं खेले। वह लीग्स कप फाइनल में विपक्षी कोचिंग स्टाफ पर थूकने की घटना के बाद लगी तीन मैचों की पाबंदी का दूसरा मुकाबला मिस कर रहे थे। मेसी के पास 76वें मिनट में दूसरा गोल करने का मौका था, लेकिन गोलकीपर स्टीफन फ्रे ने उनका प्रयास रोक दिया। वहीं, इंटर मियामी के नए खिलाड़ी माटेओ सिल्वेट्टी ने क्लब के लिए डेब्यू किया।

इंटर मियामी अब अपना अगला मुकाबला शनिवार को डी.सी. यूनाइटेड के खिलाफ खेलेगी, जबकि सिएटल साउंडर्स ऑस्टिन एफसी से भिड़ेगी।

सर्वेश कुशारे ने रचा इतिहास, पुरुष ऊंची कूद फाइनल में छठे स्थान पर रहे

एजेंसी

नई दिल्ली। टोक्यो में आयोजित वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में भारत के सर्वेश कुशारे ने पुरुष ऊंची कूद स्पर्धा के फाइनल में नया व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन (पर्सनल बेस्ट) दर्ज करते हुए संयुक्त रूप से छठा स्थान हासिल किया। कुशारे ने अपने आखिरी प्रयास में 2.28 मीटर की ऊंचाई पार की, जो उनके करियर का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा।

हालांकि पदक की दौड़ में बने रहने के लिए उन्हें राष्ट्रीय रिकॉर्ड (2.29 मीटर) तोड़ते हुए 2.31 मीटर पार करना जरूरी था, लेकिन तीनों प्रयासों में वे ऐसा करने में असफल रहे। इसी ऊंचाई पर अमेरिका के टायस विल्सन ने भी अपना सीज़न बेस्ट दर्ज किया और कुशरे के साथ छठे स्थान पर रहे। टूर्नामेंट का स्वर्ण पदक न्यूजीलैंड के मौजूदा ओलंपिक चैंपियन हेमिश केर ने 2.36 मीटर की सर्वश्रेष्ठ छलांग लगाकर जीता। दक्षिण कोरिया के सांगह्योक वू ने 2.34 मीटर के साथ रजत पदक, जबकि चेकिया के जान स्टेफेला ने 2.31 मीटर कूदकर कांस्य पदक अपने नाम किया। क्वालिफिकेशन राउंड में कुशारे ने 2.25 मीटर की छलांग लगाकर इतिहास रचा था। वे वर्ल्ड चैंपियनशिप के ऊंची कूद फाइनल में जगह बनाने वाले पहले भारतीय पुरुष एथलीट बने।

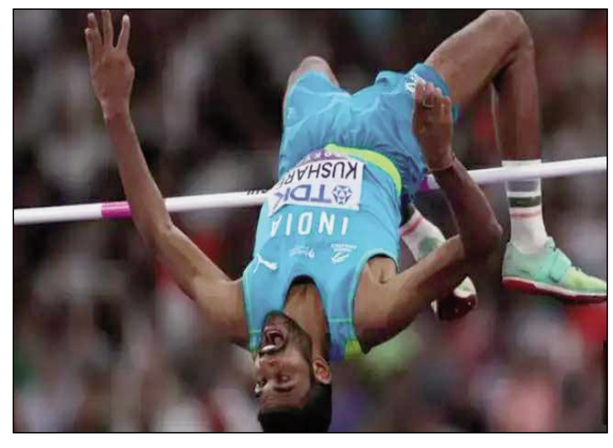

भोपाल की बड़ी झील में राजा भोज मल्टी क्लास सेलिंग चैंपियनशिप का आगाज, मंत्री सारंग ने किया शुभारंभ

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के खानूगांव स्थित अपर लेक (बड़ी झील) में राजा भोज मल्टी क्लास सेलिंग चैंपियनशिप- 2025 का भव्य आगाज हुआ। इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता का प्रदेश के खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने फ्लेग आफ कर शुभारंभ किया। इस अवसर पर मंत्री सारंग ने कहा कि भोपाल सिर्फ ताल-तलैयों की नगरी ही नहीं, बल्कि वॉटर स्पोर्ट्स का एक उभरता हुआ वैश्विक गंतव्य है। मध्य प्रदेश वॉटर स्पोर्ट्स में देश का अग्रणी राज्य है। इसका प्रमाण श्रीनगर में आयोजित देश के पहले खेलो इंडिया वॉटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल में हमारे खिलाड़ियों द्वारा अर्जित की गई सफलता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी मध्य प्रदेश के खिलाड़ियों ने अनेक पदक जीतकर राज्य का मान बढ़ाया है। कार्यक्रम में जीओसी पीएम सब एरिया, मेजर जनरल सुमित काब्थियाल, कमोडोर ईएमई ईसी ब्रिगेडियर अनिल दास, एसएम (सेवानिवृत्त) वाइस प्रेसिडेंट वायएआई मेजर जनरल सोमा पिल्लई, ब्रिगेडियर जी.एस. जुलका (सेवानिवृत्त) सहित सेना एवं खेल विभाग के अधिकारी भी उपस्थित रहे। मंत्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में खेलों के लिए एक सकारात्मक और सशक्त वातावरण बना है। भारत 2036 के ओलंपिक खेलों की मेजबानी की तैयारी कर रहा है। यदि भारत को यह अवसर मिलता है, तो मध्यप्रदेश में शूटिंग, घुड़सवारी और विशेषत~ वॉटर स्पोर्ट्स के आयोजन के लिये उत्कृष्ट अधोसंरचना उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि भोपाल का बड़ा तालाब और मां नर्मदा का तट अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान हैं। इस दिशा में उन्होंने केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया से भी आग्रह किया है कि मध्य प्रदेश को वॉटर स्पोर्ट्स के आयोजन का प्रमुख केंद्र बनाया जाए। खेल मंत्री सारंग ने कहा कि खानूगांव अपर लेक पर आर्मी ने वॉटर स्पोर्ट्स की आधुनिक अधोसंरचना विकसित की है। इसे और बेहतर बनाने के लिए खेल एवं युवा कल्याण विभाग, भारतीय नौकायन संघ (Yachting Association of India) और आर्मी मिलकर काम करेंगे। उन्होंने कहा कि इस संयुक्त प्रयास से भोपाल को देश का वॉटर स्पोर्ट्स हब बनाने की दिशा में कार्य करेंगे।

बिली जीन किंग कप : पाओलिनी ने दिलाई इटली को सेमीफाइनल में जगह

एजेंसी

शेनझेन। मौजूदा चैंपियन इटली ने मेज़बान चीन को 2-0 से हराकर बिली जीन किंग कप टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। विश्व की नंबर 8 खिलाड़ी जैस्मिन पाओलिनी ने रोमांचक मुकाबले में वांग शिन्यू को 4-6, 7-6(4), 6-4 से मात देकर इटली की जीत सुनिश्चित की। पाओलिनी दूसरे सेट में 3-5 से पिछड़ रही थीं, लेकिन उन्होंने शानदार वापसी करते हुए टाईब्रेकर जीता और तीसरे सेट में भी दबाव झेलते हुए मुकाबला अपने नाम किया इससे पहले, एलिसाबेटा कोच्चियारेट्टो ने जबरदस्त जुझारूपन दिखाते हुए युआन युए को 4-6, 7-5, 7-5 से हराया। वह एक सेट और निर्णायक सेट में 0-4 से पिछड़ने के बावजूद वापसी कर जीत हासिल करने में सफल रहीं। दोनों मैच लगभग तीन-तीन घंटे तक चले। सेमीफाइनल में इटली का मुकाबला बुधवार को होने वाले स्पेन और यूक्रेन के बीच क्वार्टर फाइनल के विजेता से होगा।

एशिया कप 2025 : बांग्लादेश ने अफगानिस्तान को 8 रन से हराया, तंजिद हसन और गेंदबाजों ने दिखाया दम

एजेंसी

अबू धाबी। एशिया कप 2025 के ग्रुप-बी के नौवें मैच में बांग्लादेश ने अफगानिस्तान को रोमांचक मुकाबले में 8 रन से हराकर टूर्नामेंट में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। शेख जायद स्टेडियम में खेले गए इस मैच में बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट पर 154 रन बनाए। जवाब में अफगानिस्तान की टीम लक्ष्य का पीछा करते हुए 146 रन पर ऑलआउट हो गई। बांग्लादेश की ओर से सबसे बड़ी पारी तंजिद हसन तमिम ने खेली। उन्होंने 41 गेंदों पर 52 रन बनाकर टीम को ठोस शुरुआत दिलाई। मध्यम क्रम में सैफ हसन ने 30 रन जोड़े, जबकि कप्तान लिटन दास ने 25 रन का योगदान दिया। अफगानिस्तान के गेंदबाजों में नूर अहमद सबसे सफल रहे, उन्होंने 4 ओवर में 25 रन देकर 2 विकेट झटके। लक्ष्य का पीछा करते हुए अफगानिस्तान की शुरुआत अच्छी रही। ओपनर रहमानुल्लाह गुरबाज ने 35 रन बनाए, जबकि अजमतुल्लाह उमरजई ने 30 रन की पारी खेली। लेकिन मध्यक्रम में लगातार विकेट गिरने से अफगानिस्तान की पारी लड़खड़ा गई। कप्तान राशिद खान ने कुछ ताबड़तोड़ शॉट लगाए, लेकिन टीम को जीत तक नहीं पहुंचा सके। बांग्लादेश के गेंदबाजों ने दबाव बनाए रखा। रिशाद हुसैन और टास्किन अहमद ने 2-2 विकेट लिए, जबकि मुसतफ़िजुर रहमान और अन्य गेंदबाजों ने भी सटीक लाइन-लेंथ से अफगानी बल्लेबाजों को खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया। आखिरी ओवरों में अफगानिस्तान को जीत के लिए तेज रन चाहिए थे, लेकिन बांग्लादेशी गेंदबाजों ने संयम दिखाते हुए टीम को 146 रन पर रोक दिया। इस जीत के साथ बांग्लादेश ने टूर्नामेंट में अपनी सुपर-4 की उम्मीदों को और मजबूती दी।

पीकेएल-12 तमिल थलाइवाज ने बुल्स की जीत का सिलसिला तोड़ा

एजेंसी

जयपुर। प्रो कबड्डी लीग (सीजन-12) के साउदर्न डर्बी मुकाबले में तमिल थलाइवाज ने दमदार प्रदर्शन करते हुए बेंगलुरु बुल्स को 35-29 से पराजित किया। इस जीत के साथ थलाइवाज ने लगातार दूसरी जीत दर्ज की, जबकि बुल्स का चार मैचों से जारी विजय अभियान थम गया। थलाइवाज की जीत के नायक रहे अर्जुन देसवाल, जिन्होंने 13 अंक बटोरे। उनके साथ नरेंद्र कंडोला (5 अंक) और डिफेंस में रौनक (4), नितेश (3) और हिमांशु (3) ने शानदार प्रदर्शन किया। बुल्स के लिए ईरानी रेडर अलीरेजा मीरजाखानी ने 10 अंक हासिल किए, लेकिन उन्हें टीम का साथ नहीं मिला।

पहले हाफ में बुल्स ने आक्रामक खेल दिखाते हुए 20-14 की बढ़त बनाई। लेकिन दूसरे हाफ में देसवाल और थलाइवाज डिफेंस ने जोरदार वापसी कर मैच पलट दिया। अंतिम मिनटों में बुल्स ने अंतर कम करने की कोशिश की, पर थलाइवाज ने बढ़त बरकरार रखते हुए मैच अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ थलाइवाज ने पांच मैचों में तीसरी जीत हासिल की, जबकि बुल्स को आठ मैचों में चौथी हार का सामना करना पड़ा।

पीकेएल-12 : बंगाल वारियर्स की पहली जीत, यूपी योद्धाज को हराया

एजेंसी

जयपुर। लगातार चार हार झेल चुकी बंगाल वारियर्स ने आखिरकार जीत का स्वाद चख लिया। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के 12वें सीजन के 35वें मुकाबले में सवाई मानसिंह इंडोर स्टेडियम में खेले गए रोमांचक मैच में बंगाल ने यूपी योद्धाज को 41-37 से हराया। इस जीत के नायक रहे देवांक, जिन्होंने 17 अंक बटोरे। उन्हें मनप्रीत (5 अंक) का अच्छा साथ मिला जबकि डिफेंस में आशीष ने हाई-5 लगाकर यूपी की रीढ़ तोड़ दी। यूपी के लिए गगन गौड़ा (7 अंक) और गुमान सिंह (5 अंक) ने संघर्ष किया। डिफेंस में हितेश और आशू ने चार-चार अंक लेकर शुरुआत में बंगाल को दबाव में रखा, लेकिन बाद में देवांक का तूफान थामना मुश्किल हो गया। यूपी ने शुरुआती बढ़त लेते हुए बंगाल को ऑलआउट कर 10-4 की लीड बना ली थी। हाफटाइम तक स्कोर 18-13 रहा और वारियर्स पिछड़ रहे थे। दूसरे हाफ में देवांक की लगातार सफल रेड्स और आशीष के शानदार टैकल्स ने मैच का रुख पलट दिया। 30वें मिनट तक यूपी 25-22 से आगे था, लेकिन देवांक की एक ही रेड ने यूपी को ऑलआउट कर बंगाल को बढ़त दिला दी। अंतिम क्षणों में वारियर्स ने एक और ऑलआउट झोंक कर मैच अपनी झोली में डाल लिया और जीत की पटरी पर लौट आए।

बैडमिंटन टूर्नामेंट : शीर्ष वरीय यूपी की मानसी सिंह ने शानदार जीत के साथ अगले दौर में किया प्रवेश

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की स्टार शटलर मानसी सिंह ने योनेक्स सनराइज डॉ. अखिलेश दास गुप्ता मेमोरियल ऑल इंडिया सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट में महिला एकल में क्वालीफायर महाराष्ट्र की मधुमिता नारायण को आसानी से 21-21-14 से हराकर अपने अभियान की बेहतरीन शुरुआत की। इसी के साथ आज से टूर्नामेंट में मुख्य ड्रॉ के मुकाबलों की शुरुआत हो गई। भारतीय बैडमिंटन एसोसिएशन (बीएआई) के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश बैडमिंटन एसोसिएशन द्वारा बीबीडी यूपी बैडमिंटन अकादमी में आयोजित टूर्नामेंट में दस लाख रुपये की प्राइजमनी रखी गई है। शीर्ष वरीय मानसी सिंह अब अगले दौर में केरल की पवित्रा नवीन से भिड़ेंगी जिन्होंने राजस्थान की तनीशा सिंह को 21-10, 21-13 से पराजित किया। महिला एकल में 13वीं वरीय यूपी की अमोलिका सिंह को क्वालीफायर के खिलाफ जीत दर्ज करने के लिए खासी मशक्कत करनी पड़ी। यूपी की तनीशा सिंह व तरनजीत कौर ने भी अगले दौर में प्रवेश किया। पुरुष एकल में यूपी के राजन यादव व क्वालीफायर अंश विशाल गुप्ता भी अगले दौर में पहुंच गए। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने किया उद्घाटनटूर्नामेंट का औपचारिक उद्घाटन उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष सतीश महाना ने किया। इस अवसर पर प्रमुख सचिव विधानसभा प्रदीप दुबे विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे।मुख्य अतिथि सतीश महाना ने अपने आशीर्वचन में खिलाड़ियों को मछली की आंख की तरह अपने लक्ष्य पर पूरा ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी, जिससे वे खेल की दुनिया में अपनी पहचान बना सकें। उन्होंने यह भी कहा कि जीतने पर आपके माता-पिता, आयोजनकर्ता और खेल प्रेमी आपकी सराहना करते हैं। वहीं हार का सामना भी धैर्य और आत्मबल से करना होता है। उन्होंने कहा कि यह टूर्नामेंट देश भर से आए खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के साथ उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों को भी महत्वपूर्ण मंच प्रदान कर रहा है।

टूर्नामेंट को अंतरराष्ट्रीय बनाने का लक्ष्य : विराज सागर दासउत्तर प्रदेश बैडमिंटन एसोसिएशन के चेयरमैन विराज सागर दास ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि टूर्नामेंट में 27 राज्यों के 1396 खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। यह टूर्नामेंट मेरे पूज्य पिता डॉ. अखिलेश दास गुप्ता की स्मृति में वर्ष 2018 से प्रतिवर्ष आयोजित हो रहा है। हमारा प्रयास है कि आने वाले वर्षों में इस टूर्नामेंट को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के रूप में स्थापित किया जाए। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भी आभार जताया जिन्होंने बैडमिंटन को प्रदेश का खेल घोषित किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री का आशीर्वाद हमें प्रदेश में बैडमिंटन के विकास के लिए निरंतर मार्गदर्शन देता है। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश बैडमिंटन एसोसिएशन के सचिव डॉ. सुधर्मा सिंह, उपाध्यक्ष अरुण कक्कड़, कोषाध्यक्ष आनंद खरे, संयुक्त सचिव राजेश सक्सेना, लखनऊ बैडमिंटन संघ के सचिव अनिल ध्यानी सहित बड़ी संख्या में खेल प्रेमी मौजूद रहे।

परिणामः---पुरुष एकल मेंशीर्ष वरीय दिल्ली के जिनपॉल एस ने कर्नाटक के ध्यान संतोष को 21-12, 21-14 से हराया। यूपी के राजन यादव ने दिल्ली के अद्वित भार्गव को 21-19, 21-19 से और क्वालीफायर यूपी के अंश विशाल गुप्ता ने महाराष्ट्र के अथर्व जोशी को 21-19, 12-21, 21-11 से हराया।

--महिला एकल में13वीं वरीय यूपी की अमोलिका सिंह ने क्वालीफायर से मुख्य ड्रॉ में पहुंची यूपी की ही सिमरन चौधरी को रोमांचक मुकाबले में 21-13, 19-21, 21-14 से शिकस्त दी। यूपी की तरनजीत कौर ने कर्नाटक की दिशा संतोष को 21-18, 21-7 से व तनीषा सिंह ने उत्तराखंड की लावण्या कार्की को 21-15, 21-18 से हराया। चौथी वरीय राजस्थान की साक्षी फोगाट ने अपने ही राज्य की सुहासी वर्मा को 25-23, 21-16 से शिकस्त दी। मिश्रित युगल मेंकर्नाटक की शीर्ष वरीय असिथ सूर्या व अमृता पी. ने क्वालीफायर यूपी के दिव्यम अरोड़ा व दिल्ली की लिखिता श्रीवास्तव को 21-16, 22-20 से हराया।

अभिनेत्री ऐश्वर्या लक्ष्मी ने खुद के लिए लिया बड़ा फैसला

मलयालम और तमिल सिनेमा की जानी-मानी अभिनेत्री ऐश्वर्या लक्ष्मी ने हाल ही में एक बड़ा फैसला लिया है। उन्होंने सोशल मीडिया से दूरी बनाकर अपने अभिनय और फिल्मों पर ध्यान केंद्रित करने का ऐलान किया है। ऐश्वर्या का कहना है कि वक्त के साथ उन्होंने महसूस किया कि सोशल मीडिया ने उनकी असली सोच और जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को उनसे छीन लिया है। ऐश्वर्या लक्ष्मी ने बताया कि लंबे समय तक उन्हें यह विश्वास दिलाया गया कि एक्टिंग करियर को आगे बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया जरूरी है। इंडस्ट्री में बने रहने और दर्शकों से जुड़े रहने के लिए उन्होंने भी इस तरीके को अपनाया। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें महसूस हुआ कि यह प्लेटफॉर्म उनके काम में बाधा बन रहा है। ये ना सिर्फ उनकी तैयारी को प्रभावित कर रहा था, बल्कि उनके निजी जीवन की सहजता भी खो रही थी। उन्होंने पोस्ट करते हुए लिखा कि इंटरनेट की चमक-दमक में फंसकर वह उस ओर मुड़ गई जो असल में उन्हें करना ही नहीं था। लगातार लाइक और कमेंट्स की होड़ में उनकी भाषा, सोच और अनुभव कहीं न कहीं पीछे छूट गए।
अभिनेत्री ने कहा कि सोशल मीडिया छोड़ना उनके जीवन का पहला मौलिक विचार है, जिसे उन्होंने पूरी तरह अपनाया। उनका मानना है कि कलाकार को किसी सांचे में ढालकर नहीं देखा जाना चाहिए। वह चाहती हैं कि उनकी पहचान उनके अभिनय और सिनेमा से बने, न कि सिर्फ इंस्टाग्राम पोस्ट्स और ट्रेंड्स से। साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि इस फैसले के बाद शायद लोग उन्हें भूल जाएं, लेकिन वह इस जोखिम को उठाने के लिए तैयार हैं।

सिनेमा पर देना चाहती हैं ध्यान

ऐश्वर्या ने साफ किया कि अब उनका लक्ष्य सिनेमा बनाना और जीना है। वह चाहती हैं कि आगे की उनकी फिल्मों में वही गहराई और संवेदनशीलता झलके, जिसे वह अपनी असल जिंदगी में महसूस करती हैं। उन्होंने कहा कि अगर भविष्य में वह सचमुच कुछ बेहतर रचनाएं करती हैं, तो दर्शक उन्हें पुराने अंदाज में प्यार दें।

घाटी की परफॉर्मेंस से सदमे में अनुष्का शेट्टी!

भावुक नोट लिखने के बाद सोशल मीडिया से लिया ब्रेक

अनुष्का शेट्टी ने बाहुबली में देवसेना के रोल में सबका दिल जीत लिया और हर कोई उनका फैन बन गया था। उन्होंने इसके बाद कई और फिल्में कीं, पर अब एक्ट्रेस के एक फैसले ने फैंस को चौंका दिया है। अनुष्का शेट्टी ने सोशल मीडिया से ब्रेक लेने का फैसला किया है और पोस्ट लिखा है। अनुष्का ने यह फैसला अपनी हाल ही रिलीज हुई फिल्म घाटी को मिले ठंडे रिस्पॉन्स के बाद लिया है। अनुष्का शेट्टी का असली नाम है स्वीटी है, पर ऑनस्क्रीन ऐसी धाकड़ हैं कि बड़े-बड़े स्टार्स भी इनके आगे फीके पड़ जाते हैं। फैंस तो उन्हें लेडी सुपरस्टार कहकर बुलाते हैं, पर अब यही सुपरस्टार सोशल मीडिया से ब्रेक ले रही है।

अनुष्का शेट्टी का भावुक नोट- जल्द मिलूंगी

अनुष्का ने अपने X अकाउंट पर एक नोट लिखा, जिसमें बताया कि वह अब असली दुनिया से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया से दूर जा रही हैं। अनुष्का शेट्टी ने लिखा, ब्लू लाइट से कैंडल लाइट की ओर जा रही हूं। कुछ समय के लिए सोशल मीडिया से दूर जा रही हूं ताकि असली दुनिया से दोबारा जुड़ सकूं। जल्द लौटूंगी और भी कहानियों और ढेर सारा प्यार लेकर।

फैंस हुए मायूस, अनुष्का शेट्टी को यूं दिया हौसला

जहां अनुष्का शेट्टी के सोशल मीडिया से ब्रेक लेने पर फैंस मायूस हो गए, उन्हें इस बात की भी खुशी हुई कि उनकी फेवरेट एक्ट्रेस अब असली दुनिया में लौट रही हैं। एक फैन ने लिखा, ओएमजी! आप रियल वर्ल्ड में वापसी कर रही हैं, इंतजार रहेगा आपका स्वीटी। एक और फैन का ट्वीट है, आपने काफी उतार-चढ़ाव देख लिया है स्वीटी, ये नया नहीं है। अब बस इंतजार है उस लेडी सुपरस्टार का, जिसने इतिहास रचा था। ब्रेक लो और और भी मजबूत होकर लौटो। वहीं, एक और कमेंट ने दिल जीत लिया- स्वीटी, अच्छे डायरेक्टर्स के साथ काम कीजिए, आपकी डेडिकेशन का कोई मुकाबला नहीं। आप ऑल-टाइम बेस्ट हैं।

अब इस फिल्म में दिखेंगी अनुष्का

अनुष्का शेट्टी की फिल्म घाटी की बात करें, तो यह 5 सितंबर को थिएटर्स में रिलीज हुई। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ठंडी पड़ गई और एक हफ्ते में सिर्फ 6.64 करोड़ रुपये ही कमा पाई है। इसे कृष्णा जगर्लामुड़ी ने डायरेक्ट किया है। फिल्म में अनुष्का के साथ विक्रम प्रभु हैं। अनुष्का शेट्टी अब जल्द ही रोजिन थॉमस की हॉरर-फैंटेसी थ्रिलर कथानार-द वाइल्ड सोर्सरर में नजर आएंगी। इससे वह मलयालम फिल्मों में डेब्यू करने जा रही हैं। इसमें वह नीला नाम की बुनकर का रोल प्ले करेंगी।

मेरा लक्ष्य साल में 50 प्रोजेक्ट करना नहीं, बल्कि बेहतरीन काम को चुनना है

वेटरन एक्टर शक्ति कपूर के बेटे सिद्धांत कपूर इन दिनों वेब सीरीज मंडला मर्डर्स को लेकर चर्चा में हैं। यह साइकोलॉजिकल थ्रिलर सीरीज उन्हें स्क्रिप्ट लेवल पर ही अच्छी लगी। वे कहते हैं... इसकी स्क्रिप्ट की रहस्यमयता और मेरे डार्क किरदार की चुनौती ने मुझे तुरंत हां कहने पर मजबूर कर दिया। मुझे हमेशा ऐसे रोल पसंद आते हैं जो मुझे मेरी सीमाओं से आगे ले जाएं। इस बार भी वही हुआ।

सीरीज के कुछ सीन शारीरिक रूप से मेरे लिए बड़े ही चुनौतीपूर्ण रहे...

किरदार की तैयारी को लेकर सिद्धांत खुद को ऑन-द-स्पॉट एक्टर मानते हैं। उन्होंने कहा... मैंने स्विच ऑन और स्विच ऑफ आर्ट का इस्तेमाल किया। हालांकि, शूटिंग आसान नहीं थी। कम रोशनी और रात के सीन, साथ ही एक्शन सीक्वेंस ने काफी मेहनत कराई। एक सीन में हाथ काटने का विजुअल था जो शारीरिक रूप से बेहद ही चुनौतीपूर्ण रहा।

अलग-अलग तरह के रोल करना ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है...

ओटीटी पर काम को लेकर सिद्धांत बेहद सकारात्मक सोच रखते हैं। उनके मुताबिक, ओटीटी ने सभी के लिए नए दरवाजे खोले हैं। आगे भी मैं हर तरह के रोल निभाना चाहता हूं। चाहे पॉजिटिव हो, नेगेटिव या कॉमेडी। मैं साल में 50 फिल्में करने का इरादा नहीं रखता। करियर में अलग-अलग तरह के रोल करना ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है।

श्रद्धा के डेडिकेशन से हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है...

बहन श्रद्धा कपूर के साथ स्क्रीन शेयर करने पर सिद्धांत ने कहा.. अगर हमें कोई अच्छी स्क्रिप्ट मिलती है, तो मैं श्रद्धा के साथ काम करना जरूर पसंद करूंगा। हम दोनों भाई-बहन होने के साथ-साथ अच्छे दोस्त भी हैं और एक-दूसरे को बहुत अच्छे से समझते हैं। हमारे बीच एक नैचुरल बॉन्ड है, जो परदे पर भी झलक सकता है। श्रद्धा एक बेहतरीन एक्ट्रेस हैं, उनकी एनर्जी और डेडिकेशन से हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है।

कौन हैं रितिका नायक?

मिराय में जीता सबका दिल

तेजा सज्जा और मांचू मनोज की एक्शन-एडवेंचर से भरी मायथोलॉजिकल फिल्म 'मिराय' सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। दर्शकों को फिल्म के विजुअल्स और वीएफएक्स काफी प्रभावित कर रहे हैं। लेकिन इस फिल्म के रिलीज होते ही अगर किसी को सबसे ज्यादा सर्च किया जा रहा है तो वो हैं फिल्म में नजर आई रितिका नायक। रितिका फिल्म की लीड एक्ट्रेस हैं। अब उनकी खूबसूरती और मासूमियत ने लोगों को प्रभावित किया है। दिल्ली में एक ओड़िया परिवार में जन्मीं रितिका नायक ने दिल्ली पब्लिक स्कूल से पढ़ाई की है। साल 2019 में रितिका ने दिल्ली टाइम्स फ्रेश फेस का 12वां सीजन भी जीता है।

2022 में किया फिल्मों में डेब्यू

रितिका को शुरू से ही एक्टिंग की दुनिया में जाना था। कई जगह ऑडिशन देने के बाद रितिका को साल 2022 में आई 'अशोक वनमलो अर्जुन कल्याणम' में एक्टिंग करने का मौका मिला। इस फिल्म से रितिका ने तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में अपना डेब्यू किया। इस फिल्म में रितिका के साथ विश्वक सेन और रुखसार ढिल्लन भी प्रमुख भूमिका में नजर आए हैं। इस फिल्म के लिए रितिका को स्ढ्ढढ्ढरूअवॉर्ड में बेस्ट डेब्यू एक्ट्रेस का नॉमिनेशन भी मिला। इसके बाद रितिका 2023 में आई नानी और मृणाल ठाकुर की फिल्म 'हाय नन्ना' में भी नजर आई थीं। हालांकि, इस फिल्म में उनका सिर्फ कैमियो था। इसके बाद अब 'मिराय' रितिका की तीसरी फिल्म है। इस फिल्म में वो मुख्य भूमिका में हैं। इसके अलावा उनकी आगामी फिल्मों में विजय देवरकोंडा के भाई आनंद देवरकोंडा की फिल्म 'डुएट' शामिल है।

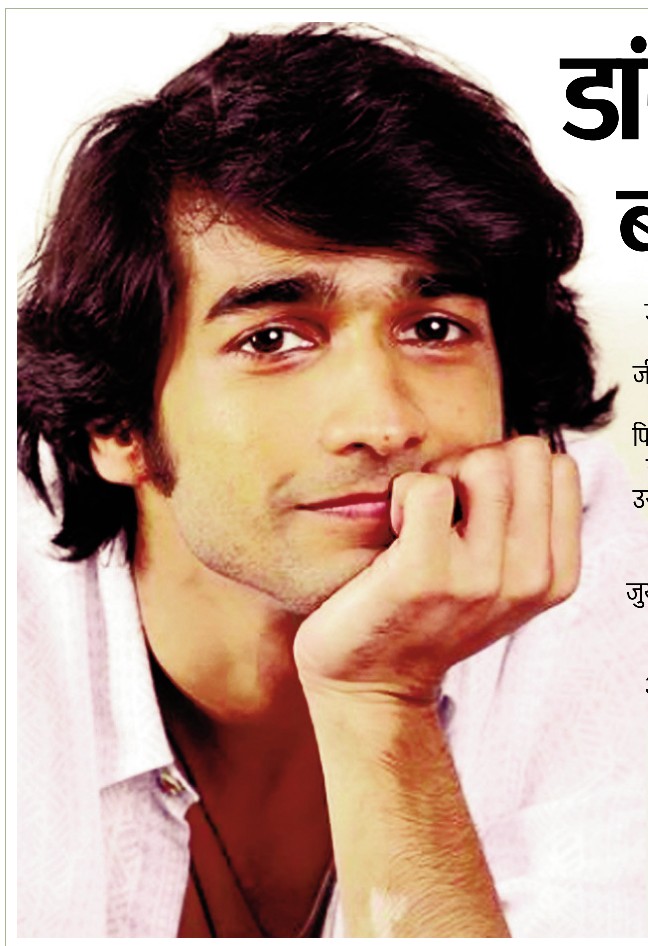

डांस की वजह से ऐक्टर बनने में काफी मदद मिली

डांसर के रूप में वाहवाही बटोरने वाले शांतनु माहेश्वरी अब बतौर ऐक्टर भी लोगों का दिल जीत रहे हैं। गंगूबाई काठियावाड़ी और औरों में कहां दम था जैसी फिल्मों के बाद अब वह फिल्म लव इन वियतनाम में लीड भूमिका निभा रहे हैं। शांतनु के मुताबिक, डांस की वजह से उन्हें ऐक्टर बनने में काफी मदद मिली, क्योंकि हर डांसर में एक ऐक्टर होता ही है।
इन दिनों शांतनु की तरह डांसर रहे राघव जुयाल भी ऐक्टर के रूप में धमाल मचा रहे हैं। ज्यादातर डांसर्स के ऐक्टिंग की ओर रुख करने को लेकर शातनु का कहना है, अगर आप डांसर हैं, तो ऐक्टिंग खुद-ब-खुद आ जाती है। डांस में भी मुद्राएं होती हैं, आपको आंखों से भाव दिखाने होते हैं। आप सिर्फ स्टेप्स करके अच्छे डांसर नहीं बन सकते। आप अच्छे डांसर तभी होते हैं, जब उन भावों को भी दिखाते हैं। डांस आपको रिद्म सिखाता है, जो ऐक्टिंग में भी काम आता है। इसलिए, मेरा मानना है कि डांस से ऐक्टिंग में मदद मिलती है। बाकी, जरूरी नहीं कि हर डांसर आगे ऐक्टर ही बने, यह सबकी अपनी-अपनी चॉइस है।
गंगूबाई काठियावाड़ी और औरों में कहां दम था के बाद शांतनु लव इन वियतनाम में भी एक जुनूनी आशिक की भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन आज के घोस्टिंग, बेंचिंग वाले दौर में वह इस शिद्दत वाले प्यार से कितना रिलेट करते हैं? इस पर वह कहते हैं, ये चीजें पहले भी हुआ करती थीं, बस ये शब्द नहीं गढ़े गए थे। वरना दिलफेंक आशिक पहले भी घूमते थे। कैसानोवा पहले भी होते थे। बेंचिंग का कॉन्सेप्ट पहले भी था, बस ये शब्द नहीं बने थे। अब इनका इस्तेमाल ज्यादा होने लगा है। हालांकि, मैं तो शिद्दत वाले प्यार में यकीन करता हूं।
फिल्म में शांतनु के साथ सोशल मीडिया स्टार अवनीत कौर भी हैं। इन दिनों इंडस्ट्री में टैलंट के बजाय सोशल मीडिया फॉलोअर्स के आधार पर कास्टिंग करने को लेकर भी बहस छिड़ी हुई है। इस बारे में शांतनु का कहना है, कभी-कभी इस बात का बुरा लगता है, पर जो चीज चल रही है, उससे आपको समझौता करना पड़ेगा। आपके या मेरे बोलने से कुछ होने नहीं वाला है। मार्केट में अगर यह चल रहा है तो आप इस पर काम करिए या इसे स्वीकार लीजिए। हालांकि, ऐसा नहीं है कि हर कोई इसी आधार पर कास्टिंग कर रहा है, लेकिन निश्चित तौर पर अगर आपके सोशल मीडिया फॉलोअर्स हैं तो बहुत बड़ा प्लस पाइंट है।

राज सर बोले आज को इंजॉय करो

फिल्म में राज बब्बर जैसे सीनियर अभिनेता के साथ काम के अनुभव पर शांतनु ने बताया, मेरी राज बब्बर सर के साथ बहुत अच्छी बातचीत हुई। उन्होंने बिल्कुल बिना किसी फिल्टर के मुझे अपनी जिंदगी के अनुभवों के बारे में बताया। उन्होंने बड़े पते की बात ये कही कि अभी जिस पल में हो उसे एंजॉय करो, क्योंकि हम ऐक्टर्स की जिंदगी इतनी अनिश्चित होती है कि किसी को नहीं पता कि ये वक्त फिर आएगा या नहीं। कभी हर कोई आपके साथ काम करना चाहेगा, तो कभी कोई पानी भी नहीं पूछेगा तो अभी जो है, उसका पूरा लुत्फ लो।

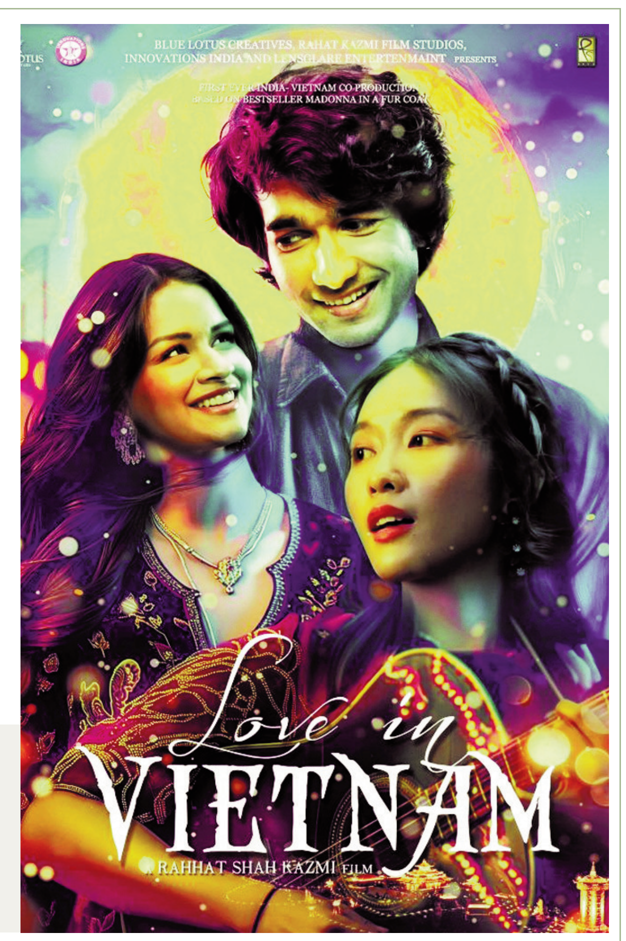

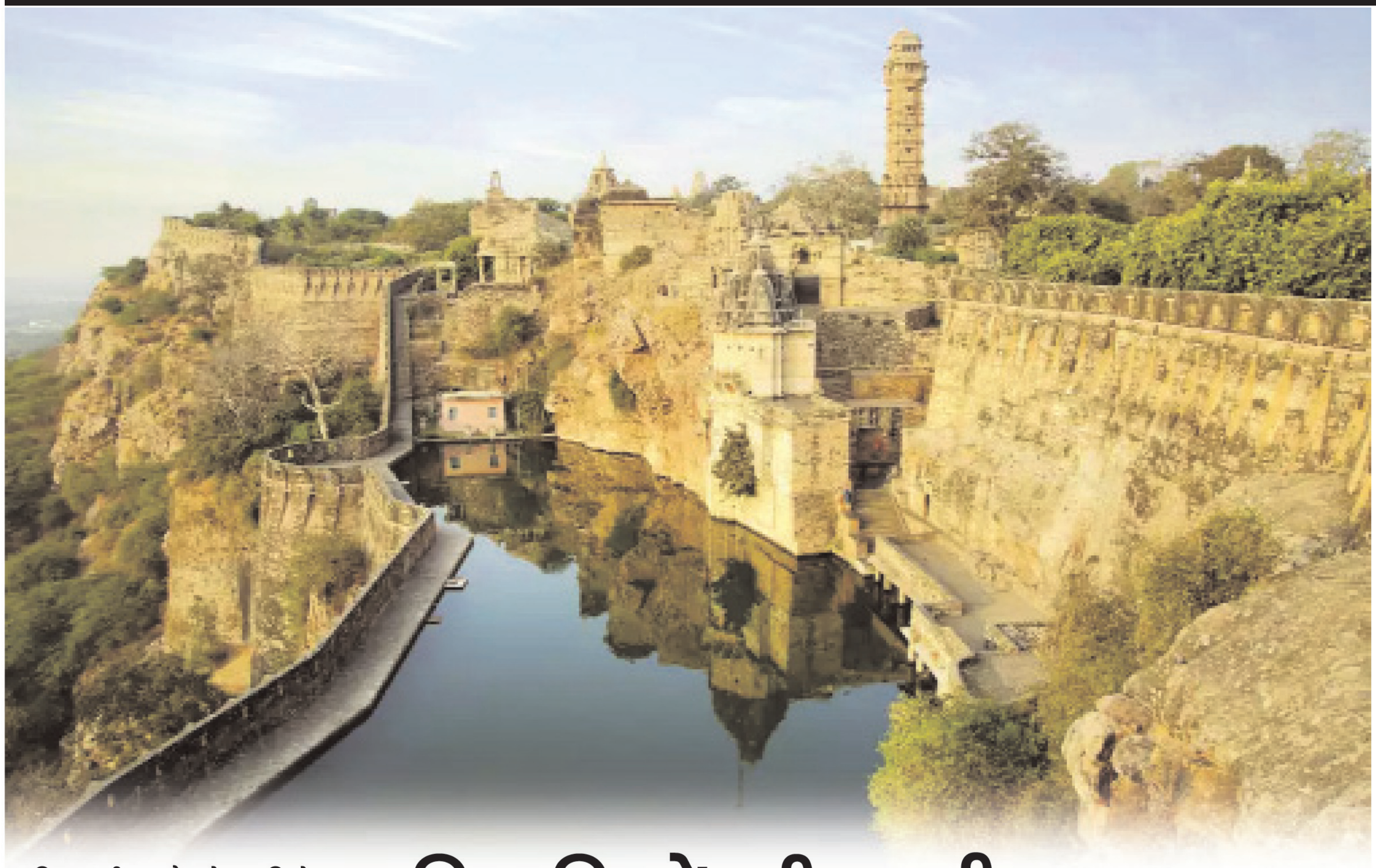

बलिदानियों की धरती चित्तौड़गढ़

बलिदान की उन सैंकड़ों कहानियों का गवाह रहा हूं, जिन पर वर्तमान को मुझपर अभिमान है. कभी लहू देकर मेरा सम्मान किया गया. तो कभी उन जलती चिता को देखकर मैंने आंसू बहाए. जो मेरी बेटी थी. जो मेरा बेटा था. मेरी धरती पर उन बेटों ने जन्म लिया है. उन बेटियों ने जन्म लिया है, जिनपर आज भी मुझे गर्व है. आज मैं अपनी कहानी सुना रहा हूं. मैं चित्तौड़गढ़ हूं. आज मैं अपने इतिहास. वीरतापूर्ण लड़ाइयों. राजपूत शूरता. महिलाओं के अद्वितीय साहस की कई और कहानियां सुना रहा हूं. दुनिया में वीरता, बलिदान, त्याग, साहस के न जाने कितने किरदार आपने देखे होंगे और सुने होंगे. पर मुझे नाज है कि हिंदुस्तान की सरजमीं पर इतने सारे नायकों से भरी धरा कोई नही है.

मेरा इतिहास मेरी जुबानी

चित्तौड़ की इस पावन धरा ने तो अन्याय और अत्याचार के खिलाफ ही लड़ना जाना. हमें क्या पता ये सियासत क्या होती है. हिंदू-मुसलमान के नाम पर हमें मत बांटो. हमने अपने बेटों को कभी धर्म और संप्रदाय की आंखों से नहीं देखा. जब मुगल बाबर ने हमें आंखें दिखाई थी, तो खन्वा के युद्ध में मेरे बेटे राणा सांगा का साथ देने के लिए हसन खान चिश्ती और महमूद लोदी ही तो आए थे. जब अत्याचारी अहमद शाह हमें लूटने पहुंचा, तो हमारी राजमाता कर्णावती ने रक्षा के लिए अपने मुगल भाई हुमायूं को ही तो राखी भेजी थी. जब मेरे प्रतापी बेटे महाराणा प्रताप के खिलाफ सभी सगे संबंधी मुगल अकबर के साथ हो गए, तो प्रताप का सेनापति बनकर पठान योद्धा हाकम खान सूर ने ही युद्ध में बलिदान दिया. मुझे किसी करणी सेना के नाम पर किसी जाति में मत बांधो. जब खुद के एक मेरे नालायक बेटे बनबीर ने मेरे ऊपर अत्याचार किए, तो मेरे वारिस उदय सिंह को बचाने के लिए गुर्जर जाति की पन्नाधाय ने अपने बेटे चंदन का बलिदान कर मेरे वारिस को बचाया था. जब महराणा प्रताप की मदद किसी ने नहीं की, तो एक वैश्य ने सबकुछ बेचकर मेरी 12,000 सेनाओं का खर्च उठाया. जब राजपूत राजा हमारे लिए लड़ रहे प्रताप के खिलाफ अकबर से जा मिले, तो प्रताप की सेना में लड़ने के लिए घूमंतु आदिवासी गड़रिया लुहार ही साथ आए थे. जब अकबर ने हमला किया तो किसी रानी ने नहीं बल्कि फूलकंवर के नेतृत्व में मेरे गोद में चित्तौड़ की सभी महिलाओं ने आखिरी जौहर किया था.

पांचवी सदी में मौर्यवंश के शासक चित्तरांगन मौरी ने जब 7 मील यानी 13 किमी की लंबाई, 180 मी. ऊंचाई और 692 एकड़ में फैले इस पहाड़ी पर मुझे बसाया था. तब किसी को कहां पता था कि दुनिया का सबसे बुजुर्ग गढ़ मैं, यानी चित्तौड़गढ़, हिंदुस्तान की माटी का तिलक बन जाउंगा. मोरी वंश के अंतिम शासक मान सिंह मोरी के बाद मेरे पास 728 ईसवीं में गोहिल वंश के शासक आए. गोहिलों के शासन के बाद रावल वंश का शामन चला. कहते हैं गोहिलों ने दहेज में राजकुमारी को ये किला भेंट किया. रानी, राजकुमारी से रावल वंश के वंशज बप्पा रावल की शादी हुई थी. सातवीं से 13वीं सदी तक मेरे वैभव का काल था. जब हमारी सुचिता, वैभव और पराक्रम की कहानियां दूर-दूर तक कही जाने लगी. लेकिन चौदहवीं सदी से लेकर 16 वीं सदी तक हमने सबसे बुरा दौर देखा. जाने किसकी नजर हमारे चित्तौड़गढ़ पर लग गई और रावल वंश के शासक रतन सिंह के शासन के दौरान 1303 में अलाउद्दीन खिलजी ने मेरे उपर हमला कर दिया. हिंदुस्तान के सबसे सुरक्षित माना जाने वाला अभेद्य दुर्ग सबसे कमजोर भी हो सकता है ये खिलजी की युद्धनीति ने पहली बार सामने ला दिया. फिर यहीं से हम हमेशा के लिए कमजोर बनते चले गए. सात दरवाजों से घिरे मेरे अंदर सात विशाल दुर्ग दरवाजे हैं, जिसे कोई पार नही कर सकता. लेकिन 1303 में खिलजी ने जाड़े में चारो तरफ से मुझे घेरकर मैदान में डेरा डाल दिया. वो मेरे अंदर नहीं आ सकता था. लेकिन दुर्ग के अंदर हमारे राशन-पानी को बंद कर दिया. सात महीने में हम बेबस होकर युद्ध के लिए मैदान में आए और हमारे रावल रतन सिंह और उनके दो बहादुर सेनापति गोरा-बादल शहीद हुए.

हमारी रुपवती रानी पद्मिनी को 16000 रानियों के साथ जौहर करना पड़ा. ये पहली बार था, जब हमारी वीरता और साहस-बलिदान की अमर कहानी दुनिया ने देखी. कहते हैं अलाउद्दीन लंपट स्वभाव का था और पद्मिनी को पाने के लिए युद्ध किया था. लेकिन हिंदुस्तान की सबसे ताकतवर सेना के होते हुए भी वो हमारी महरानी को नही पा सका. रावलों के शासन का यहीं अंत हुआ. 13 साल तक अलाउद्दीन खिलजी और उसके बेटे खेजर ने मेरे ऊपर राज किया. इस दौरान पूरे महल को तोड़ दिया गया और 1000 हजार से भी ज्यादा मंदिर भी तोड़ दिए. ये हमारे ऊपर हुए अत्याचार की इंतहा थी. लेकिन हमने उम्मीद नहीं छोड़ी थी. उसके बाद गोहिल वंश के ही भाई राणा वंश के सिसोदियाओं ने हमारे ऊपर राज किया. 1325 में राणा हमीर ने इसे अपना किला बनाया और राणा वंश यानी सिसोदिया वंश का शासन चलना शुरु हुआ. और आखिरी तक मेरे ऊपर सिसोदिया वंश का ही शासन रहा. मेरे उपर सबसे ज्यादा सिसोदिया वंश ने ही राज्य किया. और इस वंश में कई प्रतापी राजा हुए. राजा रतन सिंह से लेकर महराणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ पर शासन किया. महाराणा सांगा. महाराणा कुंभा भी चित्तौड़गढ़ के महान राजाओं में से एक हुए. इन राजाओं ने चित्तौड़गढ़ को एक अलग पहचान दिलवाई. मैं यानी चितौड़गढ़ किला अभेद्य था. पहाड़ी के किनारे-किनारे खड़े चट्टानों की पंक्ति थी. साथ ही साथ दुर्ग में अंदर जाने के लिए लगातार सात दरवाजे बनाए गये थे. लिहाजा, दुश्मनों के लिए किले के अंदर जाना नामुमकिन था. लेकिन, विशाल मैदान के बीच में पहाड़ी पर ये किला बना था. जिसकी वजह से दुश्मन विशाल मैदान में डेरा डाल देते थे. और किले के अंदर खाने की सप्लाई रोक देते थे. नतीजा किले के दरवाजों को खोलने के लिए राजाओं को विवश होना पड़ता था. और शत्रुओं की विशाल सेना होने की वजह से उन्हें हार का मुंह देखना पड़ता था.

रानी कर्णावती

रामी पद्मावती की कहानी तो आपने सुनी लेकिन राणा सांगा की पत्नी कर्णावती का भी बलिदान भी हमारे गर्भ में छिपा है. जब गुजरात के शासक अहमद शाह ने 1535 ईवी में चित्तौड़ पर हमला किया, तब बाबर के साथ खानवा के युद्ध में घायल राणा सांगा की मौत हो चुकी थी. राणा सांगा के पुत्र विक्रमादित्य के व्यवहार से परेशान किसी राजा ने हमारी मदद नहीं की. तो कर्णावती ने हूमायूं को राखी भेजते हुए लूटेरे अहमद शाह के खिलाफ मदद मांगी. हूमायूं को कर्णावती का संदेशा देर से मिला और मदद करने वो नहीं आ पाया. दो साल की लड़ाई के बाद अहमद शाह की जीत हुई तो 1537 ईवी में हजारों रानियों के साथ एक बार फिर कर्णावती ने मेरे अंदर दुर्ग में जौहर किया.

रानी मीरा

राणा सांगा के बेटे भोजराज के साथ मेड़ता की राजकुमारी की शादी हुई. लेकिन मीरा का मन कभी रानीवासा में नही लगा. वो तो गोपाल नंदलाल यानी कृष्ण के मंदिर में ही बैठी रहती है. राणा कंभा ने बाद में मीरा का मंदिर ही बना दिया जो आज भी चित्तौड़गढ़ में मौजूद है.

पन्ना धाय

राणा विक्रम सिंह की हत्या कर उनके चाचा का लड़का बनवीर चित्तौड़ की गद्दी पर बैठना चाहता था. तब चित्तौड़ के वारिस उदय सिंह पालना में थे. रानी कर्णावती की दाई पन्नाधाय उनकी देखभाल करती थी. जब पन्नाधाय को पता चला कि बनवीर तलवार लेकर उदय सिंह को मारने आ रहा है, तो पन्नाधाय ने चित्तौड़ के वारिस उदय सिंह को कुंभलगढ़ रवाना कर अपने बेटे चंदन को उदय सिंह के सामने सुला दिया और बनवीर ने मां पन्नाधाय के सामने ही उनके पुत्र चंदन को अपनी तलवार से दो टुकड़े कर दिए.

महाराणा प्रताप

जब अकबर ने एकबार फिर 1567 ईवीं में मेरे ऊपर हमला किया, तो उड़ई सिंह मेरे ऊपर राज करते थे. अकबर ने पूरी तरह से किले को बर्बाद कर दिया. एक बार फिर फूलकंवर के नेतृत्व में मेरे अंदर जौहर हुआ. तब हमारे राजा उदय सिंह ने 1568 में अकबर के संधि के अनुसार मुझे छोड़कर उदयपुर को अपनी राजधानी बना लिया. तब तय हुआ कि चित्तौड़ यानी मैं हमेशा के लिए वीरान रहूंगा और यहां कोई निर्माण नहीं होगा. दरअसल दिल्ली के सुल्तानों और मुगलों को हमेशा डर सताता था कि अगर चित्तौड़ आजाद और आबाद रहा, तो कभी दक्षिण नही जीत पाएंगे. मुगलों के साथ बारुद भारत में युद्ध में प्रयोग होने लगा तब तो हम बिल्कुल असुरक्षित हो गए थे. मगर मेरी गोद वीर पुत्रों से खाली नहीं थी. 16 साल तक मेरी गोद में खेले महराणा प्रताप को सरदारों ने चित्तौड़ का शासक घोषित कर दिया. मैनें आखिरी हमला दिल्ली की गद्दी पर बैठे अकबर का देखा और फिर हमेशा-हमेशा के लिए इतिहास बन गया. उदय सिंह की हार हुई और मुगल की संधि के अनुसार इस किले को सिसोदिया वंश को छोड़ना पड़ा. उदय सिंह ने अपनी राजधानी उदयपुर बना ली. मगर उनके जेठ पुत्र महाराणा प्रताप इसे भुला नहीं पाए. वो इसी किले की तलहटी से अकबर से दो-दो युद्ध लड़े. और आखिरी बार हल्दीघाटी की लड़ाई हुई.

ये युद्ध हिंदुस्तान के सबसे मजबूत शासक और मुट्ठी भर लड़ाकों के साहस की लड़ाई थी. जिसे दुनिया प्रताप की वीरता के लिए याद रखती है. प्रताप और उनके हथियार बनाने वाले गड़रिया लुहारों ने ये प्रतीज्ञा ली थी कि जबतक मुझे नहीं पा लेगें वो किले में प्रवेश नहीं करेंगे. भारत आजाद हुआ तो खुद देश के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने गड़रिया लुहारों को लेकर 1955 में मेरे अंदर यानी किले में प्रवेश किया. 1905 में अंग्रेजों के समय से अबतक हम दिल्ली की सरकार के अधीन रहे. मगर तब से हमारी सार संभाल ही हो रही है.

न जाने कितने कवि, लेखक और इतिहासकारों ने विभिन्न कालखंडो में मेरे बारे में और मुझ पर राज करनेवालों के बारे में क्या-क्या लिखा. मगर 2017 में इसे फिर से लिखा जा रहा है. इस बार कोई हमलावर चित्तौड़ नहीं आया है और न ही मेरे बहादुर चित्तौड़ के सैनिक इस लड़ाई को लड़ रहे हैं. मुझे इस लड़ाई से क्या हासिल होगा मुझे पता नहीं है. मैंने दुनिया के खुंखार से खुंखार आक्रांताओं और हमलावरों की खून की होली देखी है. मैं सब जानता हूं. मुझे मेरी हिफाजत करनी आती है. मै बूढ़ा नहीं हुआ हूं. मैं चित्तौड़ हूं.

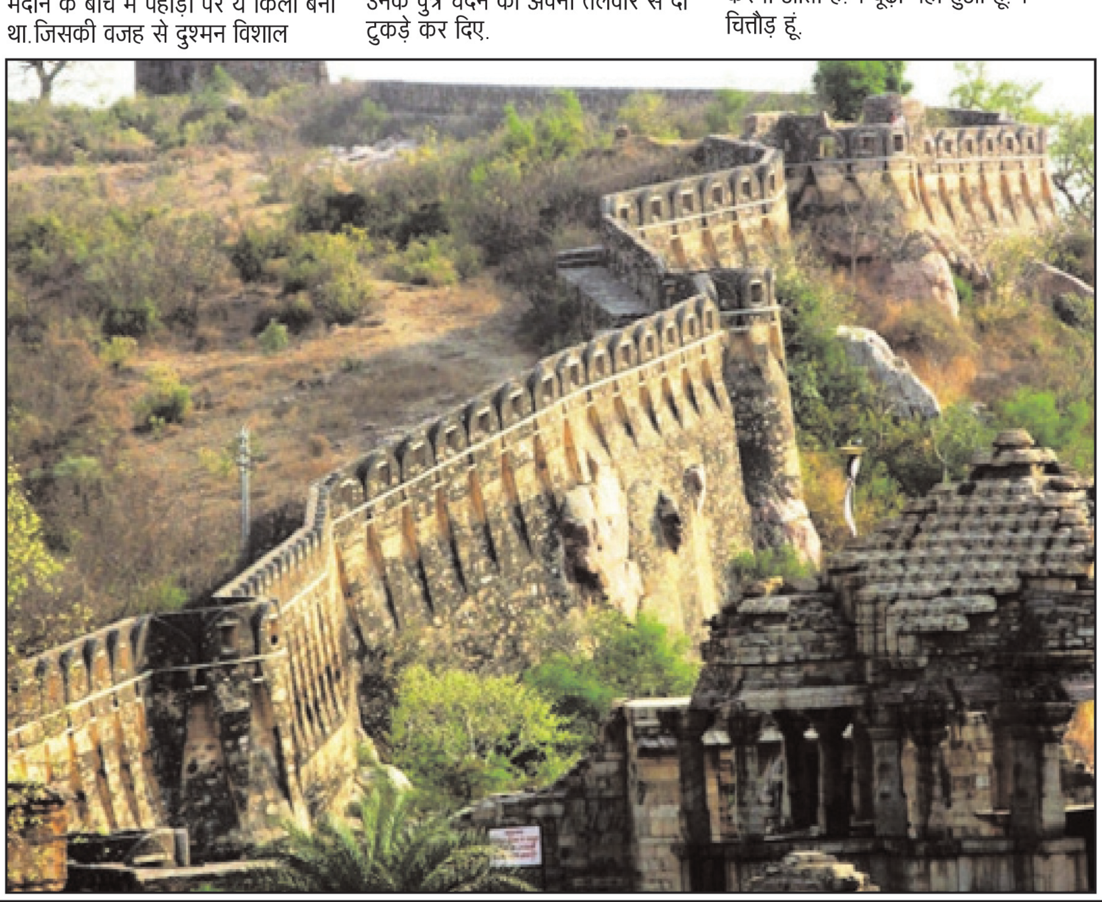

निर्दयी राजा

माधो जंगल में लकड़ियां बीन रहा था। अचानक अपने गांव से आग की लपटें उठती देखकर वह घबरा उठा। पड़ोसी राजा को अपने किले में काम कराने के लिए गुलामों की आवश्यकता थी। उस समय उसके सैनिक ही गांव वालों को गुलाम बनाकर ले जा रहे थे। माधो जान बचाने के लिए घने जंगल में भाग गया। दिन बीतने पर माधो गांव लौटा, लेकिन वहां कोई नहीं था। उसके माता-पिता को भी निर्दयी सैनिक पकड़कर ले गए थे। माधो क्रोध से उबल पड़ा। वह राजा के किले की ओर चल दिया। वह किसी तरह गांव वालों को छुड़ाना चाहता था। किसी तरह छिपता हुआ माधो किले के अंदर पहुंचगया। गांव वालों के साथ उसके माता-पिता तपती धूप में राजा के खेतों में काम कर रहे थे। पानी मांगने पर सिपाही उन पर कोड़े बरसाते थे। तभी पास खड़ी एक गरीब बुढ़िया ने माधो से पूछा, तुम्हें क्या कष्ट है बेटा? मैं राजा की मालिन हूं।

माधो ने उसे सारी बात बताई। मालिन भी राजा की क्रूरता से बहुत दुखी थी। वह माधो को अपने घर ले गई। उसे माला गूथना सिखा दिया। फिर एक दिन उसे राजा से भी मिलवाया। राजा माधो की बनाई माला देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह माधो को महल दिखाने लगा। माधो ने पूछा, महाराज, कोई शत्रु आपके महल में घुस आए तो?

राजा उसे दीवार में लगी एक मुठिया दिखाकर बोला, अगर ऐसा हुआ, तो हम यह मुठिया घुमा देंगे। किले के सारे पानी में बेहोशी की दवा घुल जाएगी। पानी पीने वाले बेहोश हो जाएंगे। थके-मांदे शत्रु के सैनिक आते ही पानी तो पिएंगे ही। फिर राजा ने माधो को एक बड़ी सी चाबी दिखाई और बोला, यह चाबी देखो, इससे हम किले का दरवाजा बंद कर देंगे। होश में आने पर फिर कोई बाहर नहीं निकल सकता।

मालिन ने माधो को नागगंध की एक माला बनाकर दी। उसे पहनते ही राजा और रानी गहरी नींद में सो गए। माधो ने जल्दी ही वह मुठिया घुमा दी। फिर राजा की जेब से किले की चाबी निकालकर महल से बाहर आ गया।

पानी पीते ही राजा के सैनिक बेहोश होकर गिरने लगे। गांव वाले पानी पीने दौड़े, तो माधो ने उन्हें पानी नहीं पीने दिया और फौरन किले से बाहर निकल जाने के लिए कहा। सब बाहर आ गए, तो माधो ने चाबी से फाटक को बंद कर दिया।

निर्दयी राजा अपने सिपाहियों के साथ अपने ही किले में बंद हो गया। गांव वाले उसके अत्याचार से मुक्त हो गए थे।

इस किले के परिसर में है 65 से अधिक ऐतिहासिक महल, मंदिर व जलाशय

चित्तौड़गढ़ किला जिसे चित्तोर दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है भारत के प्राचीनतम किलो में से एक है. यह किला भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में प्रसिद्व है. वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शुमार इस किलो देखने हर साल हजारो विदेशी सैलानी भारत आते है.

- चित्तौड़गढ़ किला जिसे मेवाड़ की राजधानी के नाम से भी जाना जाता हैउदाहरण के तोर पर यह किला प्राचीन समय में 834 सालो तक मेवाड़ की राजधानी रह चूका था. इसकी स्थापना 734 इक में मेवाड़ के सिसोदिया वंश के शासक बाप्पा रावल ने की थी.
- चित्तौड़गढ़ किला भारत का सबसे बड़ा किला माना जाता है. इसकी लम्बाई 3 किलोमीटर, त्रिज्या 13 किलोमीटर और यह किला लगभग 700 एकड़ जमीन पर फैला हुआ है.
- प्राचीन इतिहास के अनुसार ऐसा माना जाता है कि चितौड़गढ़ किले को सातवीं सदी में मौर्यों सासको द्वारा बनवाया गया था और इस किले का नाम मौर्य शासक चित्रांगदा मोरी के नाम पर रखा गया था.
- आपको जानकर हैरानी होगी इस किले के परिसर में लगभग 65 ऐतिहासिक निर्मित संरचनाएं जैसे मंदिर, महल, जलाशय, स्मारक इत्यादि बनाएं गए थे.
- चित्तौड़गढ़ किले में कुल साथ द्वार बनाएं गए थे जो प्राचीन समय में रात्रि के समय बंद कर दिए जाते थे. इन द्वारा पर लगे विशाल किवाड़ (दरवाजे) आज भी इस किले की मजबूती की गवाई देते है.
- प्राचीन समय में इन दरवाजो का नाम मुख्यता प्रथम पड़नपोल, दूसरा भैरव पोल, तीसरा हनुमान पोल, चतुर्थ गणेश पोल, पंचम जोरला पोल, छटा लक्ष्मण पोल व सातवे दरवाजे को राम पोल के नाम से जाना जाता था.
- इन दरवाजो के संदर्भ में कहाँ जाता है की प्राचीन समय में प्रत्येक दरवाजे पर द्वारपाल व पहरेदार 24 घंटे दरवाजो की निगरानी करते थे c प्रत्येक दरवाजे पर बड़े बड़े घंटे टाँगे गए थे जिन्हे बजा कर दरवाजो को खोला और बंद किया जाता था.
- इस किले में कई मंदिर स्थापित हैं जैसे कलिका मंदिर, जैन मंदिर, गणेश मंदिर, सम्मिदेश्वरा मंदिर, नीलकंठ महादेव मंदिर और कुंभश्याम मंदिर आदि
- इस किले के परिसर में बनाया गया पद्मिनी महल एक छोटे सरोवर के निकट स्थित बहुत ही खूबसूरत महल है. इस महल के अंदर सीसे कि नकाशी कि गई है जो दिखने में बेहद खूबसूरत लगती है.
- आपको जानकर हैरानी होगी चित्तौड़गढ़ किले में आज भी 22 जलनिकाय मौजूद है. इन जल निकायों में पानी का श्रोत्र प्राकृतिक भूमिगत जल और वर्षा से प्राप्त जल के द्वारा होता है.
- चितौड़गढ़ किले में बनाया गया भीमला जल भंडार भारत के प्राचीन इतिहास को समेटे हुए है. ऐसा माना जाता है पांडवो में भीम ने जमींन पर अपने हाथ के वार से पानी निकाल दिया था और भूमि के जिस हिस्से से पानी निकला उसे भीमला के नाम से जाना जाता है.
- चितौड़गढ़ किले के खम्बो पर की गई खूबसूरत चित्रकारी प्राचीन कलाकारी का उत्कृट नमूना है. ऐसा कहा जाता है इस चित्रकारी को बनाने में 10 वर्षो का समय लगा था.
- आपको जानकर हैरानी होगी इस किले में आज भी लोग निवास करते है. उदाहरण के तोर पर चितौड़गढ़ किले में लगभग 20000 लोग रहते है.
- यह किला राजस्थान के शासक राजपूतों, उनके साहस, बड़प्पन, शौर्य और त्याग का प्रतीक है
- राजस्थान में मनाया जाने वाला जोहर मेला इसी किले में मनाया जाता है.
- चित्तौड़गढ़ का किला अपनी स्थापत्य कला, निर्माण शैली व पर्यटक स्थलों जैसे महल, जलाशय, स्तंभ, इत्यादि के लिए विश्व भर में प्रसिद्व है. हर साल देश-विदेश सैलानी इस किले को देखने राजस्थान आते है.
- राजस्थान के पर्यटन विभाग द्वारा चितौड़गढ़ किले में बेहद खूबसूरत लाइटिंग की गई है जो रात के समय इस किले की खूबसूरती में चार चाँद लगा देती है.
- चितौड़गढ़ किले को यूनेस्को द्वारा साल 2013 में वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल किया गया था.